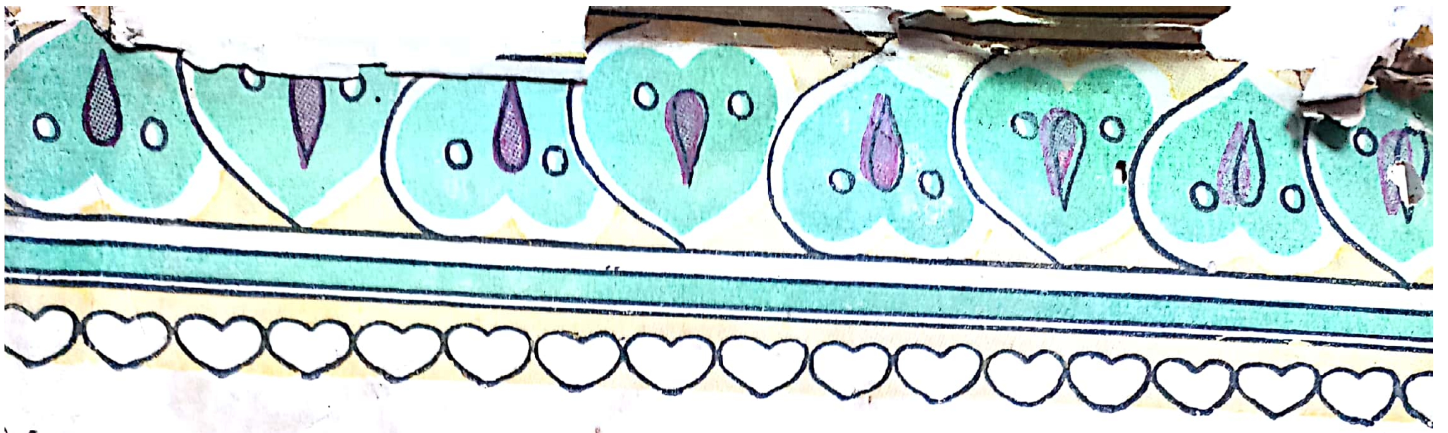


मधुश्रावणी



श्री शैलेन्द्र मोहन झा

मधुश्रावणी

मधुश्रावणी

(मौलिक उपन्यास)

लेखक

श्री शैलेन्द्रमोहन झा

मिथिला



प्रकाशन

लहेरियासराय

* प्रकाशक : मिथिला प्रकाशन, लहेरियासराय ।

* संस्करण : दोसर, २२०० प्रति, जनवरी १९६७ ।

* मूल्य : ३०० पैसा ।

* मुद्रक : श्रीरमानाथ मिश्र 'मिहिर', प्रभात प्रेस, लहेरियासराय ।

प्रसंग

अकस्मात निन्न टूटि गेल। खिड़कीक ओहि पार कनैलक वन दिश सँ चूड़ीक खनखन एवं नारी कंठक कलकूजन ध्यान आकृष्ट कएलक। आसन्न प्रभातक धूमिल आलोकच्छटा मे बुझि पड़ल जे टोल-पड़ोस नव-बिवाहिता तरुणी दल एहि कनैल-कुंज पर आक्रमण कऽ देने होथि।

श्रीमती जी सँ जिज्ञासा कएल। ओ संक्षेप मे उत्तर देलन्हि—'एत बहु नहि बुझैत छिऐक' आ' फेरि सूति रहलीह। निन्न हुनका बड़ प्रिय छन्हि ने!

'बुझितिऐक त फेर हुनका पुछबाक कोन प्रयोजन छल ?" दुख भेल जे हमर उत्सुकताक एहि तरहें उपहास कैलन्हि। ता' ओहो उठबाक उपक्रम कएलन्हि। अलसाएल मुख पर लज्जाक अरुणिमा उमड़ि अएलन्हि। बजलीह—'एतेक जल्दी बिसरि गेलऐक ? आइ मधुश्रावणी छैक से नहि मन पड़ल ? गौरी पूजा लेल टटका फूल तोड़ैत जाइत छैक ?'

मधुश्रावणी' !......किछु काल धरि सोचैत रहलहुँ। एहि शब्दे मे जेना महान आकर्षण हो; अपन ,मधुश्रावणी' मन पड़ि गेल ! की त इहो ओहि दिन एहिना उल्लास सँ फूल लोढ़य गेल हेतीह ? ओना त आठ बजे सँ पहिने निन्ने नहि टुटैत छन्हि। पुछलिऐन्ह त उदास भऽ गेलीह— 'नहि हम किएक जइतहुँ ? हमरा की हृदय अछि ? हमरा की उल्लास अछि ? हमरा की एहि विवाह सँ प्रसन्नता भेल ?...'' तावत हम मुह हाथ राखि पर देखिऐन्ह।

नहि जानि जे एहि तरहेँ धारावाहिक रूपमे ओ कखन धरि बजैत रहितथि। हुनकर डबडबाएल आँखि दिश तकैत बजलहुँ -- अहाँ त दुलारो नहि बुझैत छिऐक ! अहाँके कोना केओ किछु कहत ?"

आओर पूर्वीय क्षितिज सँ फुटैत लालिमा सदृश हुनका आँखि में प्रसन्नताक किरण फूटि पड़ल।

ओहि मधुश्रावणीक भोर मे कतेक बात मन मे आएल ! प्रियवर 'मणिपद्म' जीक एकटा निबन्ध पढ़ने रहीं। ओ 'हनीमून' शब्दक पर्याय तकैत-तकैत एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छलाह जे मधुश्रावणी सँ अधिक उपयुक्त शब्द भ' ह लेल दोसर नहि हैतैक। हमरो एहि सँ युक्तिगर दोसर शब्द नहि भेटैत अछि। वास्तवमे हनीमून' शब्दक आत्माक रक्षा जतेक एहि मधुश्रावणी मे होइत छैक ततेक एकर शाब्दिक अनुवाद मे नहि। सद्यः विवाहित दम्पतिक एहि मिलन

आयोजनक निमित्त एहि शब्द के
गढ़निहार कतेक सरस हृदय छल हैत ?
आओर ओहि प्रसंग मे हमरा नलिनी
मन पड़ि गेलि तथा अपन भावुकताक
प्रवाह मे हम तकर समस्त कथाकें
लिखि देल अछि। आइ जखन एकरा
समाप्त कऽ चुकल छी त रहि रहि कऽ
एकटा बात मन मे उठैत अछि।
आखिर एहि कथाकें पढ़ला उत्तर
नलिनी पर की बिततैक ? कतेक नीक
होइत जे हम एहि कथा के
दोहरबितहुँ नहि।

जे हो एहि कथाक प्रसंग कतेक मित्रक
स्नेह ओ अनुरोध जोड़ल अछि। मित्र-
वर प्रमोद, हमर सहयोगी हरिवंश बाबू
ओ सतीश बाबू, प्रियवर त्रिया बाबू,
स्नेही 'दीपक' जी ओ वीजेन्द्र एवं
राजमोहन ओ कृष्णमोहन, ई लोकनि
एहि मे जे रुचि देखौलन्हि तकर स्मृति
हमरा हृदय मे चिरकाल धरि रहत।
श्री राधामोहन जीक संग जाहि उल्लास
सँ काश्मीर-यात्रा कएने रही, जकर

प्रासंगिक उल्लेख एहि कथामध्य अछि बिसरबाक वस्तु नहि।

तथापि ई प्रसंग अपूर्ण रहि जैत यदि हम स्नेहमयी अंजलि दास गुप्ताक चर्चा नहि करैत छिऐन्ह। चाईबासाक प्रवास मे हुनका सँ जतेक स्नेह ओ सहानुभूति भेटल से कहियो बिसरत नहि। अन्य भाषाभाषिणी होइतहुँ 'मधुश्रावणी' मे ओ ततेक मनोयोग देलन्हि जेना मैथिलीए हुनक अपन भाषा होन्हि। सत्य पूछी त हुनकहि उत्सुकताक निवृत्तिक लेल हमरा एहि कथाकें जल्दी जल्दी समाप्त करए पड़ल।

एहिपुस्तकक प्रकाशनक हेतु हम प्रकाशकक आभारी छी।

मधुश्रावणीक मुख-चित्र हमर शिष्य श्री शशि शेखर जी बनौलन्हि अछि। एहि दिशा मे ओ उत्तरोत्तर प्रगति करथु से शुभकामना अछि।

पुस्तकक प्रकाशन मे श्रद्धेय 'सुमन' जी एवं प्रियवर कृष्णकान्त जी सँ सहयोग तथा उत्साह सतत भेटल अछि। हम हुनक परम कृतज्ञ छी।

नेहरा (दरभंगा)
दिसम्बर १९५५ —लेखक

मधुश्रावणी

१

गामक दछिनवारी कातमे दू-चारिटा छोट खढ़क घर अछि। एहिमे एकटा छन्हि पंडित सदानन्द ठाकुरक। पुबरिया आर पछबरिया—भीतक दूटा घर। पुबरिया घरक बाहर दिशसँ एकटा एकचारी खसायल अछि जाहिमे एकटा छोट चौकी राखल अछि। इयह एकचारी दलानक काज करैत अछि। पछबरिया घरक पछुआरमे लताम, सोहिजन तथा आमक एक-एक टा गाछ अछि।

एहि ठाम वा लगपासमे जे नीरवताक दर्शन होइत अछि से एतय चिरकालसँ व्याप्त नहि अछि। यावत धरि पंडित सदानन्द

ठाकुर जीबैत रहलाह ई टोल जगजगायल रहैत छल। जखन-तखन हुनका दलान पर दू चारि अतिथि-अभ्यागत अबितहि रहैत छलथिन्ह।

पंडितजी उच्चकोटिक विद्वान छलाह। हुनकर विद्वत्ताक ख्याति परोपट्टा भरिमे पसरल छल। समाजमे हुनकर अतीव आदर होइत छल।

पंडितजीक समयमे घर आङनक ई रूप नहि छल। जतय आइ दू गोट छोट-छीन घरक दर्शन भऽ रहल अछि ओतय चारू अलंग विशाल-विशाल घर छल। आगूमे फुलबाड़ी छल जाहिमे बारहो मास फूलक मेला लागल रहैत छल। शरतकालमे सिङरहारक फूल बिछबाक लेल धियापुताक समूह भिनसुरकीए रातिसँ जुटि जाइत छल। पंडितजीकेँ धियापूतासँ बड़ प्रेम छलन्हि। ओ स्वयं सेहो भकाले उठैत छलाह आओर अपनहि हाथेँ फूल बीछि सभक फुलडाली भरि दैत छलथिन्ह। सिङरहारक अतिरिक्त गेना, गुलाब, तीरा, जूही, बैजयन्ती आदि विविध प्रकारक फूलसँ फुलवाड़ी सजल रहैत छल।

फुलवाड़ीसँ एक बीघा हटि कऽ एक स्थान छल जकर नाम पंडितजी शान्ति-कुञ्ज रखने छलाह। ई स्थान चारू कातसँ अपराजिताक लतासँ परिवेष्टित छल। कात-कातमे आम, कटहर, लताम, नीम आदि गाछ छल। एकर प्रसन्न छाहरि मधुर ममता सदृश सदिखन एहि लताकुंजकेँ आच्छादित कयने रहैत छल।

किछु दूर पर एक छोट चभच्चा छल जे सर्वदा स्वच्छ जल ओ माछसँ भरल रहैत छल। पोखरिक पश्चिम-दक्षिण दिस प्रकृतिक शस्य-श्यामल रूप दर्शनीय छल।

पंडितजीक परिवारमे छल—पंडितजी ओ हुनक स्त्री आओर एकटा कन्या। दुनू गोटेक बीच एकमात्र इएहटा सन्तान छलि।

किन्तु पंडितजीक मृत्युक उपरान्त ई नीड़ उजड़ि गेल। बाढ़िक पानि जेकाँ ऐश्वर्य ओ प्रसन्नताक लहरि आब विला गेल अछि। मिथिलाक महान भूकम्प खाली पंडितजीक प्राण लऽकऽ नहि रहल बरन् एहि परिवारक रूपकें पूर्णतः बदलि देलक। पहिलुका घर-आङन धराशायी भऽ गेल। फुलबारी उजाड़ भऽ गेल। लगक चभच्चा भथि गेल। खेतो-पथार आब पूर्व हालति मे शेष नहि रहल अछि। आइ बीस बरसक बाद जँ केओ एहि स्थानमे आबय त विश्वास नहि हेतैक जे एतहि पं० सदानन्द ठाकुरक बासस्थान छल। पंडितजीक रोपल नीमक गाछटा वर्त्तमान अछि जे सभ साल ओहि महान आत्माक प्रति अपन फल-फूल अर्पित कय श्रद्धाञ्जलि दैछ।

पंडितजी अपना कन्याक नाम रखने छलाह—नलिनी। हजारा गेनाक थौंका सदृश भरल पुरल कोमल शिशुकें कोरमे लऽ कहल करथिन्ह—"सुनल ऐ! एकरा हम ततेक पढ़ैबैक जे ई एहि युगक भारती हैत—विदुषी भारती!" ई सुनि पंडिताइन बाजथि—"चुप-रहू; जिते त देखल जेतैक। अखनहिसँ बजबाक कोन काज छैक फेर एक दीर्घ निश्वासक संग बजैत छलीह—'मनुष्य जे सोचि

अबैत अछि से कहाँ होइत छैक।" आओर ठीके सैह भेल।

कालक इच्छाक आगू पंडितजीक शुभेच्छा शिथिल पड़ि गेल।

अकस्मात् एकदिन महान भूकम्प आयल आओर पंडितजीक मृत्यु भऽ गेलन्हि। ओ कनैत पत्नी तथा अबोध शिशुकें छोड़ि चिर-निद्रामे लीन भऽ गेलाह। नलिनी, भारती नहि बनि सकलीह।

निर्धन मिथिलाक नेना जाहि तरहें माँटिये मे खेलाकय चेतन भऽ जाइत अछि तहिना नलिनी बढ़य लागलि। ओकर विलक्षण प्रति-प्रतिभासँ सभ केओ चकित रहैत छल। चाञ्चल्य अ.करा नस-नसमे भरल छल। भगवान ओकरा कण्ठमे मधुर वंशीक स्वर भरि देने छलथिन्ह। शरदक प्रभातमे जखन बालिका नलिनी अपन प्रातीक स्वर बिखेरय लगैत छलि त ओकर बीणा-विनिन्दक स्वर कुहेश सदृश ओहि निस्तब्ध वातावरणमे व्याप्त भऽ जाइत छल। ओहि तरुण कण्ठक मधुर वंशीध्वनिसँ दिशा प्रतिध्वनित भऽ उठत छल। लगैतछल जेना लगक कलममे कोइली कूकि रहल हो।

नलिनीक अधरपरकहास्यक रेखा अमिट छल। अपन हास्यक तुमुल नादसँ ओ आङन घरकें मंगलमय बनौने रहैत छलि। ई मधुर मुसकान नलिनीक चिरन्तन सखी बनि गेल छल। सुख-दुख हर्ष-विषाद सभमे ओ एहि कोमल किशोरीक संग नहि छोड़ैत छल। नलिनीक मायकें केहनो तामस रहन्हु; ओ एकरासँ कतबो अप्रसन्न रहथु किन्तु एहि सुन्दरीक मधुर हास्यक आगाँ ओ कर्पूर सदृश विलीन भऽ जाइत छलन्हि। नलिनीक मुसकान केहनो दुःखा-भिभूत हृदय पर आनन्दक अबीर छीटि दैत छल। एहि चपल

बालिकाक ठोर सततिकाल मुस्कानक प्रभासँ दीप्ति रहैत छल।

नलिनीक पिताक परोक्ष भेला उत्तर अधिक काल नलिनीक माम एतय आयल करैत छलथिन्ह। लगेमे हुनको गाम छलन्हि तैं जखन-तखन आबि अहू ठामक खेती-बारीक प्रबन्ध क जाइत छलथिन्ह। परशुरामझा छलाह विनोदी लोक। लग पासक धियापूता हुनका देखितहि प्रसन्न भऽ उठैत छल। मामा अबैत नहि छलथिन्ह ता नलिनी हँसैत-हँसैत बेहाल—हुनका देखितहि ओ नाचि-नाचि गाबय लगैत छलि—'मामा धामा ओल कतड़ा ...।

मामा नलिनीकें कोर कऽ उठा लैत छलथिन्ह। फेर ओकरासँ मामीक पेटक तीनू बगराक हाल पूछैत छलथिन्ह। एमहर नलिनी त हँसैत-हँसैत बेदम भऽजाइत छलि।

कखनहु कऽ परशुरामझा दिक्क भऽ कऽ कहथिन्ह "आब मारि खएबें नीलम! संच-मंच रह नहि त पिटाई लगतौ।" अपन 'नीलम' नाम सुनि नलिनी कें फेर हँसी नहि रोकल जाइक। ओकर माम ओकरा एही नाम सँ शोर कयल करथिन्ह। फेर कने थम्हि कऽ बजैत छलि 'अच्छा मारू त मामा! अपने हाथ काँपय लागत।' ई सुनि परशुरामझा भभा कऽ हँसय लागथि। स्नेहसँ कोरमे बैसा कए कहथिन्ह —"बुझलैंह नीलम! तों बड़ बदमाश भेल जाइत छैंह। एना करबैं त लोक अगिलही * कहतौक।" ई नवीन शब्द सुनि सरल बालिकाक उत्कण्ठा बढ़ि जाइत छलैक। पूछैत छलि 'अगिलही ककरा कहैत छैक मामा?" ताहि पर मामा

* कुमार गङ्गानन्द सिंहक एही नामक उपन्यासक प्रधान पात्र।

बुझबथिन्ह—"तोरे सनक धिया-पूताकें अगिलही कहैत छैक।"
एकदिन नलिनी कें अगिलहीक कथा कहि सुनौलथिन्ह। नलिनी एक चित्त सँ ओहि कथा के सुनैत रहलि। आद्योपान्त सुनलापर बाजलि—हम थोड़े अहाँक पनहीकें इनारमे फेकल अछि? परशुरामझा हँसैत कहलथिन्ह—"आब सैहटा बाँकी रहलौक अछि।" नलिनी चट दऽ बाजलि—"वेश त आइ हम अहाँक पनही अवश्य इनारमे डुबा देब—जरूर डुबा देब आओर खिलखिलाइत आङनक टाटक अढ़मे चलि गेल। परन्तु परशुरामझा आशंकासँ पनहीकें खूब ऊपर चारमे खोसि लेलन्हि। कने कालक बाद नलिनीकें शोर कैलथिन्ह—"आबह हे अगिलही। एकटा गीत त नहि सुनलह अछि।" गीतक नाम सुनितहि नलिनी सदलबल आबि उपस्थित भेलि। सभ चारू भरसँ कहय लागल--"मामा गीत सुनबिऔक।" मामा एक बेर नलिनी दिश ताकि गाबय लगलाह।

दुर दुर छीया छीया, छीया।
एको लूरिने दाइ कैँ भेलन्हि देखि जरै अछि, जीया।
पढ़ै गुनै के नाम ने लेती सँठती पौती, बीया।।
सासुर जाकऽ गारि सुनौती साचि कँपै अछि हीया।
साचि-सोचि हम मरलि जाइछी किछु नहि बूझथि धीआ।।
कनिआ पुतरा बैसि खेलैती सङमे सब सखिया।
माथ कपार कते हम फोड़ू नोर बहय आँखिया।।
जे सब नाच नचौती नचबथु भेल छथिन्हि मनसीया।
मौन होइछ बरु पीसि पीबि ली अखन ह धथुरक बीया।।

गीत समाप्त होइतहि सभ नलिनी दिस देखि जोरसँ हँसय लागल। नलिनीक मोन त घोर भऽ गेलै। मुँह बन। कय बाजलि—"हायरे मामा धामा ! होइ छन्हि जे हमरा सनक केओ लोके ने अछि। कने अपनामे मुँह त देखि लिअऽ।" आओर ओतयसँ भागि गेलि।

किन्तु से सभ त बहुत दिनक गप्प भेल। ओकरा पश्चात् कतेक वर्षक अन्तराल छल जे अस्पष्ट नहि त धूमिल अवश्य भऽ गेल छल। जेना-जेना वयश भेल नलिनी अत्यन्त लगनसँ मायक काज-धाजमे संग पुरय लागलि। घर-आङन बाहरब, साग-पात तोड़ब, भानस-भात करब आदि सभ काजमे ओ अपन बालोचित आवेश सँ सहयोग प्रदान करैत छलि।

ओहि दिन माइक लाख मना कयलो पर नलिनी तरकारी बनाबय लागलि। अकस्मात आङुर कटा गेलैक। अपना भरि तऽ नुकेबाक खूब प्रयास कएलक परन्तु ओ माइक नजरिसँ नहि बचि सकल। माय आङन बहारैत छलीह। फज्झति करैत कहलथिन्ह—"आब बुझू सुख ! तखनसँ मना करैत छलिऐन्ह त हरदम लुरू.खुरू करितहि रहतीह, संच-मंच कखनहु बैसिए नहि होइत छन्हि।" परन्तु नलिनीक मुख पर तइयो मलिनताक छाया दृष्टिगोचर नहि भेल। बिहँसैत बाजलि—"देख तऽ ! कहाँ किछु भेल अछि। तोरा तऽ अहिना रहैत छौक।" परन्तु देखेबाक लेल जे ओ हाथ ऊपर कऽ उठौलक से आङुरमे लपटाएल लत्ता फुजि कऽ खसि पड़ल आओर रुकल शोणितक

धार फेर बेगसँ उछलि पड़ल। एहि तरहे शोणित बहैत देखि माइक होश उड़ि गेलन्हि। जोर जोरसँ बाजय लगलीह्--"बापरे! देखू त एहि छौंड़ीक डल। कोना क आङुर काटि लेलक अछि आओर ताहि पर मुँह लागल बजैत अछि जे कहाँ किछु भेल अछि। ठाढ़ रह तों! एही बाढ़निसँ पीठ फोड़ि दैत छिऔक।" आओर ओ नलिनीकें मारय छुटलीह। ई देखितहि नलिनी हांसू-तरकारी पटकि दलान दिश कऽ पड़ाएलि। आङनक मुँह लग आबि जक्क थक्क ठाढ़ि। देखय त आगूमे कमलकें। कमल बाजब--"चल नलिन! जामुन खाय चलवें?"

परन्तु तोड़ि के देत?"

"हम छी तखन तोड़ि के देत?" आओर दुनू हँसैत-कुदैत बिदा भऽ गेल। माय आङनसँ बजितहि रहली—अखन कतहु जएबैह त फेर घूमि क आबय नहि देबौक।"

परन्तु के सुनैत छल?

२

ठाकुरपरिवारक घरसँ सटले हटि क एक छोट कलम अछि। घरक लगमे रहने एतय सदिकाल लोकक अबरजात बनले रहैत छैक। ई कलम थिकन्हि उग्रनाथ ठाकुरक। उग्रनाथ ठाकुरक पिता चन्द्रनाथ ठाकुरकें गाछ बृक्ष लगेबाक बड़े शौख छलन्हि। अपनाजीवनमे बहुत राश गाछ लगौलन्हि। शास्त्रकार लोकनिक कथनानुसार ओ एक बृक्ष रोपने दस पुत्र प्राप्तिक धर्म होइत छैक। एहि हिसाबें चन्द्रनाथ ठाकुर सहस्रो पुत्रक पिता छलाह।

एहि कलममे खाली आमहि टाक गाछ नहि अछि। चारू कात जामुन, सीसो, कटहर, कदम्ब आदि केर गोर बीसेक गाछ छैक। कलमक एक कोनमे हरौतक एकटा बीट अछि। कलमसँ

सटले एक गोट विशाल बड़क गाछ अछि। एकर दूर-दूर तक पसरल छाहरि परम्परा सँ लोकके शीतलता प्रदान करैत अछि। एकर जड़िमे गामक धियापूताक पुश्तैनी क्रीड़ाक्षेत्र अछि। गरमीक दुपहरमे लग पासक धियापूता सभ एतय जमा होइत छल आओर सन्ध्या पर्यन्त बालोचित खेल खेलाइत जाइत छल। एहिमे ललिता, श्यामा, नलिनी, कमल, मनोज, विनोद, आदि प्रमुख छल। नलिनी ओ' कमलक एक संग रहैत छल। धूराक घर बनेत छल। धूरेसँ आङनक टाट-फरक बनाओल जाइत छल। खाली एकठाम किछु स्थान रिक्त छोड़ि देल जाइत छलै। ई रहैत छल आङनक बाट। नलिनी घरक मलिकाइन बनैत छलि आओर कमल घरक मालिक। नलिनी घरमे माँटिक भात रन्हैत छलि आ माँटिएके पानिमे घोरि कऽ दालि। लग पाससँ थोड़ेक घास तोड़ि कऽ तरकारी बनाओल जाइत छल। कहियो तिलकोरक पातके माटिक पिठारमे भिजाकए तरुआ बनेत छल। तावतमे एक गृहस्थ जेकाँ हहायल-फुहायल कमल अबेत छल। नलिनी कमलके देखितहि एकटा खपटामे पानि बढ़ा दैत छलि—"हे लिअ। जल्दी हाथ पेर धो लिअ। भानस सभ पानि-पानि भऽ गेल। एतेक देरी किएक लागल?"

ई सुनि कमल बाजय-"देरी किएक भेल? हर-जनमे गेने त देरी भइये जाइत छेक। आइ खेतके समारि कऽ चौकी देबाक छलै। तेँ एते देरी भऽ गेल—काल्हि बीआ द देबेक जे बाउग कऽ देतै।"

कमलक बात सुनि चतुर गृहिणी सदृश नलिनी चट दय उत्तर दैत छलि—सभटा पहिनहि ओरिआकऽ राखि देलहुँ। जल्दी हाथ पैर धो लिअ। कहू त अखन धरि पनपिआइयो नहि कएलहुँ अछि।

"पहिने एकटा दातमनि त दिअ।"

"अहूँ वेश छी। अखन धरि सेहो नहि कएल अछि? देखिऔ तऽ जे बेर कहाँसँ कहाँ गेले? एते काल धरि कतहु लोक बिनु मुँह धोने रहय। अहाँकेँ भूखो त ने लगैत अछि?"

"बड़ भूख लागल छल त खा किएक नहि लेलहुँ? केओ मना थोड़े कैने छल?" —कमल मुस्कुराइत बजैत छल।

"बाह रे मना कैने छलहुँ! कोना खा लितहुँ? घरक पुरुष खैबे नहि करतैक आ' ई लोक खा लेतैक। इहो कतौ देख-लिऐक अछि?"

ई सुनि आधुनिक सुधारवादी जेकाँ कमल बाजय—'जँ खाइए लितहुँ त की होइतैक? कोनो हमर हिस्सा त नहि खइतहुँ। आओर हमरा जँ साँझ धरि खेतमे रहय पड़ त त की करितहुँ? तखन त एकसंझे भऽ जाइत।"

एहि पर नलिनी किछु लजा जाइत छलि—"से एकसंझा होअ वा दुसंझा, तैं की ई लोक पहिने खा लेतैक!"

"वेश नहि खएतेक त सहैत रहू हम अखन नहि नहायब।"

किछुकाल धरि कमल वेसल रहैत छल। अन्तमे नलिनीकेँ नहि रहल जाइक—"ओह! अहुना केओ करत अछि। जाउ

जल्दीसँ एकटा डूब देने आउ। हम तावत ठाँव-बाट करैत छी।

नलिनीक एहि अनुरोधकेँ कमल टारय नहि आओर कल्पित स्नानक लेल बिदा भऽ जाइत छल।

कमल स्नानक बाद भोजन करय बैसैत छल आओर नलिनी प्रेम-पूर्वक ओकरा आगू भोजनक लेल बनल वस्तु सभ परसि दैत छलि। कमल ओहि वस्तुकेँ खयबाक अभिनय करत छल आ' नलिनी आवेश पूर्वक परसन लेबाक आग्रह।

एहि तरहें दुनू गोटा अपन काल्पनिक गृहस्थी बसायल करत छल। परन्तु सभ दिन ई गृहस्थी एतेक शान्तिपूर्ण ओ सुखद नहि रहैत छल। कहियो कऽ कमलकेँ देखितहि नलिनी रूसि-फूलि कऽ बैसि जाइत छलि।

नलिनीकेँ एना गुम-सुम देखि कमल कहैत छल—"आइ भानस-भात नहि हेतैक की ?"

परन्तु नलिनी किछु बजैत नहि छलि। जखन कमल पुनः प्रश्न करैत छल तखन नलिनी मुखर भऽ जाइत छलि—"भानस की हेतैक हमर' मूड़ी लऽ कऽ। ने नोन, ने तेल, ने जारनि, ने काठी। अखन घूमि कऽ अएलाह अछि खाइक लेल। हम जेना हिनकर खरिदल बहिकिरनी रहिअन्हि जे सभटा कऽ धऽ कऽ आगूमे राखि देबन्हि। एकरहि कहैत छैक—कैल पर श्री जगरनाथ। ई हमरा बूतेँ नहि पार लागत।"

से सभ सुनि कमलकेँ रंजे लेसि दइक। बाजय—"ईह ! लोकक बहु बनथिन्ह त भानस नहि करथिन्ह।"

परन्तु नलिनी टससँ मस होइवाली नहि—'वेश तखन खाइये लिअ। दुनु हाथें परसि कऽ देत छी।"

'त की अहाँ; भानस नहि करब ?"

'एक बेर त कहलहुँ जे नहि हैत हमरा बुतेँ।"

कमलक धैर्यक सीमा टूटि जाइत छल। रंजसँ बाजय — "लातक देवता बात सँ नहि बुझैत छथिन्ह। ई भानस नहि करतीह। हिनके दिन छन्हि जे भानस नहि करतीह।" आओर नलिनीक पीठ पर धमाधम दू तीन मुक्का लगा दैत छल।

आब की छल! नलिनी जोर-जोरसँ घेओना पसारय। आँखिक नोरसँ नीचाक धूरा भीजि जाइत छले—"ईह! वरोक काज हमहीं करिअन्हि आ' बाहरोक हमहीं। हमरा बुतें से सभ नहि हैतन्हि। जेना हम हिनकर असामी बहु भऽ गेलिअन्हि। जाह, आबसँ हम नहि खेलाएब।"

तावतमे ललिता, वीणा, मनोज, विनोद, गुलबिया सभ केओ जमा भऽ जाइत छल। मनोज मुँहपुरुष जेकाँ बजैत छल —"वाह! खेलमे तों मारबहक किऐक?" फेर नलिनोसँ बाजय —"चल गे नलिनी! आब सँ तों हमरे संग खेलइहें।" परन्तु एम्हर ललिता, वीणा, श्यामा, गुलबिया सभ दोसरे विचार करैत छलि। ललिता प्रस्ताव करैत छलि— "चल हम सब अपनहि मिलि कऽ कनिया-पुतरा खेलाइत जेब। छौंड़ा सभकें नहि खेलाए देब। ई प्रस्ताव सर्वसम्मतिसँ स्वीकृत भऽ

जाइत छल। वीणा दुनू हाथ जोड़ि कऽ बजेत छलि —
'एहिमे की ?"

ताबत केओ दोसर उत्तर देत छलि —"गोटी"

फेर वोणा निर्णय सुनबैत छलि "कमल, मनोज विनोद सभक खेलकट्टी।"

बिनोदकें अपना दिस अबैत देखि गुलबिया बाजय—"जा ने अपने पुरुख सभमे खेलेबह से नहि होइत छह त अबैत छह मौगीमे भिकराय।" एहि प्रकारक भर्त्सना सुनि बिनोद सोझे गामपरक बाट धरैत छल।

नलिनी कनिया पुतरा खेलाइत छलि आओर कखनहु कऽ कनखीसँ कमलकें देखि लेत छलि। कमल मुँह बिधुओने बड़क शीर पर बैसल रहैत छल जखन सभ चल जाइत छल त बड़ी कालक बाद नलिनो चुपचाप जाकऽ कमलक पाछूमे ठाढ़ि भऽ जाय। परन्तु कमल किछु बजेत नहि छल। पाछू ओहि नीरवताकें भंग करैत नलिनीये बजेत छलि—"इह! इयह मारबो कलन्हि अछि आओर बसल छथि कोना शुभ्र-शाभ्र भऽ कऽ।"

तइयो कमल बाजय नहि। हँ ठोरपर मुस्कानक लालिमा दौड़ि जाइक जकरा ओ नलिनी सँ नुका लेत छल।

नलिनी फेर बाजय—"लोक हिनकर बहु बनतन्हि मारि खाइ लेल। जाह, हम काल्हिसँ नहि खेलायब।" आओर ओ जाय लगैत छलि।

तावत पाछूसँ लपकि कऽ कमल ओकर डेन धऽ लैत छल आओर अपना दिरा घुमबैत पजेत छल "आब कहियो नहि मारबौक।"

"जँ मारलह ?"

"त फेर कहियो हमरा सँ नहि खेलइहें।"

आओर नलिनी प्रसन्नतासँ खिलखिला उठेत छलि आओर दुनू गोटे हँसैत कुदत गाम दिश क विदा होइत छल।

परन्तु ई सभ घटना आब इतिहासक पृष्ठ बनि चुकल अछि। आठ-दस बरसकक व्यवधान थोड़ नहि होइत छैक। मुदा एकरा स्मरण कए कमलकेँ बड़ हँसी लगैत छेक। नलिनी सेहो लजा जाइत अछि। आब ई दुनू गोटा नेना नहि अछि आ'ने माँटि-माँटि खेलेबाक बयस धैले छैक। कमल आब उच्च कक्षामे पढ़ैत अछि। नलिनी सेहो दस बरसक भऽ गेलि आओर घर आङनक काज-धाजमे लागल रहैत अछि। परन्तु यावत कमल गाममे रहय तावत दुनू के एक बेर भेंट भेले ताकय। जेना बिनु भेंटे पेटक अन्न नहि पचैत होइ। कमलकेँ देखितहि सभ काज छोड़ि नलिनी ओकरासँ गप्प करय चल अबैत छलि। जखन-तखन नलिनीकेँ कमल लगमे बैसल देखि माय कहथिन्ह-"ईह ! जेना ओ हिनकर वरे रहन्हि तहिना फदका करैत छथि।" ई सुनि पहिने त नलिनी तामससँ माइक मुँह दुसि लेत छलि परन्तु आब ओकर समस्त मुखाकृति लज्जासँ आरक्त भऽ उठेत अछि।

ओहि दिन, एते दिन पर एकाएक कमलकें देखि नलिनीक समस्त शरीर आनन्दसँ सिहरि गेलैक। कमलक प्रस्ताव सुनि ओ कनियो नहि विचार करय लागलि आओर संग बिदा भऽ गेलि। किछु दूर गेला उत्तर ओकरा माइक फज्झतिक डर भेलैक। आओर ओ कमलसँ बाजलि—"तों जा! हम नहि जेब।"

"से किएक?"—कमल प्रश्न कएलक।

"माय हमरा मारत! देखलइक नहि जे घूरि जाइ लेल कहैत छलि।"

"धुर बताहि! चल हम जा कऽ कहि देबन्हि।"

"सैह नहि कहबहक त बुझिलैह! संगे-संग चलय पड़तह" आओर ओकर चिन्तातुर वदन एकाएक विकसित भऽ उठलै।

कनेकाल धरि दुनूगोटा चुपचाप खेतक आरिपर दने चलैत रहल। किछु दूर गेला उत्तर अकचकाइत नलिनी बाजलि—"जाह! एकटा बात त पुछबे नहि केलिअह?"

"कोन बात?"

"इएह जे तों अएलह कहिया?"

कमल कने अभिरोष करैत बाजल—"से पुछबा काजे कोन छौक।"

"सरिपों कहैत छिअह। तते अगुताक चललह जे हमरा तकर सोहे नहि रहल।"

"ठीके की। जामुन खएबाक आगू कुशल-क्षेम पुछबाक सोह रहैत छैक! खसब वा हड्डी-गुड्डी टूटत त हमर, तोहर कीं?"

"से सब कहबऽ त हम जैबो नहि करब।"

"त की कोनो फूसि। सभ त अपनहि गर्जक लेल आन्हर रहैत अछि"—कमल कटाक्षसँ नलिनी दिश मुस्कुराइत बाजल।"

परन्तु नलिनीकेँ ई कथा नीक नहि लगतैक। बाजलि— "जामुन लेल की केओ रकटल खछि। जाह अपनहि खाइ लेल हम आङन जाइत छी।"

आ ओर कमल पाछू घूरि कऽ देखलक जे नलिनी सरिपहुँ घुमल जाइत छलि। दौड़ि कऽ जा कऽ पाछूसँ ओकर हाथ पकड़ि लेलक। फेर ओकरा अपना दिश घुमबैत कहलक—"वाह रे रुसनाइ। एहन नहिं हम देखने छलिऔक।"

तावत नलिनीक आँखिक नोर गालपर टघरि आयल छल। कमलकेँ आब जा कऽ बुझबामे अयलै जे ओकर बातसँ नलिनीक हृदयकेँ कष्ट भेलैक। ओ अपन आँगुरसँ नलिनीक नोर पोछैत कहलकै "हमरा नहि जानल छल जे तों एतेक मानिनी भऽ गेलीह अछि।" नहि जानि जे कमलक एहि उक्तिमे कोन रहस्य छल। नलिनीक आँखि यद्यपि ओहिना भरले रहल तथापि अधर पर हास्यक मंजुल प्रभा विकीर्ण भऽ गेल।

साकांक्ष होइत नलिनी बाजलि—"अहुना केओ करैत अछि। छोड़ह..."

"से किए?"

कमलक मुँहपर विस्मयबोधक चिन्ह देखि नलिनी कहलक— 'लोक देखत त की कहत?"

कमल अप्रतिभ भऽ ओकर हाथ छोड़ि देलक। परन्तु आश्चर्य भेलेक जे नलिनी आब? कते सज्ञान भऽ गेल अछि! त की ओकर बालोचित चाञ्चल्य लुप्त भऽ गेलैक? पुनः नलिनीसँ प्रश्न कएलक—"लोक देखतइ त की ?"

"आब एहि की क कोन जबाब। एतबहु नहि बुझैत छहक त हम की कहिअह।"

कमलकेँ बुझि पड़लैक जेना नलिनी ओकरा एक अज्ञान बालक बुझि रहल हो आओर अपनाकेँ एकटा पैघ ज्ञानी-ध्यानी। ओकर ज्ञानक अँटकर पएबाक लेल कमल पुनः पुछलकै—"ऐ' गे नलिनी! हम सब जे कलममे खेलाइत छलिऐक से मन छौक ?"

नलिनी नीचा दिश तकैत बाजलि—"तहिया की बुझैत छलिऐक ?"

"से किऐक' आब सभ किछु बुझय लगलीह अछि ?"

नलिनी लजा कय दोसर दिस ताकय लागलि।

३

नलिनीक माय रंजसँ किछु बजितहि छलीह तावतमे नलिनी आबि उपस्थित भेलि। दूरेसँ देखि पदुमसुन्नरि बजलीह—"आबह आइ हम तोरा बुझबैत छिअह। कहू त एकर डल। ई पहर भरि पर तों कतयसँ बूलि कऽ अयलैंह अछि गे ?"

नलिनी आँचरमे बान्हल जामुन दिश माइक ध्यान आकृष्ट करैत बिहुँसैत बाजलि—"हे देख तोरे लेल जामुन आनय गेल छलिऔक।"

पदुमसुन्नरि तामसे माहुर भऽ गेलीह। कहलथिन्ह—"हेहराक पेटमे गाछ जनमल त कहलकै जे हम छाहरिएमे छी। एँ गे ! धाकर सनतों भऽ गेलेँह आ' गेल छलेँह जामुन बिछय कने लोकक लाज नहि भेलौक ? कनियो त विचार होइतौक जे एहन उज्जर नूआमे जामुन कोना बन्हैत छी। छोया, छोया। तोरा अकिलकैं बलिहारी रहौ।"

तावत कमलकेँ अबैत देखि पदुमसुन्नरिक सभ क्रोध विला गेलन्हि। आवेशसँ उठैत बज़लीह —"आबह आबह! कहिया अयलह?" कमल आगू बढ़ि झुकि कऽ पदुमसुन्नरिकेँ प्रणाम कयलक आओर बाजल 'आइये भोरमे अयलिऐक मामी।"

पदुमसुन्नरि नलिनीकेँ ठाढ़ि देखि फेर फज्झति करैत बजलीह— "देखू ने! चुपचाप तमाशा देखि रहल अछि। गे पिढ़ियो आनि कऽ देबही से नहि। बच्चा ओहिना ठाढ़ अछि।"

"की हेतैक" कहि कमल नलिनी दिश दृष्टिपात कयलक जे तावत पीढ़ी आनय चल गेलि छलि।

तावत पदुमसुन्नरि कमलसँ कहलथिन्ह—"बुझलह। एहन अपढंगाहि लोक नहि देखल। अखनहि जामुन बीछि कऽ आयल अछि। सौंसे नूआमे दाग लगौने।"

"से त ठीके अलूरि सनक काज भेलैक।" कमल पदुमसुन्नरिक कथनक समर्थन करैत बजलाह "ई त एहन अपढंगाहि नहि छलि।"

नलिनी कमलक एहि उक्तिकेँ सुनि रहल छलि। तामसेँ भेर भेल आयलि आओर पीढ़ी पटकि कऽ चल गेलि।

पदुमसुन्नरि कमलकेँ कहलथिन्ह "देखलहक एकर डल। एकरा केओ उचित-अनुचित नहि कहौ, से कोना हेतैक। गे दाइ। यावत एतऽ रहबैह तावत हम कहबे करबौक। सासुर चल जइहैं त बरु माइक कोनो खोज-खबरि नहि लिहैं।"

नलिनी पाखाक अढ़मे ठाढ़ि छलि। रहि रहि कऽ कमल पर

पित्त उठैत छलैक—"देखू ने। एतय आबि कऽ कोना बगुला भगत बनि गेल अछि - जेना हम अपनहि मने जामुन खाइ लेल गेल होइ।"

तावत माय शोर करैत कहलथिन्ह—"गे जामुन अनलैंह अछि त दही ने कमल कें। एकटा छिपलीमे नेने आबइ। नोन सेहो लऽ लिहैं।"

नलिनीकें अवसर भेटलैक। बाजलि—"ओ अपनहि भरि पेट खा कऽ अयलाह अछि। इहो नैह देने छलाह।"

कमल जेना चोरी करैत पकड़ा गेल हो। अपन सफाइ दैत कहलक—"हम नहि खैब। अखनहि भरिपोख खा कऽ अयलहुँ अछि! बड़ पाकल जामुन छलैक।"

पदुमसुन्नरिकें सभटा रहस्य विदित भऽ गेलन्हि। कहलथिन्ह—"सैह त कहैत छलहुँ जे ई एकसरि जामुन लाबए कोना गेलि। जाइत काल हमरा बुझि पड़ल जे केओ आओर हो परन्तु तोरा दऽतँ बुझले नहि छल। अच्छा तखन कोनो हर्ज नहि।" आओर ओ नलिनी दिश आवेशपूर्ण दृष्टिसँ देखलथिन्ह जेना कि फज्झति करबाक खेद भऽ रहल होन्हि।

नलिनीकें आब अपन शिकाइत उपस्थित करबाक अवसर भेटलैक, बाजलि—"आइ गाछक फुनगीपर चढ़ल छलाह, खसितथि त बुझितथिन्ह।"

ई सुनि पदुमसुन्नरि भयसँ अवाक रहि गेलीह। पाछू कमल दिश तकैत बजलीह—"कह तऽ अहुना केओ करैत अछि।

आब की तोँ नेना छह ।"

"ई की कहत मामी ।" कमल लजाइत उत्तर देलक—अपना जे फज्झति सुनय पड़लैक अछि तं हमरो चुगली करैत अछि ।

पदुमसुन्नरि गदगद भऽ गेलीह ।

तावतमे नलिनी आग्रह करैत बाजलि—"किछु जलखइ नहि हेतैक ?"

पुत्रीक एहि प्रस्ताव पर पदुमसुन्नरि कहलथिन्ह—"की जलखइ देबहीं, छुच्छ चुरा कोना खयतैक ।"

"से किएक आमो त छैक ।"

ई भने मन पाड़लैंह -पदुमसुन्नरि बजलीह । सैह त कहू । आमक त हमरा ध्याने नहि छल ।'

नलिनी आमक मुँहठी काटि कऽ लऽ अनलक । कमल खाइत-खाइत प्रश्न कयलक—"एहि बेर त कलममे आम खूब छल ?"

पदुमसुन्नरि उत्तर दैत कहलथिन्ह—"आम त फड़ल छलैक अवश्य से चोरबाक संहार भेलैक । हमरा के ओगरैत । जे बचल से तोड़बा लेलिऐक ।"

कमल बाजल--"नीक कयल । नहि त आइ जे हमरा पड़ि लागल सेहो नहि लगैत ।"

नलिनी तावत दोसर आम निकालिक कमलक हाथमे राखि देलक ।

हाथ मुँह धोलाक बाद पदुमसुन्नरि आँचरक खूटसँ सुपारी खोलि कऽ देलथिन्ह ।

किछु काल आओर गप्प-सप्प होइत रहल। पश्चात कमल बाजल—"आब एखन जाइत छी मामी।"

"अखन रहबह की ने?"

"हँ अखन त छुट्टिए छैक। दू चारि दिनक बाद एक बेर गाम जयबाक नियार करैत छी।"

आङनक टाट धरि नलिनी संग आयलि। माइक अढ़ भेला पर प्रश्न कयलक—"असले जयबह की?"

"कतय?"

"अपनहि बजलह जे गाम जैब।"

कमल जा किछु बाजय ता' नलिनी कहय लागलि—"नहि, कहियो काल कऽ अवश्य जयबाक चाही। खेत पथारक प्रबन्ध कोना होहत छह सेहो त देखि लेबह।"

कमल प्रसन्नतासँ नलिनीक गाल पर एक हल्लुक चाट मारैत कहलकै—"से किएक? अहाँकेँ तकर एतेक चिन्ता कथी लै रहैत अछि?"

नलिनी त बुझू जे लाजे गड़ि गेल।

कमल 'फेर कखनहु आयब' कहि विदा भय गेल। नलिनी ओतय ठाढ़ि तावत बाट दिश तकैत रहलि यावत ओ अदृश्य नहि भऽ गेल।



एहि ठाम कमलक एक संक्षिप्त परिचय देब आवश्यक अछि। बयस सोलहम। मोंछक पम्ह अखन चलबे कएल अछि। भरल पुरल देह जे युवत्वक आविर्भावसँ अत्यन्त आकर्षक लगैत अछि। गौर वर्ण। पूरा नाम छन्हि कमलकान्ति झा। घर नवगाँव। मूल दरिहरे राजनपूरा; काश्यप गोत्र। पूर्वज लोकनि कोइलखक बासी छलथिन्ह। तीन पुरुषसँ नवगाँव आवि बसलाह अछि।

एतय कमलक मातृक छन्हि। हर्षनाथ चौधरी, हिनकर मातामह एहि परोपट्टाक सुप्रसिद्ध लोक छलाह। हिनकर माय सुशीला हुनकर एकमात्र सन्तान छलथिन्ह। ताहिसँ परम दुलारू।

जहिना सज्ञान तहिना सुशीलो। नामक अनुरूप गुणो छलन्हि। माय बाप दूनूक आँखिक बुझू जे डिम्भा बनल छलीह। हुनका लोकनिकेँ पुत्र नहि हेबाक कनिओ क्लेश नहि छलन्हि।

जखन सुशीला वयःसन्धिमे प्रवेश कयलन्हि तखन जा कऽ माय-बापकेँ ध्यान गेलन्हि जे सुशीला पुत्र नहि, पुत्री थिकीह। फेर कन्यादानक लेल सुयोग्य वरक अन्वेषण होमय लागल। परन्तु हर्षनाथबाबूकेँ कतहु समुचित कथा दृष्टिगत नहि भेलन्हि।

जेठक मास छल। आमक पाकब भरखरि शुरू भऽ गेल छल। मिथिलामे आमक समयमे गाछीक शोभा अवर्णनीय रहैत अछि। दूर-दूर तक पसरल गाछी, बगवारक स्वरसंगीत, ओतुका चहल-पहल सभ अपूर्व रहैत अछि। आमक मासमे त बुझू जे गामक सुषमा उपटि कऽ गाछिएमे चल अवैत अछि। मानवक सौन्दर्य सृष्टि प्रकृतिक सौन्दर्य-श्रीक सम्मुख नत भऽ जाइत अछि।

हरियर-हरियर पातक बीचसँ झलकैत लाल पियर आमक सौन्दर्य ककर मन नहि मोहि लेत? खास क' धिया-पुताक लेल त लोभ संवरण असम्भव भऽ जाइत अछि। प्रभातक प्रथम किरणसँ लऽ कऽ सन्ध्याक अन्तिम किरण पर्यन्त प्रकृतिक ओ आङन धिया-पुताक क्रीड़ाक्षेत्र बनल रहैत अछि। ओकर अभिनव कलरवसँ वनश्री मुखरित भऽ उठैत अछि। गाछीमे जा कऽ स्थिर भऽ बैसब एहि बालक-बालिकाक स्वभावक प्रतिकूल होइछ। पाकल आमक भटाभटीमे केओ एम्हर दौड़ैत अछि

त केओ ओम्हर। जेना कि वनदेवीकेँ एहि सुकुमारमति नेना लोकनिकेँ हरान करबामे विशेष मनोविनोद भऽ रहल होन्हि।

सभक गाछी मे बूझू जे सभकेँ नोते रहैत छैक। लोक सभ जमा होइत अछि। पानि भरल बालटीमे मुँहठी काटि कऽ आम राखि देल जाइत अछि। फेर लोक सभ खाइक लेल जुटि जाइत अछि। के कतेक खाइत अछि इयह प्रतियोगिता रहैछ। एक गोटे आम बोछि-बोछि कऽ जमा कैने जाइत अछि दोसर ओकर मुँहठी काटि बालटी मे रखने जाइत छथि आओर योद्धा लोकनि भोजन युद्धमे-लागल रहैत छथि। एहिठाम गरीब धनीकक वैषम्य नहि रहैत अछि। छोट-पैघक विचार नहि काज करैत अछि। आमक मास थीक? मिथिलाक एक महान पर्व। पावनि-तिहारमे भेद-भाव कथय? देवी-देवताक सम्मुख सभक एक रंग स्थान अछि। ककरहु गाछी फरहु, भनहि केओ गाछी बला नहि होअऽ परन्तु गामक सामाजिकता मे सभ गाछी बला अछि, सभ आम खैत।

सैह जेठक मास छल। सड़कक कातमे जे बड़कागाछी अछि ताहिमे उतरबारी कातसँ छन्हि हर्षनाथ बाबूक। खूब जोरसँ आम फरल छल। आमक भारसँ डारि सभ नीचामे भीर गेल छल। गाछीक बीचमे एकटा खोपड़ो छल, तकरा आगू मे एकटा मचान। मचानक तरमे कनेकटा साजी खुनल छल जाहिमे गोट बीसेक आम राखल छल।

तखन गाछीमे केओ नहि छल। मचान पर एकसरि सुशीला--

बैसल छलीह। नीचामे पितिऔत भाय किशोर आमकेँ गनि-गनि कऽ खाधिमे रखत छल। आन पुरुष-पात्र सभ गाम पर खाइलेल गेल छलाह।

तावत पश्चिम भरसँ घटा उठल आओर ओकर सूचना देमय दोली आयल। दोलीक चलब छल कि पाकल आमक पथार लागि गेल। सुशीला ओ किशोर दुनू भाय-बहिन बिछैत-बिछैत बेहाल। साजी ऊम डाम भरि गेल। मचानक नीचा सेहो स्थान नहि रहल।

फेर पटापट बुन्नी पड़य लागल। किशोरक आनन्द कहल नहि जाय। ओ नाचि नाचि गाबय लागल— 'पानि आयल बुन्नी लायल, कौआ केर जमाय आयल।"

एतबहिमे शुरु भऽ गेल मूसलाधार। किशोरक नृत्य क्रम स्थिर नहि रहल। ओ पड़ायल खोपड़ीमे। गाछीमे वर्षाक झमाझम नृत्य होमय लागल। एहि अभिनव दृश्यक सम्मुख नवयौवना सुशीलाक हृदय सेहो स्थिर नहि रहल। वर्षाक मधुधार सदृश कोमलहृदयसँ सगीतक धार विगलित भऽ उठल-"जेठ हे सखि हेठ बरखा कन्त......"

परन्तु ओ एहि सँ आगू नहि गाबि सकलीह। गीतक स्रोत एकाएक रुकि गेल। ककरो देखि जेना ओ सहमि गेल होथि। बात सत्ये छल। सामने ठाढ़ छल भीजल वस्त्रसँ आवेष्ठित एक नवयुवक। एहि अपरिचित व्यक्तिकेँ देखि सुशीलाक सौंसे शरीरसँ घाम फेकि देलक। नाकक नीचा स्वेदकण निकलि आयल

जेना कि केओ शीशा पर पानि छीटि देने हो। किशोर तखनहि बहिनक मुँह ताकय आओर तखनहि ओहि आगन्तुक। किछुकाल धरि केओ किछु बाजल नहि। खाली पानिक झमाझमसँ निस्तब्धता प्रतिध्वनित भऽ रहल छल।

नवागन्तुक थोड़े काल खोपड़ीक आगूमे भिजैत ठाढ़ रहल। ओकरा धोतीसँ पानि चूबि रहल छल। बाजल—"हमरा अयने अहाँ सभकेँ बाधा भऽ गेल। भेल जे केओ पुरुष-पात्र हैताह त ओतहि चलिक पानि गमा ली। वेश हम ओहि गाछक जड़िमे चल जाइत छी।" आओर कपार परक पानि पोछैत ओ एकटा गाछक जड़िमे जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल।

सुशीला आब जा कऽ निसास छोड़लन्हि। ललाट परक घाम पोछैत किशोरसँ बजलीह—"बेचारा पानिएमे पड़ि गेलै। सभ नूआ बस्त्र भीजि गेलैक। केओ नीक लोक बुझि पड़ैत अछि।" बहिनिक सहानुभूति पाबि किशोर बाजल तों कहै त ओकरा शोर कऽ लिऐक।" परन्तु सुशीलाकेँ एहिमे स्वीकृति देबाक साहस नहि भेलन्हि। एक अज्ञात लज्जा आबि ओकर कण्ठकेँ अवरुद्ध कऽ देलक। किशोर सेहो दोहरा कऽ जिज्ञासा कैलक।

पानिक क्रम तइयो नहि भंग भेल। एम्हर सुशीलाक कोमल हृदयमे भावनाक द्वन्द्व होइत रहल। इच्छा भेलैक जे कने देखिऐक जे बेचारा कोना ठाढ़ अछि। गाछीक अन्हारोमे युवकक स्वर्ण कान्ति चमकि रहल छल। भीजल कुर्त्ताक तरसँ

ओकर मांसल शरीर दर्शनीय छल। ओ अपन दुनू हाथ दुनू कन्हा पर रखने छल जेना कि भीजल वस्त्र पहिरने बेचारा आर्द्र भऽ गेल हो। किशोरसँ बाजलि—हे रे! बेचाराकेँ शोर कऽ लही।" किशोरोक सैह इच्छा छल। नवागन्तुककेँ शोर करैत बाजल—"हे यौ! बहिन कहैत अछि खोपड़िएसे चल आबय।"

नवागन्तुकक ध्यान कोनो दोसर दिश छल। एकाएक ई सम्बोधन सुनि ओकर ध्यान भंग भेल। बाजल—'हम ठीके छी। अहाँ सभ बैसू।" परन्तु किशोर फेर आग्रह कएलक।

नवागन्तुक खोपड़ीक मुँह लग आबि कऽ सुशीलाकेँ सम्बोधित करैत कहलक—"हमर त सभ कपड़ा लत्ता भीजल अछि। हमरा अयने अहूँ सभक वस्तुजात भीजि जैत।"

"नहि, नहि!" अनायास सुशीलाकेँ बजा गेलन्हि। अपना भरि जीभकेँ दाबबाक कतबो प्रयत्न कयलन्हि परन्तु ई दुनू शब्द ताबत बहरा गेल। 'हे भगवान! ई की कहने हैत जे एकरा कनियो संकोच नहि छैक। लज्जासँ हुनकर कोमल कपोल आरक्त भऽ उठल। ओ घाड़ झुकौने बैसल रहलीह। फेर ओहि युवक दिश ताकि नहि सकलीह।

नवागन्तुकक सम्मुख एक समस्या उपस्थित भऽ गेल। आब ओ एहि किशोरीक आज्ञाकेँ टारय कोना? ओ भीजल कुर्त्ताकेँ बाहर मचान पर राखि देलन्हि आओर खोपड़ीक एक कातमे बैसि गेलाह।

सुशीलाक समस्त शरीर पीपरक पात सदृश काँपि गेल। हुनका हाथमे कोनो उपन्यासक पुस्तक छल। ओ ओहि पुस्तककेँ पढ़बाक प्रयत्न करय लगलीह। परन्तु पुस्तक पर ध्यान स्थिर होऽ त कोना? हृदयमे त दोसरे बिचार-दोहन छल। हुनका रहि रहि कऽ होन्हि जे एकरा एतय किऐक बजौलिऐक। भनहि गाछक जड़िमे ठाढ़ छल। नहि जानि जे ई अनचिन्हार व्यक्ति के थीक? भगवान केहन सुदर्शन रूप देने छथिन्ह। ओह बाबूजी सभ कतय जा कऽ बैसि रहलाह। जल्दी अबितथि त एकरासँ गप्प करितथि।

कथीक गप्प? सुशीला लाजें कठुआ गेलीह। राम, राम हम को सोचय लगलहुँ। अपना बुद्धि पर हँसी लगलन्हि। ओ एहि सभसँ ध्यान हटाय पुस्तक पर लगौलन्हि।

'सरल किशोरी निर्मला (नायिका)क विवाह भेलन्हि अछि। एकान्त कोठलीमे बसल जगदीश (नायक) कल्पनाक नन्दन कानन बसा रहलाह अछि। आओर निर्मला—सुन्दरि चललीह पहु घरना—हृदयमे मिलनक आतुरता परन्तु चरणमे लोक-लज्जाक बन्धन एक अकृत्रिम भय।"

सुशीला उत्सुकतासँ पढ़ि रहल छलीह। आगूक वर्णनक लेल उत्कंठा आओरो बढ़ि गेलन्हि। 'निर्मलाकेँ सखी लोकनि घर कऽ द गेलथिन्ह। नदीक मधुधार जे समुद्रमे गेलो उत्तर अपनाके ओहि नोनगर जलसँ कात रखबाक चेष्टा करैत अछि तहिना ओहो अपनाकेँ सुरक्षित रखबाक चेष्टा कयलन्हि।

परन्तु समुद्रक पाट विशालसँ विशालतर होइत गेल आओर नदीक अस्तित्व स्वतः विलीन भऽ गेल। ई छल दू अपरिचित हृदयक सम्मिलन। दू प्राण एकाकार भऽगेल; दू शरीर एक प्राण भऽ गेल। सुशीलाक हृदयमे गुदगुदी उठय लागल हुनकर सौंसें शरीर सिहरि गेल। सुशीलाकें बुझि पड़लन्हि जेना कि उपन्यासक नायिका निर्मला वैह होथि। परन्तु जगदीश ! जगदीश कतय छथि ?

नवागन्तुक बाहर एक गतिसँ बरसैत जलधार दिस टकटकी लगौने छल। कखनहु कऽ आंकर नजरि ध्यानावस्थिता नायिकाक झुकल आंखि पर चल जाइत छल। ओ दूरहिसँ पुस्तकक ओहि पंक्तिकें पढ़बाकप्रयत्न करैत छल जाहि पर अवनतमुखीक नयन-युगल दौड़ि रहल छल। किशोर औंघा कऽ बहिनक लगमे सूति रहल छल।

ताबतमे ककरो पैरक छपर-छपर सुनि पड़ल। सुशीलाक जानमे जान आयल। ओ छाता ओढ़ने सुशीलाक पिता छलाह। खोपड़ीलग आबि कऽ बजलाह—"गे सुशीला ! देखत कते आम खसल छौक। किशोर कहाँ गेल—बिछलक किएक नहि ?" परन्तु सुशीला निरुत्तर छलीह। खोपड़ीमे एक अपरिचित व्यक्तिकें बैसल देखि हर्षनाथ बाबूकें बड़ विस्मय भेलन्हि। हाथक छाता सुशीलाकें दैत कहलथिन्ह—'हे ले ! तों गाम पर जो। तते जोरसँ पानि अयलक जे देरी भ गेल।"

नवागन्तुक कुर्त्ता तखनहु मचाने पड़ पड़ल छल। हर्षनाथ-

बाबूके विषय बुझबामे भाङठ नहि रहलन्हि। कने हँसैत कहलथिन्ह —"बुझि पड़ अछि जे अहाँ पानिएमे पड़ि गेलहुँ।

नवागन्तुक शिष्टतापूर्वक यथोचित उत्तर देलथिन्ह।

नाम छलन्हि—मृणालकान्ति झा—नवगाँवक यशोधर झाक पुत्र। पटना कालेजमे एम० ए० क छात्र छलाह। एखन छुट्टी छलैक नेँ गामहि छथि। किछु आवश्यक कार्यसँ एम्हर आयल ता' पानि आबि गेलै। मृणाल अखन धरि अविवाहिते छलाह।

हर्षनाथ बाबू आवेश देखबैत कहलथिन्ह—"अहाँ ई भीजल वस्त्र कते काल धरि पहिरने रहब। ओहिदिश सीरममे एकटा धोती हेतैक बदलि लिअऽ।"

एहि अयाचित सहानुभूतिकेँ पाबि मृणालक रोम-रोम पुलकित भऽ गेलन्हि। संग-संग संकोचसँ हुनकर वर्ण रक्तिम भऽ उठल। भीजल वस्त्र पहिरने-पहिरने हुनकर समस्त शरीर शीतल भऽ गेल छल। ओ वस्त्र बदलि लेलन्हि।

तावतमे पानियो बन्द भऽ गेल। मेघ फाटि गेल आओर ओहि बीच दने सूर्यक प्रखर किरण धरती पर पसरि गेल। ओ अपन धोतीकेँ ओतहि टाँगि देलन्हि। धोती त कनिये कालमे सुखागेल परन्तु कुर्त्ता सिमसिमाहे रहल।

हर्षनाथ बाबू अपनहि हाथेँ नीक-नीक आम बीछि बीछि मृणालकेँ जलपान करौलथिन्ह। ओ राति मे रहि जयबाक लेल बड़ आग्रह कयलथिन्ह परन्तु आवश्यक कार्य देखाय मृणाल ओहि अनुरोधसँ मुक्त भेलाह।

अगिला शुद्धमे सुशीलाक विवाह भेल। हर्षनाथ बाबूक हर्षक सीमा नहि रहल। आइ हुनकर बड़ पैघ आकांक्षा पूर्ण भेल छलन्हि। 'निर्मला' केँ जगदीश भेटि गेलथिन्ह।

आओर चंचल किशोर अपन चांचल्यक उन्मादमे बहुत दिन धरि 'देखले कनियाँ देखले बर' आओर नहि जानि की सभ गबैत रहल।

सुशीलाक विवाहक दू वर्षक पश्चात् कमल केर जन्म भेलन्हि। एम० ए० कयला उत्तर मृणाल एक कालेजमे प्राध्यापक नियुक्त भेलाह। माइक मृत्यु त पहिनहि भऽ गेल छलन्हि, वृद्ध पिताक सेहो स्वर्गवास भऽ गेलन्हि। तथापि मधुर दाम्पत्य जीवन ओ पुत्र प्रेमक बीच जीवनक सरिता आनन्दसँ प्रवाहित भऽ रहल छल। एकाएक बज्रपात भेल आओर मृणालक मृत्यु भऽ गेलन्हि। डाक्टर टी० बी० कहलकन्हि। कतबो प्रयत्न कयला उत्तर हुनका केओ रोकि नहि सकल। सुशीलाक कानबसँ आँगन-घर दहा गेल। अबोध शिशु कमल सेहो आनकेँ कनैत देखि कम नहि कानल। परन्तु ओ सम्बन्ध विछिन्न कइये गेलाह।

मृणालक मृत्युक उपरान्त सुशीला बड़ उदास रहय लगलीह। हुनकर सभ प्रसन्नता लुप्त भऽ गेल—सभ आनन्द बिषादमे परिणत भऽ गेल। कमलक मुँह देखि ओ जखन-तखन पतिक मृत्युकेँ बिसरबाक प्रयत्न करैत छलीह परन्तु एहिमे ओ अपनाकेँ असमर्थ पबैत छलीह। हुनका आँखिक सम्मुख गाछीक ओ

दृश्य नाचि उठैत छलन्हि, जहिया मृणालसँ हुनक प्रथम साक्षात्कार भेल छलन्हि आओर नोरसँ आँखि भरि जाइत छल।

सुशीलाक जीवन क्रम किछु दिन धरि एहिना चलैत रहल आओर एक दिन ओहो अपन प्रियतमसँ भेंट करबाक लेल बिदा भइये गेलीह। सभ केओ तकितहि रहि गेल। ककरो विश्वास नहि छल जे सुशीलाक एहन आकस्मिक मृत्यु हैत। परन्तु मृत्यु त एक आकस्मिके वस्तु थीक। ई कोनो पूर्व सूचना दऽ नहि अबैत अछि। सुशीलाकेँ मृत्युक आकांक्षा छलन्हि आओर ओ हुनका अपना कोरमे समेटि लेलकन्हि।

माइक परोक्ष भेला पर कमल मातृक चल अयलाह। नाना-नानी अपन आँखिक पपनी बनाय कमलक लालन-पालन कयलथिन्ह। नानीक कोरमे खेलाकय आइ कमल सोलह वर्षक नवयुवक भऽ गेल अछि।

५

एतय एहि उपाख्यानमे पुनः चारि-पाँच वर्षक अन्तराल अछि। समयक अपार जलराशिमे एकर महत्व बुन्दसँ विशेष भनहि नहि हो परन्तु व्यक्ति-विशेषक जीवनमे तकर स्थायी महत्व होइत छैक।

ओहि दिन नलिनी पोखरिसँ जल नेने चल आबि रहल छलि। एकाएक कोनो वस्तुकें देखि थम्हि गेलि। खेतक पगडंडी पर देने चल अबैत व्यक्तिक मुखाकृति आब प्रत्यक्ष भऽ उठल। संग संग नलिनीक कोमल अधर पर मुस्कानक लालिमा झलकि गेल।

हाथक लोटा भारी छल तथापि नलिनी ओकरा फेर-बदल करैत ठाढ़ि रहलि। तावत कन्हा मे झोड़ा लटकौने और दुनू हाथें सर्र-सर्र कुसियार खाइत ओ मूर्त्ति लग पहुँचि गेल। नलिनी कने जोरसँ बाजलि--'कमल'। इच्छा त भेलै जे कहिऐक जे हम तोरे लेल एते कालसँ ठाढ़ि रही। ता' कमल बाजि उठल— 'हम ओतहिसँ तोरा चिन्हि लेल जे ई दोसर केओ नहि नलिनी थीक।

"ईह झुट्ठे"—नलिनो बाजलि "ओतेक दूरसँ केओ कोना चिन्हतैक। हमहीं चिन्हलिअह त ठाढ़ि भऽ गेलहुँ।"

"अहाँ धरि दूरेसँ चिन्हि लेल?" कमल कटाक्षसँ बाजल। एहि प्रसंग आओर किछु गप्प नहि भेल। दुनू एक दोसराके देखि मुस्कुरा क चुप भऽ गेल।

कमलकेँ कुसियार खाइत देखि नलिनी कहलक— 'ई नेना जेकाँ बाटे-बाट कुसियार की खाइत अयलह अछि। लोको देखने हेतह त की बुझने हेतह।"

परन्तु एहि उक्तिपर आवरण दैत कमल बाजल—"अच्छा की करबै लै—लोक त एहिना देखैत छैक। अहाँकें जँ इच्छा हो तऽ लिअ।" आओर हाथक कुसियारक टोनीकें नलिनो दिश बढ़ा देलक।

नलिनी किछु नकारात्मक उत्तर देबा लेल छलिए कि कमलक आँखिमे प्रबल आग्रहक भाव पढ़ि बाजलि—"देखैन नहि छह जे हाथमे अछिंजल अछि, कोना खैब? ईहो तोंही खा लैह।"

'से तोरा खाइए पड़तौ। ला' तावत हम अछिंजल धयने रहैत छिऔ।"

नलिनी अपन मुसकानक प्रभा बिखरैत बाजलि—"वाह रे बुधियार! हिनकर हाथ बड़ पवित्र छन्हि जे अछिंजल धयने रहताह। एते पढ़ि लिखि लेलह तइयो तोरा ज्ञान नहि भेलह।"

'से नहि फूसि"—कमल हँसैत कहलक—"आब तोरासँ थोड़ेकाल पढ़ल करब तखन जा कऽ ज्ञान हैत।"

परन्तु नलिनी हारि मानय वाली नहि। बाजलि—'से ठीके। व्यवहारक बहुत बात हम तोरा सिखेबह।"

'बेस भाइ!"—कमल किछु गम्भीर होइत उत्तर देलक—"एहि लेल त एखन सौंसे जीवन पड़ले अछि, सिखैत रहब।"

गप्पक क्रम आओर थोड़े काल धरि चलैत। परन्तु नलिनीक नजरि एकाएक सीतादाइ पर गेलैक। ओ आमक गाछतर ठाढ़ि भऽ कऽ बड़ीकालसँ एहि दिश ताकि रहल छलीह। सीतादाइक विषयमे ओ बहुत किछु सुनने छलि आओर ताहिसँ हुनकर लाल लाल आँखिक सम्मुख अधिक काल ठाढ़ि रहबाक धृष्टता नहि कऽ सकलि। ओतयसँ विदा होइत कमलसँ पुछलक—"आब त गामो आयब छोड़ि देलह।"

"दाइ, कालेजक पढ़ाइ छैक। खेल नहि छैक—पढ़ितहु तखन ने बुझितिऐक। हरदम गाम अयने काज चलतैक?"

नलिनी जा एकर किछु उत्तर दिऐ ता दोसर बात ध्यानमे आबि गेलैक—पैरे देखैत छियह ?"

"त की करितिऐक। एहन संयोग जे आइ कोनो सबारिए नहि भेटल। वस्तुजात एकटा दोकान पर रखबा अएलियेक अछि। आब एतयसँ कोनो आदमीकेँ पठेबैक।"

"त ओम्हर कखन अएबह ?

ओहि बेरमे। आ जखन भेंट भइये गेल त अएबाक कोन काज ?

"नहि अवश्य अबिअह"—प्रबल आग्रहक स्वरमे नलिनी बाजलि। आ' कमल नहि, नहि कहि सकल।

आंगनमे अवितहि देरी माय पुछलथिन्ह—"की गे ! एतेक देरी कथीक भेलौ ? केओ बान्हि रखने छलौक की ?"

नलिनी कें आब जा कऽ ध्यान अएलैक जे माय जल्दी आबय कहने छलि। परन्तु तकर सोह कहां रहलैक ? कमलक आगू त ओ जेना सभ किछु बिसरि गेल।

मूड़ी झुकौनहि नलिनी नहू नहू बाजलि—"कमल ठाढ़ कऽ गप्प करय लागल त हम की करितिऐक।"

पदुमसुन्नरि पूजा पर बैसल छलीह। अपने जे अछिंजल अनने छलीह ताहिमे कौआ लोल डुबा देलकन्हि। गोसाउनिक सीर नीपब अखन धरि बाँकिए छलन्हि। ताहिसँ नलिनीकें दौड़ि कऽ एक लोटा अछिंजल लाबय कहने छलथिन्ह। ओ एहि प्रतीक्षामे घंटा भरिसँ बैसल छलीह। तामसें जी लोहछि गेल छलन्हि। बजलीह—"बजैत कने विचारो त नहि होइत

छन्हि। हिनका कमलसँ गप्प करबाक बेर बहुत जा रहल छलन्हि। फेर की भेंट होइतन्हि कमलसँ। लाज धाख त उठा देलन्हि। बाट-घाट पुरुष सभसँ गप्प करैत रहैत छथि।"

नलिनीकेँ आशा नहि छलैक जे कमलसँ गप्प करबाक लेल माय फज्झति करत। जेना ओहि कोमल किशोरी पर अनजानमे कोनो आघात भेल होइक आओर ओकरा आँखिसँ झर-झर अश्रुपात होमय लागल।

पदुमसुन्नरि भगवती घरसँ बहरेलीह त नलिनीकेँ मुंह बिधुऔने देखि मनमे पश्चाताप होमय लगलन्हि जे किऐक फज्झति केलिऐक। खास कऽ कमलक प्रति हुनका पुत्रोचित ममता छलन्हि। प्रबोधवाक स्वरमे बजलीह—"कमल कहिया अएलैक गे! तोहूं हमरे ठकैत छैंह?"

परन्तु नलिनी कोनो उत्तर नहि देलक। क्रोधसँ दोसर दिश घूमि गेल।

तावत माय तुलसी-चौड़ा परसँ जल ढारि अएलीह आओर नलिनी कें नैवेद्यक चारि पाँच गोट मखान आओर गुड़ देल कहलथिन्ह—"हे लैह।"

नलिनी तइयो ओहिना नीरव रहलि। पदुमसुन्नरि देखलन्हि जे आब एकरा बिनु बौंसने काज नहि चलत। स्नेह देखबैत कहलथिन्ह—"जँ एतेक देरिए लगलौक त अपनहु एक डूब देनहि अबितैह। से त भेलौक नहि—आब फेर जएबैं नहाइ लेल। एकभिनसरसँ भानस-भात पानि-पानि भेल छौक। जो इनारे पर दू डोल ढारि ले। आओर देख तऽ केशमे कोना रुस्सी उड़िआइत

छौक। तोरा सनक अपरोजक लोक नहिं देखल। आब की नेना छैंह जे तेलो आने दऽ देतौक। तोरा अवस्थाक लोक त आब सासुर बसैत अछि।"

रौदमे राखल नारिकेरक तेल घमा कऽ तरल भऽ गेल छल। पदुमसुन्नरि एक चुरू हाथ मे लऽ कऽ नलिनीक माथमे ढारि देलथिन्ह। आब नलिनीकें चुप नहि रहल गेलैक। माय पर खौंझाइत बाजलि—जो, हमरा नहि नीक लगैत अछि। बुझबय अएलीह अछि।" आओर ओहि ठामसँ हटि कऽ ठाढ़ि भऽ गेलि।

पदुमसुन्नरि कें नलिनीक एहि व्यवहार पर हँसी लागि गेलन्हि नलिनी सेहो अपन हँसीकें नहि रोकि सकलि। आओर हास्यक रेखा मेटाइत-मेटाइत मनक सभ क्षोभ सेहो मेटा गेल।

नलिनी पुलकित होइत बाजलि—"आब इनार पर के नहायत ? पानि भरैत-भरैत गट्टा दुखा जाइत अछि। जाइ छी दौड़ि कऽ पोखरिसँ नहा आबय।" आओर माइक उत्तरक बिनु प्रतीक्षा कैनहि अलघनी परसँ साड़ी भीकि पड़ायलि। आंगनक बाहर गेला उत्तर माय केर स्वर कानमे पड़लैक—"देखिहै फेर ने देरी लागौ।"

आओर फेर चिन्तित भावें पदुमसुन्नरि सोचैत रहलीह— नलिनीक ई सोलहम थिकैक। एहिबेर कन्यादान अनिवार्य अछि। परन्तु नलिनीसँ बिछोहक कल्पने मात्रसँ हुनक दुनू आँखि भरि गेलन्हि।

६

कमल आङनमे पैर देलक त ककरो आहटि नहि भेटलैक। भेलैक ज दूनू माइ-धी कतहु टोल-परोसमे बुलय गेल हेतीह। किछु काल धरि ठाढ़ रहि ओ विदा भऽ गेल। परन्तु जहाँ दू डेग चलल हैत कि पदुमसुन्नरिक स्वर कर्णगोचर भेलैक—"के थोक?"

पदुमसुन्नरि ओहि ठाम लतामक गाछतर शीतलपाटी ओछाय रौदमे सूतलि छलीह। बाहर दिशसँ नूआ टाङल रहलासँ अढ़ भऽ गेल छलैक। कमलकेँ देखैत जेना हुनकर मन प्रसन्नतासँ पुलकित भऽ गेलन्हि। स्नेहपूर्ण शब्दमे बजलीह—"देखू ने, अखनहि जरलाहा आँखियो लागि गेल छल।

कमल बाजल—"हम त ककरो नहि देखि फिरल जाइत रही। भेल जे कतय जाइत गेलहुँ अछि ?"

कमल ओतहि शीतल पाटी पर बैसि गेल। पदुमसुन्नरि कुशल-समाचार पूछय लगलथिन्ह।

एहि बीचमे कमल प्रश्न कयलक—नलिनी कहाँ गेलि ? ओकरा नहि देखैत छिऐक।"

"इयह कलमक कातमे जे खेत छैक ओतहि गेलि अछि।

'धान कटाबय गेल अछि ओ ?'

'त की करितिऐक ?'—पदुमसुन्नरि दीनतापूर्ण स्वरमे बजलीह।—"आन साल परशुराम भाइ आबि कऽ कटा-खुटा जाइत छलाह से एहि बेर ओ वेचारे दुखिते पड़ि गेलाह। आन ठाम त सभ बटैदारेक धर्म पर छोड़ि देलिऐक। ई लगक खेत छलैक। कहलिऐक अपनहि चलि जो। चारिटा खेसारीक मूड़ियो तोड़ने अबिहैं।"

"तखन कहू ने जे अहांकेँ धान कटेबासँ बेशी सागक बेग-रता छल।"

कमल जेना पदुमसुन्नरिक मनक बात कहि देने हो। ओ आँचरसँ मुँह झाँपि हँसय लगली।

कमल पुनः बाजल—"निश्चय कहैत छी जे अहाँ खाली सागक दुआरे जोर दऽ कऽ पठौने हेबैक। अहूँ सभकेँ भगवान नहि जानि जे केहेन रुचि देलन्हि। एहि साग-पातमे नहि कहि जे कोन स्वाद भेटैत अछि ?"

"से किऐक तों अपने बिसरि गेलहक ?"

परन्तु कमल बिसरल नहि छल। बाल्यावस्थाक स्मृति बड़ प्रबल होइत छैक। ओहि कालक एक-एक घटना ओहिना स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत अछि जेना कारी पाटी पर पथरखली सँ लिखल अक्षर। ओहि जीवनक प्रभातमे कमल ओ नलिनी साग तोड़ि कऽ लबैत छल आओर ओकर झक्का बनवैत जाइत छल। फेर स्वादि कऽ खाइत छल। स्वादो केहेन अपूर्व होइत छलैक। पता नहि जे ओ वस्तुक नैसर्गिक स्वाद रहैत छल अथवा ओहि किशोर हाथक माधुर्य्य। जे हो—जँ लोकके अपन बाल्यावस्था पलटि अबितैक। फेर जीवन कते मधुर होइत—ने राग ने विराग; एकमात्र आनन्दमय जीवन।

वास्तव मे जेना-जेना अवस्था अधिक होइत जाइत अछि, जीवनो जटिल भेल जाइत अछि। एहिविषय में कमल किछु आओर सोचितय ता' पदुमसुन्नरि टोकि देलथिन्ह—"की मन पड़लह ?"

कमल अपन मंजुल मुस्कानसँ हुनकर एहि कथन समर्थन कयलक। कमलके अपन माय-बापक स्मृति नहि छैक। ओ तखनहि छोड़ि क चल गेलथिन्ह जखन कि ओकर ज्ञानो नहि प्रस्फुटित भेल छल। तइयो ओकर बाल्यावस्था केहेन मधुर रहलैक। पदुमसुन्नरि ओकरा माय जेकाँ मानलथिन्ह। नलिनोमे ओकरा सहोदराक स्नेह भेटलैक। ओकर बाल्यावस्थाक इतिहास खाली ओकरे नहि वरन् कमल ओ नलिनीक बाल्यावस्थाक सम्मिलित इतिहास थीक।

कमल एही विचारधारामे बहि रहल छल कि पदुमसुन्नरि कहलथिन्ह--"आब कते दिन धरि एना रहबैक ?

कमल एहि कथनक अभिप्राय नहि बुझि सकल। प्रश्न कएलक--"कथीक ?"

"इएह नलिनीक। सोलहम थिकैक। पहिलुका समय रहितैक त लोक निन्दा सँ तर कS देने रहितय।"

कमल पदुमसुन्नरिक दिस देखय लागल। जेना माइक मुख परक अस्पष्ट चिन्ताक रेखा पढ़वाक प्रयास कS रहल हो। संग-संग मन एक अज्ञात प्रसन्नतासँ भरि गेलैक। जाहि नलिनीक संग ओ बाल्यावस्थासँ अद्यपर्यन्त स्नेहपूर्ण जीवन बितौलक अछि ओ नलिनी आब सासुर चलि जायत। जाहि पदकमलसँ ओ एहि टोल भरिमे जीवन प्रदान करैत छलि ओहि चरणमे आब चंचलताक स्थानमे स्थिरता आबि जायत। ई चरण अपन आलतारंजित प्रभासँ आब एक नव घरकेँ ज्योतित करत। कमलक आँखिमे नाचि गेलैक बाल्यावस्थाक ओ खेल जाहिमे ओ सभ अपन काल्पनिक गृहस्थी बसायल करैत छल। ओ गृहस्थी पूर्णतः काल्पनिक छल। आब जे हैत नलिनीक वास्तविक गृहस्थी हैत। कहाँ ओ नस-नसमे चाञ्चल्यक उन्माद लेने नलिनी आओर कहाँ ई सोलह वसन्तक नव यौवना सरल किशोरी। नलिनी वैह अछि परन्तु समयक प्रवाह ओकर रूप बदलि देलकै अछि।

कमलकेँ चुप देखि पदुमसुन्नरि पुनः बजलीह--"अगिला बैसाख धरि विचार अछि जे कन्यादान क ली।"

एकाएक कमलक चिन्तनधाराक क्रम भंग भS गेल आओर

ओ बिशेष बिनु सोचनहि मुँह स बहरा गेलैक "अहाँ सभकेँ त कन्या जेना कपार पर रहैत अछि। एतेक जल्दीक कोन काज छैक?"

पदुमसुन्नरि संकोचसँ मुँह झाँपि बजलीह—"तोहूँ ताले करैत छह। देखैत छहक जे एकरा बयसक लोक सभ दू-दू बेर सासुर बसि आएल अछि।"

एहि बेर किछु उत्तर देबामे कमलकेँ बिलम्ब भेलैक। ता' अनुरोध पूर्ण स्वरमे पदुमसुन्नरि कहलथिन्ह—"आब अधिक दिन अन्ठायब ठीक नहि हैत। एहि जीवनक कोन ठेकान। अवस्थो कम नहि भेल। जीबैत जे भऽ जाए से उत्तम। पाकल आम भेलहुँ कखन खसि पड़ब तकर कोन ठीक।" फेर ओ एक दीर्घ निश्वास लेलन्हि जेना कि कोनो पूर्व घटना स्मरण भऽ आएल हो।

और एहि स्थितिमे कमल सोचि नहि सकल जे एहि कथाक उत्थान करबाक पाछाँ पदुमसुन्नरिक अभिप्राय की छन्हि?

७

दूर-दूर धरि पसरल खेत। धनकटनी जोरसँ बजरल अछि। लग-पास जतय-ततय जन सभ धान काटि रहल अछि। प्रकृतिक जे अञ्चल लगहि पूर्व स्वर्णकणसँ पूरित छल, आब ऐश्वर्य हीन भऽ त्रस्त अछि। प्रकृतिक एहि रूप परिवर्तन पर क्षणिक विषाद जे होअ परन्तु चारू भर आनन्दक साम्राज्य अछि।

अगहन मासमे मिथिलाक ग्रामाञ्चलक शोभा अवर्णनीय रहैत अछि। ई चिर प्रतीक्षित अगहन—

जोनका निमित्त भरि कातिक गामक बाला।
तुलसी आगू बारै छलि दीपक माला।
अएला से अगहन पाहुन प्रकृतिक घरमे।
लऽला वरदान सोहागक मंगल करमे॥

Page 47, 48 missing

बाजलि—"एहन इच्छा होइत छौक त अपनहि किएक ने कऽ लैत छैंह। दूटा त करबे कएलँह, ई तेसरो कऽले।"

रधियाक पहिल विवाह भेल छलैक जखन ओ नेना छलि। चेतन भेलापर सासुर गेलि। पति पूब कमाइत छलैक। गाम-पर सासु ओ ससुर छलैक। ससुर यद्यपि आब पचाससँ ऊपरक भऽ गेल छलैक तथापि ओकर स्वभाव नीक नहि छलै। ओ रधियाकेँ तरह तरहक कष्ट देल करैत छलैक। फलतः रधिया ओतयसँ भागि आयल। एतए अयला उत्तर ओकर बाप अपना बेटीकेँ दोसर घर कऽ देलकै।

नलिनीक बातसँ रधियाकेँ दुख नहि भेलैक। हँसैत बाजलि—"एहन वर जँ भेटय त दूटा कोन जे दू सौ घर छोड़ि देबे।"

एहि बेर नलिनी फज्झैत करैत कहलक—'तों भारी निर्लज्ज छैंह। जो धान काट गऽ। हमरेसँ गप्प कएने पेट भरतौ की?"

वास्तवमे रधिया देखलक जे ओकर पाहि बहुत पाछाँ पड़ि गेल छल। सभ केओ ओकरासँ अगुआ गेल छलै। ओ बाजलि—"वेश! ई पांत पुरा कऽ फेर अबैत छी।" आओर ओ जा कऽ हबर-हबर काटय लागलि।

एम्हर नलिनी रधियाक बातकेँ सोचय लागलि। विवाहक वयश! ठोके, निर्मला, मालती, विमला सभक विवाह भऽ गेल। अपन सङ्गतुरियामे हमहीं टा कुमारि रहलहुँ अछि।

हमरो विवाहक बात त माय सोचितहि हैत।' विवाहक कल्पना मात्रसँ नलिनीक सौंसे शरीरमे रोमांच भऽ आयल। हृदयक प्रसन्नता अधर पर मुस्कान रूप लए प्रकट होमय लागल जकरा नलिनी झाँपि लेलक।

''परन्तु ओ फेर की कहि देलक? व्यंग त ने कयलक अछि। नहि, ई बेचारी से लाइलपटाइ की जानय गेल! अपन आन्तरिक अभिलाषा प्रगट कयलक अछि। वास्तवमे एहन वर कोनो बड़का भाग्यशालीकेँ भेटतैक। की हमरो भाग्य ओहने प्रबल हैत? हे भगवान! हम की सोचय लगलहुँ। से कोना हैत? भाइ-बहिन ...।"

"ऊँह! भाइ-बहिन। तखन त दुनियामे जतेक कुमार वर छैक से सभ भाइ भेलैक आओर जतेक कुमारि कन्या छैक से बहिन। फेर त ककरहु विवाहे नहि होइ। सभ कुमारिए रहि जाए।"

तावत रधिया आयलि। हाथमे हाँसू नेने, फुद्दी जेना फुदकैत। अबितहि नलिनीसँ बाजलि—"हय! गिरहथनी बनि कऽ अयलीह अछि आ' पान नहि खयबह।"

एकाएक चपल किशोरीक एहि अभिनव आग्रहकेँ सुनि नलिनीक विचार तन्तु टूटि गेल। ओ बेशीकाल चिन्तनमे निमग्न नहि रहि सकलि। प्रसन्न होइत बाजलि—'तों खो गऽ। हम नहि खाइत छी पान।'

"वाह रे नहि खाइत छी। आइ खा लैह।"

नलिनी किछु नम्रतासँ बुझबैत बाजलि—"जो तों खा ले। हम एतय नहि खैब। लोक देखत त की कहत ?"

"लोक की कहतैक"—रधिया दोहरबैत बाजलि—"है! ई सभ तँ अगहनक शृंगार थिकै। तों नहि खयबह त हमहुँ नहि खाएब।"

आओर नलिनीकेँ पराजय स्वीकार करय पड़लैक। ओ रधियाक सरस अनुरोधकेँ टारि नहि सकलि। पान खाइत रधिया बाजलि—"धानेक पान तखन दाइ किएक नहि खयतीह।" जेना ओ अपन दीनता पर व्यंग कऽ रहल हो।

तावत सम्पूर्ण खेत कटि चुकल छल। जन सभ जुन्ना बनेबाक लेल धान मोड़ि रहल छल। एकाएक नलिनीकेँ मन पड़लैक जे माय खेसारीक साग तोड़य कहने छलि। तखनो बेर छलैक। ओ जल्दीसँ थोड़ेक खेसारीक मूड़ी खोंटय लागलि।

खेसारीक लहुजा टुस्सी पर नलिनीक सुकोमल आंगुर दौड़िए रहल छल ता पाछू सँ ककरहु मन्द-मन्द स्वर कर्ण-गोचर भेल—

तोड़त अब मटर केर छिम्मरि
के भरि-भरि मौनी आँचर मे।

नलिनी चेहा कऽ पाछू ताकलक त देखलक कमलकेँ ठाढ़। साकांक्ष होइत प्रश्न केलक—"से की ?"

परन्तु कमल बात बदलैत बाजल—"अहाँ अखन धरि इयह साग तोड़लिऐक अछि?"

"त ?"

"त की ? अहाँके साग तोड़य पठौने छलीह। धान त बिनु अहूके कटा जइतैक।"

नलिनी हँसय लागलि। भेलै जे कमल सेहो माइक मनक बात बुझि गेलन्हि।

कमल ओतहिं एक पाँज नार पर बैसि गेल। नलिनी सेहो साग तोड़ैत रहलि। जन सभ एकान्त भावसँ बोझ बन्हबामे लागल छल। रधिया कखनहु कय एहि दुनू गोटा दिश चंचल दृष्टिसँ देखि लैत छलि। वातावरण शान्त छल।

कमल एकटकसँ चारूभरक प्राकृतिक सुषमाक अवलोकन करय लागल। अगहनक प्राकृतिक सुषमा—अन्नकणसँ सुशोभित धरणी। मिथिलाक सौन्दर्य-श्री-सुखश्री अगहनमे निखरि उठैत अछि। आइ कमलक हृदयमे कवि प्रगट भऽ आयल। ओ जेबीसँ कागत-कलम बाहर कय नहि जानि की लिखय लागल।

थोड़ेकालक बाद नलिनीकेँ सम्बोधन करैत कमल बाजल—"नलिनी ! हम एकटा कविता बनाओल अछि सुनबैं ?"

प्रसन्न होइत नलिनी बाजलि—"केहेन कविता !"

"अगहन पर !"

"अखन बनौलह अछि।"

"हँ ! तुरन्ते।"

नलिनी साग तोड़ब छोड़ि कमल लग चल आयलि। कमल आत्म-विभोर भऽ कविता सुनाबय लागल। नलिनी मगन भऽ सुनैत रहलि। अन्तिम पद सुनि ओ दीर्घ निःश्वास छोड़लक।

कमल पुछलक--"केहेन भेलैक ?"

"बड़ उत्तम"—प्रशंसामे जेना नलिनी आओर किछु कहय चाहैत हो परन्तु शब्द नहि भेटि रहल हो। संग-संग मनमे जेना ई भाव होइ—केहेन महान व्यक्तित्व छैक एकर—कमल केर—हमर कमल।

ता' जन सभ बोफ उठौलक। पाछाँ-पाछाँ कमल ओ नलिनी सेहो बिदा भेल।

पहिने दुनू चुप रहल। संगमे कमलकेँ देखि नलिनीकेँ रधियाक गप्प मन पड़ि गेलैक। ओ पुनः नहि जानि की सभ सोचय लागलि।

नलिनीकेँ एहि तरहेँ लीन देखि कमल पुछलक – "कोन गुनधुनमे लागल छैँह ?"

परन्तु नलिनी एकर कोनो उत्तर नहि देलक। अपन दिशसँ प्रश्न केलक—"के कहलक जे खेत गेल अछि ?"

"से किएक ! मामी कहलन्हि।"

"आओर की सभ कहैत छलह ?"-साड़ीक खूँटकेँ आंगुरमे लपटाबैत नलिनी पुनः प्रश्न कएलक।

"तोरे विवाह दऽ"

विवाहक बात सुनि नलिनी लाजेँ कठुआ गेलि। पुनः किछु नहि प्रश्न कय सकलि।

परन्तु कमल बाजल "हम त कहलिऐन्ह जे अखन एते जल्दीक कोन काज छैक। परन्तु .."

नलिनीक इच्छा भेलैक जे शीघ्रे कमलक लगसँ भागि जाय। कमलक संग ठाढ़ि रहबामे जेना ओकरा संकोच भऽ रहल हो। परन्तु एना नहि कऽ सकलि। मने मने सोचय लागलि - "आइ की सभ सुनैत छी? रधिया बैह कहलक आ' कमल सेहो। त की सत्ते...?"

तावत घर आबि गेल। कमल बाट फुटैत बाजल "आइ पुस्तकालयक 'मिटींग' छैक। ओतऽसँ अबैत छी त गप्प करब।"

नलिनीक मन त भेलैक जे बाजय—नहि, नहि! आब तों हमरासँ बाजल नहि करऽ। लोक देखत त की कहत?

परन्तु से कहबाक शक्ति ओकरा कहाँ छलैक?

८

आओर कमल जखन घूरि कऽ आयल त नलिनी एकटा पुस्तक हाथमे लऽ सूतलि पढ़ि रहल छलि। पदुमसुन्नरि दोसर घरक असोरा पर बैसि भानस करैत छलीह। खेतसँ अयलाक पश्चात् नलिनीक मन बड़ चंचल रहलैक। अबितहि ओ माइक आँखिमे कौतूहलबश किछु पढ़बाक प्रयास कयलक। आनन्दक उमंग जे ओकरा हृदयमे उठि रहल छलैक तकरा नुकायब ओकरा लेल कठिन भऽ गेलैक। सन्ध्या होइतहि ओ दीप लेसलक आओर एकटा पोथी लऽ कऽ पढ़य बैसि गेलि।

कमल अबितहि पहिने पदुमसुन्नरिसँ नलिनीक बिषयमे जिज्ञासा कयलक। आइ ओकर मन किछु म्लान छलैक। जाहि उल्लासक बीच ओ नलिनीक लगसँ बिदा भेल ताहि पर सन्ध्याक धूमिलताक संग संग

जेना विषादक मलिनता व्याप्त भऽ गेल हो। ओकर मुखाकृति देखि बुझि पड़ैत छल जेना ओ चिन्तित हो, कोनो विषयकेँ सोचैत-सोचैत जेना थाकि गेल हो। आओर ओ जखन नलिनी लग आयल त ओ पुस्तकक पाँछा ततेक डूबल छलि जे ककरहु अएबाक कथीलै भान हेतैक। कमल सेहो चुपचाप ठाढ़ भऽ गेल आओर ओहि मुग्धा केँ देखैत रहल। फेर एक गहन उदासी छाया सदृश ओकरा ऊपर पसरि गेल। किछुए काल पूर्वक बीतल समस्त घटना ओकरा आँखिक सम्मुख प्रत्यक्ष भऽ उठल। ओ सोचय जे निर्धनता समाजक केहेन भारी अभिशाप छैक। पदुमसुन्नरि नलिनीक विवाहक चर्चा कयने छलथिन्ह। समाजमे कन्यादान एकटा समस्या भऽ गेलैक अछि जकर सहल समाधान बड़ कठिन छैक। नलिनी सन रूपमे लक्ष्मी आओर गुणमे सरस्वती कन्या जाहि घरमे जैतैक ओकर शोभा बढ़ि जैतैक। परन्तु ओकर ई गुण नगण्य छैक, कारण जे ओकरा मायकेँ व्यवस्थामे दश-पाँच हजार टाका गनबाक क्षमता नहि छन्हि। फल इएह होइत छैक जे केहनो वरक हाथमे दए लोक निरीह कन्याकेँ बलि चढ़ा दैत अछि।

नलिनीसँ बिदा भऽ कऽ जखन ओजाइत छल त भैरव बाबू शोर कैने छलथिन्ह। भैरव बाबू समाजक गण्यमान लोक छथि। भैरव बाबूक संग संग एक आओर अपरिचित व्यक्ति ओतय बैसल छलाह जनिका कमल नहि चिन्हलकन्हि। एकबेर-

उत्सुकतापूर्ण दृष्टिसँ ओहि अपरिचित दिश ताकि ओ भैरव बाबूसँ गप्प करय लागल।

थोड़े काल धरि गाम घरक गप्प होइत रहल। पश्चात् ओहि अपरिचित सँ परिचय करबैत भैरव बाबू बजलाह--"हिनका त नहि चिन्हने हैबहुन्ह ? ई छथि हमर रामपुर बला सादूक छोट भाय।"

कमल दुनू हाथ जोड़ि अभिवादन कयलकन्हि आओर फेर भैरव बाबूसँ पुछलकन्हि—"आइए अयलाह अछि की ?"

"नहि काल्हिए अएलाह। परुकाँ सोल स्त्री गत भऽ गेलथिन्ह। कहैत छिऐन्ह जे अहाँक अवस्था अखन कोन ततेक भेल अछि — बिवाह कऽ लिअऽ। से सुनितहि नहि छथि। आब तोंही बुझबहुन्ह...।" भैरव बाबू कहय लगलथिन्ह।

ता' बीचहिमे कमल पूछि देलकन्हि—"ई कोनो अधलाह विचार त नहि छन्हि। धिया-पुता छन्हि की ने ?"

भैरव बाबू कहलथिन्ह—'ताही लऽ कऽ त कहैत छिऐन्ह। धिया-पुता अखन बड़ छोट-छोट छैन्हि। फेर ओकरो लालन-पालन केनिहार त केओ चाही।"

परन्तु कमल तकर चिन्ता नहि कयलक जे भैरव बाबूक आन्तरिक अभिप्राय की छन्हि। बाजल—"तइयो विवाह करब ठीक नहि हेतन्हि। अवस्थो पचाससँ कम नहि हेतन्हि ?"

ता' ओ अपरिचित चट दऽ कहलथिन्ह—"नहि, हमर अवस्था अखन पैंतिसमे अछि।"

"फेर भेलैक की ने। पैंतिस रहौ वा पैतालिस ! बिवाहक अवस्था बीति चुकल अछि। दोसर जखन भगवान सन्तान देने छथि त कथी लै विवाह करब? लोक सभ त अहिना जोर करत।"

अपरिचित व्यक्ति लजा गेलाह आओर कमल मुस्कुरा कऽ भैरव बाबू दिश देखय लागल।

परन्तु भैरव बाबू हँसैत कहलथिन्ह—'तोरा सभक, नवकाक विचारे जँ दुनिया चलय त चलतैक।"

फेर कमलकेँ कात लऽ जा कऽ नहु नहु बुझौलथिन्ह– 'हम विचार कयल अछि जे नलिनी–गरीब विधवाक कपार परसँ चिन्ताक पहाड़ उतरि जैतैक। हँ सुनह—एहि विवाह मे मसोम्मातकेँ एकोपाइ नहिं खर्च होमय देबन्हि। जे कहैत जेबहुन्ह से हिनकहि देमय पड़तन्हि ..ताहिमे हमरा सबसँ पड़ैताह से नहि हैतन्हि। दोसर ईहो सम्पन्न लोक छथि। मसोम्मातकेँ फेर एहन कथा नहि भेटतन्हि। तोहर ओहि आङनसँ बेशी अबरजात रहैत छह। कने एहि बिषयमे लार-चार करिअहक।"

कमलकेँ एहि तरहक बात सुनबाक आशा नहि छलैक। ओ एक बेर भैरव बाबू दिस देखलक आओर दोसर बेर ओहि अपरिचित दिश। फेर व्यंग्यसँ बाजल—"परन्तु ओ त विवाह नहि करताह।

"अरे ओ त ओहिना कहैत छथिन्ह।"—भैरव बाबू हँसत उत्तर देलथिन्ह।

कमलक मुख तामससँ विकृत भऽ उठल। बाजल—'नलिनी निर्धन कन्या अछि से त अवश्य, तैं की एहि तरहक विवाह उचित ? हम त अपन स्वस्ति नहि देबन्हि।"

आओर ओ उत्तरक बिनु प्रतीक्षा कैनहि ओतयसँ बिदा भऽ गेल। किन्तु हृदयमे जे अशान्ति उमड़ि अयलैक से जल्दी हटल नहि। पुस्तकालयमे मन नहि लगलैक। ओ ओतयसँ शीघ्रहि विदा भऽ गेल। बिचारलक जे नलिनीक प्रसन्न मुखाकृतिक सम्मुख निस्संदेह एहि घटनाकें बिसरि जत। परन्तु एतय निर्विकार भावसँ सूतलि एहि तरुणीकें देखि हठात् आँखिक सम्मुख ओहि अपरिचित व्यक्तिक चेहरा नाचि उठलैक। मन एकाएक ईर्ष्यासँ भरि गेलैक। जेना नलिनी ओकर होइ आओर केओ ओकरासँ छीनि रहल होइ।

नलिनी ओहिना मगन भेल पुस्तक पढ़ि रहल छलि। कोनो अंश विशेषकें पढ़ि ओ ततेक उत्तेजित भऽ उठलि जे पुस्तककें छाती पर राखि किछु क्षणक लेल अपन सुधि-बुधि बिसरि गेलि। पश्चात् जखन ओकर पल खुजल त लाजें काठ मारि देलक। ओ धरफरा कऽ आँचर सरिआबैत उठलि आओर किंकर्त्तव्य-विमूढ़ भेलि ठाढ़ि रहलि। कमलकें एहि घबराहटि पर हँसी लागि गेलैक आओर नलिनीक अधर पर सेहो लज्जा-मिश्रित

हास्य उतरि आयल। एहि मधुर हास्य-तरङ्गमे जेना कमलक सभ उदासीनता अनायास विलीन भऽ गेल हो।

आओर ओ हँसैत नलिनीसँ पुछलक—"कोन किताबमे एतेक डूबलि छलैंइ ?" फेर ओछाओन परसँ किताबकेँ अपना हाथमे लैत बाजल—"ओं ! त अहाँ परिणीता' * पढ़ैत रही। सामीकेँ एकरहि चिन्ता छन्हि, समाजक आनोआन व्यक्तिकेँ देखैत छी जे एकर चिन्ता होमय लगलैक अछि आओर आइ जानल जे आब अहाँके अपनहु एकर चिन्ता होमय लागल अछि।"

नलिनीक त ओएह हालति छलैक जेना केओ भीजल पर पानि छीटि रहलहो। तथापि साहस कय कऽ बाजलि "हँ, अहीं बुझैत छी जे एकरहि चिन्ता अछि।"

"बेस, हम नहि बुझैत छी। कहू जे किताब केहन लागल ?"

"बड़ बढ़िया।" नलिनी नहूसँ बाजलि।

"ललिताक चरित्र ?"

"बड़ दीब।"

"आओर शेखरक ?"

"ओकरो बड़ बढ़िया।"

"आओर बेचारा गिरीन ?"

नलिनीकेँ हँसी लागि गेलैक। "ओ त वास्तवमे 'बेचारा' छल। परन्तु ओकर चरित्र आदर्श छैक।"

---

* बङ्गला साहित्यक सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचन्द्रक एकटा कृति।

"से सब जे रहौ" कमल कने गम्भीर होइत बाजल। "एहि तरहक विवाह सम्भव नहि छैक।"

"सम्भव नहि छैक त असम्भवो नहि छैक।"

"से की ?"—कमल प्रश्न कयलक।

नलिनी बाजलि—"दूनू गोटामे बाल्यावस्थासँ परिचय छलैक। फेर ओ मैत्री, ओ सख्य प्रेमक रूपमे परिणत भऽ गेलैक त आश्चर्य कोन ?"

"परन्तु ललिता त ताहि सभसँ अनभिज्ञ छलि। ओ त शेखरक दुराग्रह....।" कमल कहलक।

"कथमपि नहि।"—नलिनी बाजलि, "ललिताक हृदयमे शेखरक प्रति प्रेम नहि छल अथवा ओहिसँ कोनो पैघ अभिलाषा नहि छल से कोना हेतैक ? ओ त ललिताक नारी संकोच छल जे ओहि भावकेँ हृदयमे नुकौने छल।"

कमलकेँ आश्चर्य भेलैक। ओकर इयह अनुमान छलैक जे नलिनीक ओ चंचलता तथा वाक्पटुता जे बाल्यावस्थामे ओकरा सौन्दर्यक श्रृंगार करैत छलै, अवस्थाक गरिमामे डूबि गेल हैतैक। परन्तु नलिनीक एहि कथनक तात्पर्य की ? आओर तत्काल इयह भाव ओकरा हृदयसँ प्रश्न बनि कऽ बहरा गेल—"एकर तात्पर्य ?"

परन्तु एकर तात्पर्य की से नलिनी कोना व्यक्त करौ ? यावत काल धरि ओ बजैत छलि जेना सभ किछु बिसरि गेल छलि। ओकरा ध्यान नहि छल जे कमलसँ बाजि रहल

अछि। ओहि कमलसँ जकरा संग...। फेर आँखि उठा कऽ ताकब ओकरा लेल कठिन भऽ गेलैक।

परन्तु ओकर तात्पर्य की से बड़ी काल धरि कमल सोचैत रहल। हठात ओकरा हृदयमे एक मधुर भावक उद्भावना भेल। ओ मधुरभाव जे चिरन्तन रूपसँ सभक हृदयमे वर्त्तमान रहैत अछि आओर अनुकूल परिस्थितिमे अपन आलोक विकीर्ण करैत अछि। ओ विमुग्ध दृष्टिसँ नलिनी पर दृष्टिपात कयलक। ओहि नलिनी दिश जकरा ओ अद्यपर्यन्त एक कोमल, अज्ञात यौवना, बालिका बुझि रहल छल। परन्तु ओहिमे एक अनुरागमय हृदय पलि रहल छल; एक दीपशिखा जरि रहल छल जकरा अधिक ज्योतिमान हैबाक लेल स्नेहक आकांक्षा छलक। ओहि हृदय लताकेँ जे अपन सभ सुषमा लय प्रस्फुटित भेल छल, एक सम्बलक प्रयोजन छल; एक आधारक कामना छल। आइ ओहि कोमल स्निग्ध हृदयमे सेहो 'परिणीता' बनबाक आग्रह छल। एहि निर्धन निरीह बालिकाक हृदयमे ओ उल्लास छल जकर आभास ओकर वाणी सहर्जहि दऽ चुकल छल।

ललिता सेहो एहिना एक दिन बालिका छलि। परन्तु शेखरक स्नेहपूर्ण आकर्षण ओकर यौवनक नव पुलिन पर अनुरागक हिलकोर उठा देलक।

आइ कमलकेँ इयह बुझि पड़लैक जेना नलिनी ललिता हो आओर ओ स्वयं शेखर हो। मधुर कल्पनासँ ओकर अंग-अंग पुलकित भऽ उठल।

आओर भाव जानबाक लेल कमल नलिनीक लग चल आयल। दुनू हाथ ओकरा कन्हा पर राखि देलक। फेर आँगुरसँ ओकर ठुड्डीकेँ स्पर्श करैत मुँहकेँ ऊपर उठौलक आओर कने जोरसँ शोर कयलक—"नलिनी ?"

नलिनी जेना अपनहि मधुर कल्पनामे डूबि गेल छलि। परन्तु कमलक स्नेह स्पर्शसँ ओकर आँखि स्वतः फुजि गेल। ओ अपलक, शून्य, नहि देखैत दृष्टिसँ कमलकेँ ताकलक। परन्तु पुनः लजा कय अपन मुँह कमलक वक्षःस्थलमे नुका लेलक।

आओर कमल सोचैत रहल जे की ई वैह नलिनी थीक ? नहि आजुक नलिनी बदललि छलि—एक अनुरागमयी, लजाधुर नलिनी। आजुक परिचय नव छल—एक दोसरे स्तर परक—कौतुकपूर्ण, आश्चर्यजनक।

आओर सैह सभ सोचैत कमल पुनः सम्बोधन कयलक—"नलिनी।"

परन्तु नलिनीकेँ जेना प्रश्नक अनुमान भऽ गेल हो आओर ओ लजा कय ओतयसँ भागि गेलि। आओर कमल मुग्ध बिस्मित भेल देखैत रहल।

९

कमलक ई एम० ए० क आखिरी वर्ष छल। परीक्षा हैबामे मात्र दू मास शेष रहि गेल छल। परन्तु इहो दू मास देखैत-देखैत बीति गेल। परीक्षा समाप्त भऽ गेल। उत्तम फलक प्रति कमलकेँ कनेको आशंका नहि रहल। ओ अत्यन्त प्रसन्न छल। ई संवाद नलिनीसँ सुनेबाक लेल ओ उत्कण्ठित भऽ रहल छल।

एही सोच-विचारमे कमल लागल छल कि उपेन्द्रक पदार्पण भेल। उपेन्द्र छल कमलक सहपाठी ओ अनन्य मित्र। परीक्षासँ पूर्वहि दुनू गोटे कतहु घूमय जैबाक विचार स्थिर कैने छलाह। आओर उपेन्द्र आबितहि तकर स्मरण दिऔलक।

कमलकेँ हठात् अपन विचारधारासँ तटस्थ होमय पड़ल आओर फेर दुनू मित्रक बीच वार्त्तालाप होमय लागल। कमल प्रश्न कैलक—"कतय चलबह ?"

परन्तु उपेन्द्रक लेल कतय बला प्रश्न नहि छल। ओकर त निश्चित स्थान छल आओर ओतहि कमलकेँ सेहो लऽ जैबाक छल। तथापि ओ एकरा व्यक्त नहि कैलक आओर अन्ठाय कऽ बाजल—"तोरा कहाँ केर विचार होइ छौ ?

कमल कहलक"—हमर इच्छा होइत अछि हिमालयक तुषार-धवल सुषमा देखबाक।" फेर किछु बुझैबाक स्वर मे बाजल·—"बुझइ जे एहि यात्रा मे समस्त उत्तराखंडक भ्रमण भऽ जैत। मन्दाकिनी ओ अलकनन्दाक सुरम्य तटीक संग हमरो सभक यात्रा चलत। जँ विचार हैत त बद्रीनारायणक पश्चात् हम सभ कैलासक सुभग शृङ्गक अवलोकन कऽ आयब। मानसरोवरसँ राजहंसक कलकूजन सुनि आयब।

कमलक एहि चमत्कारपूर्ण व्याख्यानक अनन्तर उपेन्द्र बाजल—"तोहरो वर्णन एतना सजीव मालूम पड़तौं कि हमें ओही लोकमे विचरण करय लागला। तोहरो त सभ संस्कार कविकेँ मालूम पड़ै छौं। ओइ प्रकृतिक गोदीमे कोनो करुण दृश्यके देखीकेँ कहुँ तोरो कंठसँ कविता फूटी नइ पड़हौं।"

"आव तों बनावय लगलाह।"

"नइ नइ हमें सच्चे कहैइ छिओं। लेकिन खाली एक बात के डर होइ छैं"—उपेन्द्र मुस्कुराइत बाजल। "तोहें प्रकृति के

प्रेमी छऽ। कहुँ मानसरोवर के किनारे धूनी रमा देलहै तवे त भेलौ।"

परन्तु कमल चुप नहि रहि गेल। हँसैत उत्तर देलक—"तैं तोरा दिशसँ शंकाहीन नहि भेल जा सकैछ।"

"से की?"—उपेन्द्र उत्सुकतासँ पुछलक।

"इएह जे ओतुका सभ वस्तु आकर्षक होइत छैक। कतहु ओहि साँप जेकाँ जकरा चाननक गाछ भेंटि जाइ, तोँ घर आँगन बिसरि ओतहि मस्त भऽ जाह तखन?"

दुनूक हास्य सँ वातावरण गुञ्जायमान भऽ उठल।

कने कालक निस्तब्धताक पश्चात उपेन्द्र प्रश्न कैलक—"फेरू की निश्चय भेलै?"

"हम त अपन कहिए देलिअह।"—कमल कटाक्षसँ तकैत उत्तर देलक।

उपेन्द्र बाजल—"तोहे ते प्राकृतिक सौन्दर्य देखय लै चाहै छऽ। एहि बेर चलऽ। दूरौ के सौन्दर्य पर तै एतनाए आकृष्ट होइ छऽ, त एहू बेर छोटानागपुर चलो के देखऽ जे प्रकृति केना आपनो अतुलनीय सौन्दर्य बिखेरी देने छै। छोटऽ छोटऽ पहाड़ी, कल-कल छल-छल करतै नदी, स्थान-स्थान परमे झरना के संगीतमय स्वर, रमणीय प्राकृतिक उपवन, वास्तव मे कहै छिओं कि तोहें बिभोर होइ जभए। सिन्दूर जेकां धरती...।"

"बस, बस, भऽ गेलौ। अखन त तोरा सीमन्त आओर सिन्दूरे सुझतह। प्राकृतिक सौन्दर्यक एतेक वर्णन कयलह

परन्तु ई नहि कहलह जे तोहर सीमन्तनी कतय छथुन्ह।"—कमल बाजल।

उपेन्द्र पुलकित होइत कहलक—"तहीसें त कहै छिऔं जे चलहु। हुनखाउ सें भेंट होय जैथों। तोरहो लै कोशिश-पैरवी करी देबहौं।

कमल किछु गम्भीर भऽ गेल। नलिनीक सघन केस-राशिक बीचक विद्युत रेखा सदृश सीमन्त ओकरा आँखिक सम्मुख उद्भासित भऽ उठल। किछु दिनक पश्चात् ओ सिन्दूरसँ जगमगा उठत जेना केओ तिमिराच्छन्न रात्रि मे वीक टेमी लेसि देत। आन्तरिक प्रसन्नता अधर पर हास्यक रूप लय प्रकट भेल। इच्छा भेलैजे उपेन्द्रसँ कथाकें सुनाबय। परन्तु एकाएक लजा गेल, एहि कथाक रहस्यमयता पर, ओकर अप्रत्यासित उद्घाटन पर।

तावत उपेन्द्र जिज्ञासा कैलक—"फेरू कहिया चलमै ?"

कमल तत्काल उत्तर नहि देलक। अखन उल्लासक जें दीप-शिखा ओकर कोमल हृदयमे जरि रहल छल ताहिमे अधिकसँ अधिक स्नेहक प्रयोजन छल। परन्तु एकाएक ओकरा अपन प्रेयसीक लेल उपहार लऽ जैबाक बात मन पड़ि गेल—नीक 'रिजल्ट' क उपहार। परन्तु रिजल्ट बहरेबामे त अखन दू-तीन मासक विलम्ब छल। ताबत एम्हरहि समय बिताओल जा सकै छल। प्रतीक्षाक क्षण आओरो मधुर होइत छैक आओर ओ उपेन्द्रसँ कहलक वेश काल्हिए चलह।

कोन प्रकार सँ कमल ओ उपेन्द्रक यात्रा निर्विघ्न समाप्त भेल ओ एक अलग वर्णन थीक। उपेन्द्रक श्वसुर रमेश बाबू छोटानागपुरक एक शहर चाईबासा मे सरकारी पद पर छलथिन्ह। किछुए दिनक अनन्तर कमल रमेश बाबूक परिवारमे घुलि-मिलि गेल। नदी किनारक एक छोट-छीन बंगला, जाहि ठामसँ रात्रिक निस्तब्धतामे पाथर परसँ बहैत जलक कलकल ध्वनि स्पष्ट सुनि पड़ैत छल। ओहि पार सुदूर पहाड़ी ओ ओकरा अञ्चलमे पसरल वनक हरीतिमा अत्यन्त मनोरम छल। प्रकृतिक ई रमणीयता कमलकेँ आकृष्ट कैने बिनु नहि रहल।

परन्तु एहिसँ अधिक आकर्षित कैलक रमेशबाबू ओ हुनका परिवारक अन्यान्य व्यक्तिक स्नेह। कमलकेँ कनियो नहि बुझि पड़ल जे ओ अपन लोकसँ दूर अछि। आत्मीयताक सूत्र प्रबल भेने लोक एक दोसराक अत्यन्त निकट आबि जाइत अछि। एही किछु दिनक सम्पर्कमे जेना ओ ओहि परिवारक अभिन्न सदस्य भऽ गेल हो। माय-बापक स्नेहसँ वंचित कमलके ई अनुभव करबामे कनियो बिलम्ब नहि भेलैक जे माय-बापक स्नेह एहने कोमल ओ मधुर होइत छैक। गृहपत्नीक निष्कलुष आवेश त चिरन्तन कालक लेल ओकरा हृदयमे अपन घर बना लेलक।

रमेश बाबूक परिवारमे हुनका दूनू गोटाकेँ छोड़ि छल हुनक दू कन्या आओर ताहिसँ छोट एक नेना। ज्येष्ठ कन्या

कुसुम उपेन्द्रक पत्नी छलथिन्ह। पहिने त ओ सभ कमलसँ संकोच करैत छलीह परन्तु उपेन्द्रक चतुरतासँ हुनका कमलक सोझां आबय पड़लन्हि। शनै शनै लज्जाक ई व्यवधान क्षीण होमय लागल आओर कृष्ण पक्षक चन्द्रमा जकाँ पूर्णतः तिरोहित भऽ गेल। परन्तु शेफाली बहुत दिन धरि लजाइत रहलि। बहिनिक संग-संग ओहो कमल सोझाँ अबैत त छलि परन्तु सौन्दर्यक साकार मूर्ति भेल बैसल रहैत छलि। उपेन्द्रक सारि हैबाक कारण कमल कखनहु कऽ ओकरासँ सरस परिहास कऽ लेत छल आओर ओ लजा कऽ भागि जाइत छलि।

एक दिन उपेन्द्र आओर कुसुम कतहु घुमय गेल छलाह आओर छोट भाय सेहो स्कूलसँ नहि आयल छल। कमल कोनो पुस्तक हाथमे लऽ पढ़बामे तल्लीन छल। तावतमे टेबुलपर किछु रखबाक ध्वनि भेल आओर कमल तकलक त शेफाली लजाइत टोनमे कहलक—"अहींक जलखइ।"

कमल किछु काल धरि ओहिना देखैत रहल। पश्चात् उठि कऽ बैसैत बाजल—"अच्छा एते दिन पर आइ त अहाँ हमरासँ बजलहुँ।"

शेफाली लजा कय जाय लागलि। परन्तु कमलक आग्रहसँ घूमि आबय पड़लैक। ओ लगक कुर्सीपर बैसि गेलि!

थोड़े काल धरि कोनो बात नहि भेल। कमल चाह पिबैत पुछलक—"ओ सभ घूमि कऽ नहि अयलाह अछि की?"

"अखनहि औताह।"—शेफाली व्यंगसँ मुस्कुराइत बाजलि।

"से किऐक।"—अभिप्राय बुझियो कऽ कमल प्रश्न कयलक।
आओर शेफाली लजाकय निरुत्तर रहि गेलि

परन्तु एक बात धरि भेल। आबसँ कमल, उपेन्द्र, ओ कुसुमक बीच गप्प-सप्पमे शेफाली सेहो उत्साहपूर्ण सहयोग प्रदान करय लागलि। शेफालीक अवस्था इएह चौदह-पन्द्रह सालक छल। एहि साल मैट्रिकुलेशनक परीक्षा देने छलि। ओकर बात बातसँ ओकर प्रखर प्रतिभाक परिचय भेटैत छल। ओहि दिन त एहि परमकान्तिमयीक अपूर्व संस्कार देखि कमलकेँ विमुग्ध रहि जाय पड़ल।

कमल, उपेन्द्र ओ कुसुमक बीच पहिनहिसँ गप्प भऽ रहल छल। विषय छल छोटानागपुरक सामाजिक स्थिति। कमलक इयह कहब छल जे एतुका जाति अखन बड़ पछुआयल अछि। अखन एकरा मे शिक्षाक कमी छैक, फलस्वरूप राजनीतिक चेतनाक नितान्त अभाव। गप्पक क्रम चलिए रहल छल कि शेफालीक पदार्पण भेल। गप्पक सूत्र पकड़बामे ओकरा कष्ट नहि भेलैक। आओर कमलसँ प्रश्न कइये देलक—"पछुआयल सँ अहाँक तात्पर्य की अछि?"

कमल मुस्कराइत बाजल—"देखैत नहि छिऐक जे एतुका लोक रहन-सहनमे कतेक पछुआयल अछि। एकरा सभकेँ देखि कऽ समाजक आदिम युगक कल्पना सहलतासँ कयल जा सकैछ। ओहिना असभ्य. . .।"

ता' बात कटैत शेफाली बाजलि — "जँ आधुनिक सभ्यताकेँ सभ्यताक मापदंड मानी त एकरा सभक असभ्य रहब बड़ नीक छैक।"

कमल उत्सुकतासँ पुछलक—"अहाँक अभिप्राय ?"

शेफाली कने संकुचित होइत बाजलि—"आधुनिक सभ्यताक बरदान हमरा सबकेँ की भेटल अछि—चोरी, बैमानी पारस्परिक कटुता ! ताहि दृष्टिसँ हम एकरहि सभकेँ सभ्य बुझैत छिऐक। एतय अहाँ चोरीक नाम नहि सुनबैक। बदमाश नहि भेटत। एकरा लोकनिक निश्छलता निस्सन्देह अहाँक मन मोहि लेत। परन्तु आब ई अधिक दिन धरि रहतैक नहि। सभ्य लोकनिक संसर्गसँ आब इहो लोकनि ओ पाठ पढ़ि रहल अछि जकरा अहाँ सभ सभ्यताक नाम दैत छिऐक।"

कमल एहि कथनक कोनो उत्तर नहि देलक। सुन्दरीक एहि भावप्रवण विचारमे कोनों तर्क उपस्थित करब उचित नहि बुझलक। ओ विस्मयसँ शेफालीकेँ देखि रहल छल। पश्चात् मुस्कुराइत कहलक—"अहाँकेँ देखैत छी जे ई स्थान बड़ पसिन्न पड़ि रहल अछि।"

परन्तु प्रशंसाक एहि वाक्यसँ शेफालीक मुख आरक्त भऽ गेल। भेलैक जे कमल विनोदमे की कहि रहल छथि। परन्तु कमलकेँ ई अनुभव करवामे विलम्ब नहि भेल जे शेफालीमे रूपक संग-संग परिपक्व बुद्धि सेहो अछि।

एहि प्रकारे जेना जेना कमल ओहि कमल परिवारक सन्निकट आएल शेफाली मिथ्या संकोचकेँ तिलांजलि दऽ देलन्हि। ओकरा लेल आब कमल छलाह ओही घरक एक पेघ समाङ—ओकर बहिनोइक अभिन्न मित्र। शेफालीकेँ साहित्यक दिश विशेष रुचि छल। कमल संग जखन-तखन साहित्यक चर्चा होइत छल आओर सरस हास-परिहाससँ ओकर मुख मंडल प्रभातक प्रथम किरण सन लाल भऽ जाइत छल।

आओर ओहि दिनक घटनाकेँ त ओ कहिओ नहि बिसरि सकल। जीवनमे नित्य प्रति कोनो ने कोनो घटना घटित होइतहि छैक। परन्तु ओहिमे किछु त ततेक मधुर होइत अछि, ततेक आकर्षक होइत अछि जे हृदयमे ओकरा लेल स्थायी स्थान बनि जाइत छैक। फुलवारीक एक कातमे बैसि शेफाली पंचमीक चन्द्रमाक शोभा निहारि रहल छलि। ओ ओहि रूप-सुधापानमे बिभोर छलि। कमल दबले पैर आएल आओर ओकरा पाछाँ जा जोरसँ बाजल—"साँप !"

साँपक नाम सुनि तहि शेफाली चेहा कऽ उठलि आओर पाछुए मुहक पड़ायलि। खसबा-खसबा पर छलिए की कमल दुनू डेन धऽ कऽ रोकि लेलक। तइयो भय दूर नहि भेल छल। कमलक मुँह दिश तकैत बाजलि—"कहाँ ?"

कमल ओकर लटकल केशक जुट्टीकेँ हाथमे लऽ कऽ बाजल—"हे इएह !"

Scanned by CamScanner

शेफालीकेँ आब जानमे जान आयल--"अहूँ बेस छी। हमरा तँ आतंकेँ जान जाय लागल।" आओर अभिरोषपूर्ण दृष्टिसँ कमल दिश देखलक।

परन्तु कमल निर्विकार भावसँ बाजल—"हमरा त अपनहि डर भऽ गेल छल। की ज नथ गेलिऐक जे अहाँक चोटी थीक।"

कमलक एहि सरलता पर शेफाली मुस्कुरा देलक। ओकरा आँखिसँ जेना प्रसन्नताक किरण फूटि पड़ल।

कमल बाजल—"साहित्य मे वेणीक उपमा साँपेसँ देल जाइत छैक। ओकरा काटने विष चढ़ैत छैक आओर एकरा देखिये कऽ लोकक सुधि बुधि हेराय जाइत छैक। हमरा जँ धोखो भेल त फूसि नहि। ईहो त कारी नागिने भेल।"

तावत शेफालीक मुँहसँ बहरागेल—"देखब कतहु अहाँकेँ ने काटि लिए।"

कमल प्रमुदित होइत कहलक—"हम कोनो इसरगत त नहिये बन्हने छी। काटत त वूझब जे ओकर स्वाभाविके गुण छैक।"

"परन्तु साँप को अनेरे काटने फिरैत छैक ?"

"ताही ठाम ओकरा एकरामे अन्तर छैक। ई कारी नागिन नहि जानि कते बेकसूरोकेँ काटि लैत छैक।

शेफाली निरुत्तर रहि गेलि। ओकर लजायल मुखमंडल पर दोसरे आभा व्याप्त भऽ गेल जे स्निग्ध ज्योत्सनामे कमलकेँ बड़ प्रियगर लगलैक।

शेफाली एक बिना कोरक पियर जार्जेटक साड़ी पहिरने छलि आओर ओहि रंगक ब्लाउज। शरीरक स्वर्णकान्तिक संग-संग साड़ीक पीताम्बरी मिलि कऽ एकाकार भऽ रहल छल। शरीरपर दोसर कोनो आभरण-अलंकार नहि छल। एहि परिधानमे शेफाली एहन सुन्दर लागि रहल छलि जेना कोनो स्वर्ण प्रतिमा हो। ओकर एक दिश घुमलापर कमल लक्ष्य कएलक जे ओकर जुट्टीमे एकटा फूल खोंसल अछि।

शेफालीकेँ फूलसँ अत्यधिक प्रेम छल। फूलक प्रति ओकर ई एकान्त रुचि कमलसँ अप्रकट नहि रहल। आओर ओ जखन ओकर एहि सुरुचिक प्रशंसा कयलक त शेफाली लजा गेलि। तथापि विहुँसैत बाजलि—"एतुका लोकक देखादेखी हमहूँ खोंसि लेल अछि।

"हँ एतय लोककेँ फूलसँ बड़ प्रेम देखै त छिऐक।" कमल ओकर समर्थन करैत बाजल।

शेफालीकेँ नहि जानि एहि ठामक निवासीक प्रति कतेक स्नेह-भाव छलैक। कहलक—"एहिठाम कोनो नवयुवतीकेँ नहि देखबैक जे फूलसँ अपन शृंगार नहि कैने हो। प्राचीन भारतीय साहित्यमे जे वनकन्याक वर्णन पढ़ैत छी से सभ हमरा एकरहि सभमे भेटैत अछि। वनफूले जेना निश्छल

आओर पहाड़ी झरना सदृश निर्भीक।" आओर ओ अपन भावक समर्थनक लेल कमल दिश तकलक।

परन्तु कमल निर्निमेष दृष्टिसँ ओकरा केशमे खोंसल फूलकेँ देखि रहल छल। ओकर दुनू आँखि संकोचसँ स्वतः नीचा खसि पड़लैक। कमल केर इच्छा भेलैक जे शेफालीक रूपक प्रशंसामे किछु बाजय परन्तु पुनः ई सोचि जे प्रशंसाक एहि किरणसँ एहि रूपसीक हृदयानुराग कतहु प्रथम स्पर्शिता लाजवन्ती जेकाँ सिहरि ने जाय ओ चुप रहि गेल।

तावत उपेन्द्र सेहो आबि गेल। दुनूकेँ एना चुप देखि प्रश्न कएलक—"तोरा दुनू इहाँ की करै छह।"

"चन्द्रमाक शोभा देखि रहल छी।"—कमल उत्तर देलक।

"आकाश के चन्द्रमा की पृथ्वी परके?" उपेन्द्र कटाक्षसँ पुछलक।

"पृथ्वी परक चन्द्रमासँ आकाशक चन्द्रमाक मिलान करैत छिऐक।"

ता' शेफाली शैतानीसँ मुस्कुराइत पूछि देलक—"कोन निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ?"

कमलकेँ एहि तरहक प्रश्न सुनबाक आशा नहि छल। परन्तु जखन सुन्दरी एहन प्रस्ताव कइए देलथिन्ह तऽ फेर हुनकर सौन्दर्यक वर्णन करब आवश्यक भऽ गेल। फेर कने गम्भीर होइत बाजल जेना बहुत सोचला उत्तर ई विचार स्थिर कैने

हो—"हमरा त पृथ्वीए परक चन्द्रमा नीक लगैत अछि। एकर सम्मुख त आकाशक चन्द्रमा तुच्छ अछि। आओर वस्तुक कथा कोन, ओहि चन्द्रमाक जे विशेषता छैक से हमरा सभटा एहि मे भेटि जाइत अछि—

चाँद सार लय मुख घटना करु
लोचन चकित चकोरे।
अमिय धोए आँचर धनि पोंछल
दह दिह भेल उजोरे।।

परन्तु शेफालीक ध्यान चल गेल छल आकाशक चन्द्रमा पर जे किछुए कालमे पहाड़ीक ओहि पार नुकेबा लेल उद्यत छल।

आओर कमलक ध्यान छल पृथ्वी परक चन्द्रमापर। कमल एकटकसँ शेफालीकेँ देखैत रहल। वयः संधिक देहरि पर ठाढ़ि एहि नवतुवती दिशा ओ अधिकाधिक आकर्षित होइत गेल, जेना नलिनीक छवि पर शेफालीक अङ्कित भऽ रहल हो। कमल एहि परिवर्त्तनक कोनो कारण नहि बुझि सकल। ओ खाली सोचैत रहल। मनमे नाना प्रकारक भाव उठैत गेलैक आओर कमल जानि बुझि कऽ अपनाकेँ ओहि भावधारा मे भसिआइ लेल छोड़ि देलक।

शनैः शनैः आकाशक ज्योति पूर्ण चन्द्र पहाड़ीक पाछाँ अढ़ भऽ गेल आओर वातावरणमे एक हल्लुक अन्हार पसरि

गेल। पुनः रात्रिक कारी चादरि पर तरेगनक मोती जगमगाय लागल जेना निशा नायिकाक मुक्त कुन्तलमे केओ सिङरहारक फूल सजा रहल हो।

एहि मौनसँ शेफाली किछु चंचल भऽ उठलि। व्यग्रता पूर्ण शब्द मे बाजलि—"आब चलैत चलू। भोजन तैयार भऽ गेल हैतैक।" आओर ठाँव-बाट करबाक लेल झटकि क आगू चलि गेलि।

उपेन्द्र कमलक पीठपर हाथ राखि ओकर ध्यान भंग करैत कहलक "कहिऔ कविजी! तहीसँ कहै छिहौं कि तोरा आब सजीव कविता चाहिओ। एना कल्पना काननमे कब तक बौआइतें रहबें।

कमल किछु चंचल होइत उत्तर देलक—"तों गलत सोचलह उपेन्द्र। हम शेफालीक विषयमे नहि सोचि रहल छलहुँ।"

कमलक एहि घबराहटिपर उपेन्द्र हँसय लागल—"हमें त ओ नइ कहलिहौ। तोंहें व्यर्थ सफाई दै लागलँहे।"

"लेकिन तोहर इशारा त ओही दिश छल।"

"चोर कए खढ़ो खरखरेलासँ डर होइत छै।"

दुनूक मधुर हास्यसँ रात्रिक ओ निस्तब्धता प्रतिध्वनित भऽ उठल।

दोसर दिन प्रातःकाल कमलक निन्न किछु विलम्बसँ टूटल। बाहर असोरा पर आएल त देखलक जे फुलवारीमे शेफाली फूल तोड़ि रहल छलि। सद्यःस्नान कयल ओकर वेष कोनो मुनि-कन्या

सदृश प्रतीत भऽ रहल छल। एक बेर ओ कटाक्षसँ कमल दिश ताकि पुनःफूल लोढ़य लागलि। एकाएक कमलकेँ रवीन्द्र-नाथक पंक्ति स्मरण भऽ आयल। ओ गुनगुना उठल :

राते प्रेयसीर रूप धरि
तुमि एसो छो प्राणेश्वरी
प्राते कखन देवीर वेशे
तुमि सुमुखे उदिले हेसे
आमि संभ्रम भेरे रेयेछि दाँड़ाये
दूरे अवनत शिरे।
आजि निर्मल वाय शान्त उषाय
निर्जन नदी तीरे +

+ रातिक समय अहाँ प्रेयसीक रूप धारण कए आएल रही, प्राणेश्वरी ! प्रातःकालमे कखन हँसैत-हँसैत देवीक वेशमे हमरा सम्मुख आबि उपस्थित भेलहुँ ? हम संभ्रम अवस्थामे माथ झुकौने ठाढ़ छी, आइ एहि निर्मल वायु में, शान्त उषाकालमे सरिता तट पर।

१०

कातिक माससँ अन्हरौखे पोखरिक घाट पर जीवन जागि जाइत अछि। स्नानर्थी महिलावर्गक द्वारा सरोवरक शान्त जलपर तरंग उठय लगैत अछि। पानिमे पैसबा कालक जलक कल-कल ध्वनिसँ लग-पासक नीरवता भंग भऽ जाइत अछि। प्रातःस्नानक ई क्रम कातिकसँ लऽ कऽ माघ धरि चलैत अछि। गामक महिलागण ओतय स्नानक लेल अबैत छथि आओर फरीछ हेबासँ पूर्वहि चलि जाइत छथि।

ई पोखरि गामक एक भागमे पड़ैत अछि। गामक दऽ कऽ जे बड़की सड़क जाइत अछि ताहिसँ गामक दू भागमे विभाजित अछि। एक दिश चौधरी-परिवारक वास छन्हि। चौधरी लोकनि एहि गामक डीही छथि। धन सम्पत्ति सतति कालसँ

हुनका लोकनिकें रहलन्हि। गामक दोसर कात आमक विशाल गाछी अछि। चैत-बैसाख सँ जेठ–आषाढ़ धरि एहि गाछी सभमे नवीन जीवन रहैत अछि। परन्तु आइ-कालिह ओ एकान्त ओ जनशून्य रहैत अछि। खाली भिंगुरक भनकार ओहि महँक नीरवताकें भंग करैत अछि। एहि गाछीक दछिनबारी भागमे ई पोखरि अछि। पोखरि जैबामे लोककें गाछो पार नहि करए पड़ैत छैक। सोभे सड़कसँ गेने पोखरि भेटि जाइत छैक।

गाममे आओरो पोखरि अछि परन्तु नारी समाजमे एकरहि अधिक महत्व अछि। जतेक पावनि–तिहार होइत अछि से एतहि। देवी देवताक लेल जे अछिंजलक प्रयोजन होइत अछि से एतहिसँ मंगाओल जाइत अछि। महादेव बनाबय लेल माँटि लोक एकरहि भीर सँ लऽ जाइत अछि। एकर कारण की थिकैक से त नहि जानि परन्तु एतेक धरि निस्संदेह अछि जे ई पोखरि अत्यन्त प्राचीन अछि। मिथिलाक एकटा महान प्रतापी राजा एकरा खुनौने छलाह। ताहि समयमे पोखरि-इनार खुनायब बड़ प्रतिष्ठाक विषय बुझल जाइत छलैक। आब त ई परम्परा उठिये जेना गेल अछि। कोनो-कोनो गाममे एहन धर्मात्मा भेटताह जे अपन धनक उपयोग एहन सार्वजनिक कार्यमे करैत छथि। परन्तु एहि पोखरिक विशालताक सम्मुख आइ कालिहक पोखरि बड़ तुच्छ बुझि पड़ैत अछि। एहि पोखरिक विशालता त एहीसँ बुझि सकैत छी जे धियापुतामे

ई जनश्रुति छैक जे ई एक दैत्यक खुनल छैक। वास्तवमे एहन विशाल पोखरि मनुष्य कोना खुनि सकैत अछि। एहि कथनक साक्षी त ईहो अछि जे देशमे कतेक बेर अकाल ओ रौदी भेल परन्तु एकर जलक अक्षय भंडार कहियो निघटल नहि। ओ चिरकालसँ एही तरहें विशाल जनसमुदायके' अपन स्वच्छ ओ स्वादिष्ट जलसँ परितृप्त कय रहल अछि। ग्रामवासी एहि जलाशयकेँ गौरवक वस्तु बुझैत छथि। हुनका लेल इयह गंगा अछि आओर वास्तवमे ओ लोकनि एहि जलकेँ गंगाजल सदृश आदर करैत छथि। पोखरिक घाटसँ कने हटि कऽ महादेवक मंदिर अछि। आओर सैह कारण अछि जे गामक धर्मपरायण महिलागण प्रातःस्नानक निमित्त एतहि अबैत छथि।

पोखरिक पछवारी कातमे गामक ठाकुर परिवारक निवास अछि। ई परिवार करीव दस घर अछि। ठाकुर लोकनि एतुका भगिनमान छथि। हिनका वंशक केओ लक्ष्मीनाथ ठाकुर एतय विवाह कैने छलाह। लक्ष्मीनाथ ठाकुर उत्तरभरक नीक कुल-शीलक छलाह। चौधरी लोकिनक जाति दब रहलासँ कोनो खगेश्वर चौधरी हिनका अपन जमाय बना कऽ अनने छलथिन्ह। एहि विबाहमे लक्ष्मीनाथ ठाकुरकेँ पाँच सौ टाका ओ पचास बीघा ब्रह्‌-मोत्तर भेटल छलन्हि। आब लक्ष्मीनाथ ठाकुरक कतेक पुश्त बीति रहल छन्हि आओर ओहि-

बीजि पुरुषक परिवार वृद्धि कऽ गामक जनसंख्याकँ चतुर्थांश भऽ गेल छल ।

प्रातःकालमे दुनू टोलक लोकसँ घाट भरि जाइत अछि । स्नानार्थी मे विशेषतः प्रौढ़ा ओ विधवा रहैत छथि जनिक शेष जीवनक प्रधान कर्त्तव्य पुण्य संचय मात्र रहि जाइत छन्हि । छठि आदि अवसर पर ई पोखरि स्त्रीगणक सम्मिलनमे बड़ कार्य करैत अछि । गामक पुतोह सभ जनिका दिनमे एकठाम एकत्र हैबाक कम्मे अवसर भेटैत छन्हि, एकरा महान सुयोग बुझैत छथि । फेर त एतय नव-नव परिचय होइत अछि—आलाप-मिलाप होइत अछि ।

परन्तु कोनो वस्तुमे खाली गुण नहि रहैत छैक । गुणक संग-संग अवगुणो रहब स्वाभाविक छैक । ई स्वाभाविकता उठि गेने ओ वस्तु सांसारिक नहि रहि जाइत अछि । फेर ओकरा नैसर्गिक कहियौ अथवा जे किछु । कहबाक तात्पर्य जे पोखरिक वातावरण सभ दिन ओहिना स्निग्ध नहि रहैत छल । कहियो काल प्रकृतिक ई शान्त अंचल रणक्षेत्र मे परिवर्त्तित भऽ जाइत छल । कहियोक कोनो अज्ञात झगड़ाक पूर्वाशयक लेल इएह स्थल चुनल जाइत छल । परन्तु एहन-एहन झगड़ा एतब शान्त हैबाक बदला आओर प्रज्वलित भऽ उठैत छल आओर ओकर लपटि घाट धरि सीमित नहि रहि गाम घर धरि पहुँचि जाइत छल । एकर अतिरिक्त ककरो चरित्रक प्रति सन्देह,

ककरो सौन्दर्यक प्रति ईर्ष्या आदि सामाजिक आलोचनाक त ई प्रधान केन्द्रस्थल छल।

ओहि दिन किछु महिला लोकनि स्नानक निमित्त आयल छलीह। किछु गोटे जलमे प्रवेश कए चुकल छलीह आ'किछु गोटे ऊपर सीढ़ी पर बैसि दातमनि करैत छलीह। एहिमे एकटा छलीह सीतादाइ ओ दोसर तिरपितक माय। सीतादाइ गामक बेटी छथि। जहियासँ बाल विधवा भेलीह तहियासँ नैहरेमे रहैत छथि। साले-साल खोरिश मे अन्न-वस्त्र, सासुरसँ दिऔर लोकनि पठा दैत छथिन्ह। अवस्था आब पचासक करीब हैतन्हि। धर्म कार्य दिश वेशी प्रवृति छन्हि। सभ साल कार्त्तिकमे ब्राह्मण भोजन करबैत छथि। परुकाँ कातिकक जाग कएने छलीह जाहिमे सौंसे गामकेँ सोहारी मधुर खोऔने छलथिन्ह। स्त्रीगणक मध्य धर्मक जे चर्चा चलैत छैक ताहिमे हुनकर नाम स्वतः चलि अबैत छन्हि। बजबा-भुकबाक गुण सेहो भगवान खूब देने छथिन्ह आओर महिला मंडलीमे ओ विशेष व्यापक बुझल जाइत छथि। सभसँ भारी विशेषता जे ओ जखन कोनो विषय मे बाजय लगैत छथि तँ दोसरक बाजब असम्भव भऽ जाइत छैक। एकर किछु श्रेय त हिनक वाक्पटुताकेँ देल जा सकैछ आओर किछु हिनकर गुणविशेषकेँ जाहि भयसँ लोक हुनका कथनक समर्थने करैत अछि विरोधक बाते कोन।

Scanned by CamScanner

पदुमसुन्नरि जखन प्रातःस्नानक लेल अएलीह त दूरेसँ सुनलन्हि जे सीतादाइ हुनके विषयमे टीका-टिप्पणी कऽ रहल छथिन्ह। पदुमसुन्नरिक चरण स्वतः शिथिल भऽ गेलन्हि। ओ आगू बढ़ि नहि सकलीह। सीतादाइ, तिरपितक मायसँ बजलीह—"जेहने माय तेहने बेटी। हम त एक दिन ओहि छौंड़िकेँ देखल जे मकुना माधव जकां बींच बाटपर हर्षनाथक नातिसँ हँसि-हँसि बतिआइत छल। हमरो लाज कथी लै हैतैक।"

सीतादाइ आओर बहुत किछु बजैत गेलीह। पदुमसुन्नरिकेँ आशा नहि छलन्हि जे एक कुमारि कन्याक विषयमे लोक एतेक कलंक जोड़ि सकैत अछि। जखन हुनका लेल आओर किछु सुनब असह्य भऽ गेलन्हि त ओ अस्थिर भऽ उठलीह।

एकाएक पदुमसुन्नरिकेँ अबैत देखि सीतादाइ कहलथिन्ह—"आउ ए पदुमसुन्नरि! अहींक बाट तकैत रही। काल्हिएसँ विचारैत रही जे ओहि टोल दिश जाएब से काज धन्धासँ छुट्टिए नहि भेल।"

पदुमसुन्नरिकेँ एहि बात पर घोर आश्चर्य भेलन्हि। लोक कतेक जल्दी बदलि जाइत अछि! तथापि प्रकट रूपें कहल थिन्ह—"हँ किएक अओतीह। गरीबक खोज पुछारी के करैत छैक।"

"से किऐ कहैत छी ऐ! अहाँ की कोनो दोसर लोक छी। अहूँ त हमरे कुल-खूटक छी। सोचल जे भोरे त पोखरिपर भेंट भइए जैत।"

पदुमसुन्नरि त एहिसँ घबड़ा गेलीह। एकाएक हिनका स्वरमे सहानुभूति कतयसँ आबि गेल, ई ममताक स्रोत कतयसँ उमड़ि पड़ल। ई सभ त हुनका स्वभावक प्रतिकूल छल। पदुमसुन्नरि विस्फारित नेत्रसँ हुनकर मुँह ताकय लगलीह।

सीतादाइ पुछलथिन्ह—"की ऐ—पदुमसुन्नरि! कन्यादान करबाक बिचार नहि अछि की। पहिने दस बर्षमे बिबाह-दान भऽ जाइत छलैक। आइ त यावत ठोंठसँ नहि ठेकैत छैक तावत कोनो फिकिरे नहि होइत छैक।

पदुमसुन्नरि विनम्र स्वरमे उत्तर देलथिन्ह—"त की करिऐक ऐ दाइ! यावत नीक घर-वर नहि भेटतैक तावत कोना कतहुँ कऽ फेकि दियौक।"

आन दिन पदुमसुन्नरिक एहि उत्तर पर सीतादाइकेँ खौंत फूकि देने रहितैन्हि। परन्तु आइ ओ अभिरोष करैत कहल-थिन्ह—"से की कहैत छिऐक ऐ! एकटा अहींक बेटी, बेटी अछि। आओर लोकके ककरो बेटी छैक की नहि। एते लोक बेटीक बिवाहदान कैलक अछि से की फेकिए देलकै अछि? कोन अहाँ दस हजार गनब जे एते गति करैत छी। केहेन केहेन दुलारू धियाकेँ देखलिऐन्ह अछि।"

पदुमसुन्नरि एकर की उत्तर दितथिन्ह। बजलीह—"से त ठीके। हम व.तऽसँ रुपैया गनबैक। तइयो माय भऽ कऽ ओना कोना फेकि दिऐक।"

"फेर त अहाँ बेह बजलहु"—सीता दाइ डँटैत बजलीह—"फेकऽ के कहैत अछि। तेँ सभ दिन बेटीकेँ अपनहि लग रखने रहि जैब सेहो त नहि हैत। बेटीक तऽ जन्मे ताहि लेल होइत छैक।"

पदुमसुन्नरि मूड़ी डोला हुनकर कथनक समर्थन कएलन्हि।

सीतादाइ फेर बजलीह—"अहाँ सभ कते पैघ वंशक छी से बिसरि गेलिऐक की? खानदानक प्रतिष्ठा बढ़य ताही उद्देश्यसँ एतय आनल गेल छल। एते-एते दिन केओ बेटीकेँ कुमारि रखैत अछि।"

पदुमसुन्नरि फेर दयनीय स्वरमे उत्तर देलथिन्ह—"हमरा की करय कहैत छथि। वरो के तकतैक। अपन के छैक जकरा कहिऐक।"

ई सुनितहि जेना सीतादाइकेँ कोनो महान अवसर भेटि गेल होन्हि। कने फज्भैत करबाक स्वरमे कहलथिन्ह—"से किएक ऐ! गाममे एते लोक कथीलै छैक। अहाँ लोक के आन कए कऽ बुझिऔक परन्तु नलिनीकेँ त सभ अपने बेटी बुझैत छैक। ककरो अहाँ कहलिऐक अछि?"

ताबत तिरपितक माय उठि कऽ नहाय चलि गेलीह। सीतादाइ पदुमसुन्नरिक आओर निकट अबैत कहलथिन्ह—

"बेटीकेँ जतय भरि पेट अन्न भेटय, दू टूक वस्त्र भेटय, आनन्दसँ रहत। सभकेँ थोड़े राजा-महाराजा जमाय होइत छैक।"

पदुमसुन्नरि चुपचाप सीतादाइक मुँह देखेत छलीह।

सीतादाइ पदुमसुन्नरिक कान लग जाए कऽ कहलथिन्ह—"भैरव भाइक नजरिमे एकटा कथा छन्हि। वरक तीसेक वयश छैक। परुकाँ साल स्त्रीक मृत्यु भऽ गेलैक। धन सम्पत्ति कथुक कमी नहि छैक। जे कन्या ओहि घरमे जायत तकर भाग्ये बुझिऔक। हमरा जखने कहलन्हि तखनहि सोचल जे ई कथा नलिनीए जोकर हैतैक................तखन बात जे, ई काज जतेक जल्दी भऽ जाए से नीक।"

"से किएक ?—पदुमसुन्नरि विस्मयसँ प्रश्न कयलन्हि।

"कखन के भङठा देत तकर कोन ठीक"—सीतादाइ गम्भीर होइत बजलीह—"दोसर, वेशीकाल कमलक संग रहैत अछि से ठीक नहि करैत अछि। लोक कमल लगा कऽ कते तरहक बात बाजल करैत छैक।"

"कमल ओकरा बहिन जेकाँ मानैत छैक। एहन बात कोना कहैत छथिन्ह।"

एहिना आँखि बन्द कएने रहब आओर बहुत भऽ जैत। दोसर, दसक मुँह के बन्द करतैक। तें हमर विचार जे ई काज जल्दीए भऽ जाए। हम भैरब भाईकेँ कहि देबन्हि जे एहि विषयमे बुझथिन्ह-सुझथिन्ह।"

परन्तु अपमानक ई क्षीण अंकुर दुइए चारि मूहुर्त्तमे एक विशाल वृक्षक रूपमे परिणत भऽ गेल आओर ओकर डारि-पात पदुमसुन्नरिक सौंसे मस्तिष्कमे पसरि गेल। ई सभ सुनैत-सुनैत हुनकर धैर्यक सीमा टूटि गेलन्हि। ओहि ठामसँ उठैत बजलीह—'की करथिन्ह, नलिनी ओतेक भाग्यक जोरगरि नहि छैक।"

नहि जानि जे सीतादाइ आओर की सभ उपदेश देमय जा रहल छलीह परन्तु हुनका चुप रहि जाय पड़लन्हि।

आओर तावत पूर्वीय क्षितिज पर सूर्यक ललिमा उद्भासित भऽ उठल। पदुमसुन्नरि शीघ्रतामे स्नान कए घर दिश कऽ विदा भेलीह।

११

पदुमसुन्नरि जखन आङन अएलीह नीक जेकाँ फरीछ भऽ चुकल छल। टोल-परोसक सभ केओ जागि चुकल छल। ओ तुलसी चौरापर अछिंजल राखि नुआकेँ टाङय लगलीह। फेर भगवती नीपि, पाठ करय बैसलीह। परन्तु आन दिन जेना ओहिमे मन नहि लगलन्हि। रहि-रहि कऽ हुनका सीतादाइक बातक स्मरण आबय लगलन्हि। सीतादाइ अप्रकट रूपेँ नहि जानि की सभ कहि देलथिन्ह। हिनकर मौन जेना हुनकर कथनक सत्यताकेँ प्रमाणित कय देलक। आब रहि-रहि कऽ हुनका मनमे ई भावना उठय लगलन्हि जे हुनका तखन कोनो तेहेन उत्तर किऐक नहि देलिऐन्ह। सीतादाइक इतिहास प्रायः गाममे

किनकोसँ अज्ञात नहि छल। पदुमसुन्नरिकेँ सेहो सभटा बुझले छलन्हि। परन्तु आइ ओएह महान उपदेशिका बनि ज्ञान प्रचार कए रहल छलीह। तथापि हुनका ककरहु अनुचित निन्दा करबाक अधिकार नहि छलन्हि। तावत हुनकर नजरि सामनेसँ जाइत अपन कन्यापर पड़लन्हि। सोलह वर्षक कोमल किशोरी। अङ्ग-अङ्ग चम्पाक फूल सदृश विकसित। पदुमसुन्नरि किछु बजलीह नहि परन्तु आँखिसँ रूप-सुधाक पान करैत रहलीह। जखन ओ आङनसँ बाहर भए अदृश्य भऽ गेलि त हिनकर दुनू आँखिसँ नोरक दू ठोप खसि पड़लन्हि। पाठक स्रोत भंग भऽ गेल आओर ओ आँचरक खूँटसँ नोर पोछय लगलीह।

पदुमसुन्नरिकेँ आइ एकदम मन नहि लगलन्हि। छाती पर जेना केओ चिन्ताक पहाड़ राखि देने होन्हि। आखिर ओहि चिन्तासँ मुक्तो केनिहार त ने ककरो देखैत छथिन्ह। जाहि तरहें निन्दा केनिहारक कमी नहि छैक तहिना जँ दू-चारि व्यक्ति सहायता करबा लेल प्रस्तुत होइतथिन्ह त पदुम-सुन्नरिक प्रसन्नताक वर्णन करब कठिन होइत। लऽ दऽ कऽ एकटा सहायक नजरि पड़लन्हि ओ छलाह परशुराम झा। ओहो एहि बरस दिनसँ मलेरियाक मारल छलाह। सम्प्रति समाद आएल छलन्हि जे आब नीकें छथि। आओर अन्ततः पदुमसुन्नरि इएह निर्णय कएलन्हि जे हुनका शीघ्रातिशीघ्र अएबाक लेल लिखल जाइन्ह। कमलसँ सेहो बड़ आशा

कएने छलीह। परन्तु ओ कहिया धरि आओत तकर कोनो ठेकान नहि आओर ने पता बूझल छलन्हि। ओकरा रहने कते स्कुलिया वरक पता ठेकान बुझितथिन्ह। विवाहक दिन सेहो जेठे धरि छैक। कन्यादान एहि बेर अनिवार्य छलन्हि अन्यथा पदुमसुन्नरिक लेल एहि समाजमे रहि अन्नजल ग्रहण करब कठिन छलन्हि।

माइक म्लान मुखाकृति देखि नलिनीकेँ सन्देह नहि रहलैक जे एकर कोनो कारण अवश्य छैक। ओ भानस-भात कए मायकेँ उठाबय गेलि। नलिनीक सरल मुखाकृति देखि पदुमसुन्नरिक कोंढ़ फाटि गेलन्हि। एम्हर नलिनीकेँ घोर आश्चर्य भेलैक। आखिर माइक एहि वेदनाक की रहस्य अछि? तकर अन्दाज करब ओकरा लेल कठिन छलैक। परन्तु अपन उत्सुकता शान्त कए ओ धैर्यसँ कार्य लेलक। भोजनोत्तरो पदुमसुन्नरि परसँ ओ म्लानता गेल नहि। आओर तखन आबि कऽ नलिनी एकर जिज्ञासा कएलक। पहिने त पदुमसुन्नरि एहि सभकेँ टारि देबाक चेष्टा कएलन्हि परन्तु नलिनी जखन कपार फोड़ि कऽ मरि जैबाक धमकी देलकन्हि तखन फेर अपन एहि एकमात्र सन्तानसँ कोनो बात गुप्त राखब पदुमसुन्नरिक लेल कठिन भऽ गेलन्हि। ओ कनैत-खिझैत पोखरिक घाट परक घटना सविस्तर सुना देलथिन्ह। नलिनी शान्तिपूर्वक सभटा सुनैत रहलि। आब जा कऽ ओकरा बुझबामे अएलैक जे माय किएक दुखी अछि। समाजक एहि प्रतारणा सँ ओ ततेक

विक्षुब्ध भऽ उठलि जे तत्काल मायसँ सब किछु कहि देबाक इच्छा भेलैक। ओकरा जेना एहि लेल उपयुक्त अवसर भेटि गेलैक। जे कोमल मधुर भावना आइ धरि हृदय धरि सीमित छल तकरा आइ अपन स्नेहवत्सला मायसँ कहि देबाक प्रबल इच्छा भेलैक। ओ कहबापर उद्यत भेलि परन्तु एक अकृत्रिम लज्जा आबि कऽ ओकरा रोकि देलक। एहि सुखद सम्बादसँ मातृ-हृदयकेँ सांत्वना भेटैत विषाद आह्लादमे परिणत भऽ जाइत। कोनो माइ लेल एहिसँ प्रियगर केहनो सम्वाद नहि भऽ सकैछ। परन्तु लज्जा एक महान बन्धन अछि—एक एहन विवशता अछि जकरा सम्मुख साधारणतः लोककेँ नतमस्तक होमय पड़ैत छैक। आओर ओही लज्जाकेँ नारी-जीवनक भूषण मानल गेल अछि। यावत धरि ओकरामे लज्जा अछि ओ विभूषित अछि, अलंकृत अछि। ओकरामे एक महान गुण छैक जे साधारण विशेषता नहि बनि एक आभूषण सदृश ओकर शृंगार करैछ। ई कोनो कृत्रिम शृंगार नहि वरन् प्राकृतिक उपादान थीक, एक ईश्वर-प्रदत्त वस्तु! नलिनी जँ मायसँ ओ बात कहि दैत त मातृ-हृदयकेँ भनहि सन्तोष होइत, म्लान मुखमंडल हर्षातिरेकसँ उत्फुल्ल भऽ जाइत परन्तु नलिनी एक महान विशेषता, नारीक एक पैघ गुणसँ बंचित होइत। विवाहक बात, दाम्पत्य जीवनसँ सम्बन्धित आन कोनो बात, लोक गुरुजनक सम्मुख नहि बजैछ। ई एक स्वाभाविक संस्कारक छैक नैतिक विशेषत्व छैक लोकक

हृदयमे। अतः जँ नलिनीकेँ चोभ भेलैक, समाजक एहि आचरणसँ ओकरा माइक कोमल हृदयपर आघात भेल छलैक तथापि ओ उग्र भइयो कऽ फेर नरम भऽ गेलि। जे हृदय वज्र सन कठोर भऽ गेल छल ओ फेर मोम सदृश पिघलि गेल। ओकरहु आंखिसँ नोरक धार विगलित भऽ उठल। परन्तु एहिमे खाली शोकक उद्गार नहि छल वरन् प्रसन्नताक रहस्य सेहो छल। ई नोर हर्ष ओ विषाद दुनूसँ पुनीत छल। आइ नहि तऽ काल्हि एहि रहस्यक उद्घाटन हैबे करितैक आओर एहीसँ नलिनी अपन मनक आवेगकेँ रोकि लेलक। ओकरहु आँखिमे नोर देखि पदुमसुन्नरिक आंखिसँ औरहु अश्रुपात होमय लागल। पश्चात् अपन नोर पोछैत ओ बजलीह—"तों किएक कनैत छह? यावत हम छी तावत ककर दर्प जे तोरा किछु कहतौक? तोरा हमर सप्पत एना जुनि कान।"

नलिनी नोर पोछि लेलक। आब कानक अर्थ छल माइक कोमल हृदयपर आघात करब। परन्तु ओकरा विवाहक लेल मायकें एते चिन्तित हैब ओकरा अतिशय रहस्यमय बुझि पड़लैक। अखनधरि ओकर इएह कल्पना छलक जे कमलक संग ओकर विवाह माइक हार्दिक अभिलाषा छैक आओर ताहीसँ पुलकित भऽ कय ओकरहु कोमल हृदय मे अकस्मात् ई मधुर भावना अंकुरित भय उठल छल। कमलक प्रति ओकरा हृदयमे चिर संचित अनुराग प्राकृतिक झरना सदृश फूटि पड़ल। आइ जँ लोककें एहिसँ ईर्ष्या भेलैक अछि त एहि लेल खेद करबाक

कोन काज छैक ? कहियो त ई बात प्रकट हैबे करतैक। परन्तु माइक मुँहपर निविड़ उदासीनता देखि ओ किछु सोचि नहि सकलि। ओकरा बुझि पड़लैक जे ओएह अज्ञानान्धकारमे छलि। परन्तु ई अज्ञानान्धकार अत्यन्त प्रियगर छल। आइ जँ कमल रहितै त नलिनी निःसंकोच भऽ कऽ सभ किछु सुना दितैक। कमल पुरुष अछि, पढ़ल लिखल अछि। ओ मायसँ कोनो ने कोनो तरहें सभ बात कहि दितैक। परन्तु कमल छल कहाँ ? नलिनीक लेल प्रतीक्षाक ई एक एक पल पहाड़ बुझि पड़ैत छल। एहि प्रतीक्षाक वर्णन ओ किताबमे पढ़ने छलि, अपन समवयस्का विवाहितसँ सुनने छलि, परन्तु विश्वास नहि होइत छलैक, हँसी लगैत छलैक। आइ ई सभ सोचि ओकर कोमल काया सिहरि गेलैक। मने मन इहो सोचय लागलि जे ओ की सोचि रहल अछि। ओ अखन अविवाहिता छलि आओर ओकर एहि तरहें सोचब सर्वथा अनुचित छल, पाप छल। ओकर विवाह ओकर माइक इच्छापर निर्भर करैत छलैक। ओकर मास, ओकर कोमल अनुरागमयो माय जकरा हाथमे सोपि देतैक सैह ओकर आराध्य, देवता तुल्य हैतैक।

नलिनीक दुनू आँखिमे पुनः नोर भरि आयल। मनुष्यक हृदयमे निरन्तर भावनाक द्वन्द्व होइतहि रहैत अछि। नलिनियोक हृदयमे सैह उथल-पुथल भऽ रहल छल। हँ, देवता तुल्य ? माइक इच्छाक आगू ओ सभ किछुक बिसर्जन कऽ देत। परन्तु ओकर मायके जहिया ई समाचार भेटतैक; जहिया एहि मधुर

रहस्यपूर्ण समाचारसँ अवगत होयतीह, तखन हुनका कतेक प्रसन्नता हैतैन्ह तकर अनुमान नलिनी सहजहिं कय लेलक ।

पदुमसुन्नरि नीरव भेलि बसलि छलीह । हृदय मे संकल्प-विकल्प चलि रहल छलन्हि । जाहि कमलकें ओ अपना पेटक सन्तान बुझैत छथिन्ह, जे कमल नलिनीकें सहोदरा सदृश मानैत छैक, तकरे प्रति एहन बात बाजल गेल छल । पदुमसुन्नरिक मन मे सेहो प्रतिहिंसाक संग-संग एकटा कामना जागि गेल । वास्तवमे कमल नलिनीए जोग छल । दुनूमे स्नेहो कतेक छल । मनहि दुश्मन लोकनिक छाती फाटन्हु, ईर्ष्यासँ आंखि नहि सुझौन्ह परन्तु पदुमसुन्नरि प्रसन्नतासँ नलिनीकें कमलसँ व्याहि दितथिन्ह । पदुमसुन्नरिक आँखिसँ आनन्दाश्रु झरय लगलन्हि ।

परन्तु एकाएक हुनकर तन्द्रा टूटि गेलन्हि । ओ वास्तविकताक कठोर धरातलपर आबि गेलीह । प्रतिहिंसाक स्वर सहजहि हुनका मुखसँ बहरा गेल—"हम त कमलक संग व्याहि कऽ देखा दितिऐक परन्तु ..."

ई "परन्तु' की ? नलिनी मूड़ी झुका कऽ सोचय लागलि । इच्छा भेलै जे पुछय ? तोहर मतलब ?

ता' पदुमसुन्नरि अपनहि एकरा स्पष्ट कयलन्हि—परन्तु भगवानेक इच्छा नहि छन्हि ।

नलिनी मनहिमन बाजलि—"भगबान अनुकूले छथिन्ह। तों एकर चिंता जुनि कर।" आओर प्रसन्नतासँ ओकर हृदय-कली विकसित भऽ उठल। एक अभिनव आभासँ मुखमंडल देदीप्यमान भऽ उठल।

परन्तु भगवान ठीके अनुकूल नहिं छलथिन्ह। नलिनीक विश्वास एक मिथ्या दम्भ छल। ओहि मनोरथक कथा छल जकर विफल हैब [निश्चित छल। नलिनी ओ कमल दुनूक हृदयमे-बाल्यावास्था मे जे प्रेम अंकुरित भेल ओ यौवनक प्रथम किरणक स्पर्शसँ पुष्पित भऽ रहल छल। आइ ओ प्रेम, दुनू प्राणकेँ एकाकार होएबा लेल प्रेरित कए रहल छल-दाम्पत्य प्रेममे परिणत भऽ कऽ। परन्तु...

पदुमसुन्नरि पुनः बजलीह— "कमल लगा कऽ जे एतेक बजैत अछि से हम अपनहिं देखा दितिऐक जे दुनू मे बिवाहो भऽ सकैत छैक। ...मुदा से हेतैक कोना? जकरा से नहि बुझऽ आबैत छैक सैह ने अन्यथा बाजत। एहन बेविचारी लोकक मुँह के बन्द करतैक। सभसँ प्रवल जे एतेक दिनुक सम्बन्ध—।" —ओतऽ जेना एहि विषय मे सोचियो नहि सकैत छलीह।

पदुमसुन्नरि जे किछ कहलथिन्ह ताहिमे हुनुकर विकल हृदयक भग्न उच्छवास छलन्हि। ककरो सुनेबाक अभिप्रायसँ नहि कहलथिन्ह। परन्तु अन्तिम शब्द सुनैत-सुनैत नलिनिक आँखिक आगू अन्हार पसरि गेल। ओकर जीबनक आलोक तिमिराच्छन्न भऽ गेलैक। ओकर मनोरथक महल चकनाचूर-

भऽ गेल। ऊँच, खूब ऊँच कल्पना-लोकमे विचरैत पक्षीक जेना केओ पाँखि काटि लेने हो।

नलिनी ओतय बसि नहि सकलि। भेलैक जे करहु कोंढ़ ने फाटि जाय। दौड़लि आयलि आओर सूति रहलि। ओ सिसकि-सिसकि कानय लागलि, नोरसँ ओछाओन भीजि गेलैक। फेर कनैत-कनैत निन्न आबि गेलैक।



१२

दूपहरक गर्मी असह्य भऽ रहल छल। पुबरिया घरक असोरा पर बैसलि पदुमसुन्नरि टकुरी कटैत छलीह। घरमे एको तानी जनऊ नहि छन्हि। आओर एहि बेर त कहुना कन्यादान हेबे करतन्हि फेर ककरासँ मङ्तीह। परन्तु रहि-रहि कऽ औंघाय लगत छलीह। ताहिसँ सूत टूटि-टूटि जाइत छलन्हि। अन्तमे बाध्य भऽ कऽ टकुरीकेँ कोठीपर राखि देलन्हि आओर शीतल-पाटी ओछाय सुतबाक उपक्रम करए लगलीह।

जहाँ कने आँखि लागल हेतन्हि कि ककरहु स्वर कानमे पड़लन्हि। बाहर आबि देखथि त सीतादाइ छलीह। स्वागत करैत बजलीह—"आबथु दाइ! कहाँ गेलैह गे नलिनी, एकटा आसनी ला तऽ।"

ता' सीतादाइ कहलथिन्ह—"एतय नहि, बाहरे दलानपर चलू। भैरव भाइ सेहो अएलाह अछि। अहींसँ किछु कहताह।"

भैरव बाबूक नाम सुनितहि पदुमसुन्नरिक सभ उत्साह मन्द पड़ि गेलन्हि। नहू-नहू आङनसँ बहरेलीह आओर दलानक एक कात अढ़मे जा कऽ बैसलीह। सीतादाइ सेहो सुभ्यस्त भऽ भैरव बाबूक सम्मुख चौकीक नीचामे बैसि गेलीह।

गप्पक प्रारम्भ सीतादाइ कएलथिन्ह। पदुमसुन्नरि सँ बज-लीह—"कहाँ अएलाह अछि से त बुझनहि हेबन्हि।"

परन्तु पदुमसुन्नरि किछु नहि उत्तर देलथिन्ह। मौन बनलि रहलीह। पश्चात् सीतादाइ स्मरण दिऔलथिन्ह—"वैह पोखरि-पर जे कहने रही। नलिनीक विवाह दऽ।"

ता' भैरव बाबू कहलथिन्ह—"एहि बेर त कन्यादान अनि-वार्य छन्हि। एना चैनसँ बैसने कोना काज चलतन्हि।"

पदुमसुन्नरि अस्पष्ट स्वरमे उत्तर देलथिन्ह—"चैनसँ कोना बैसबेक। तखन भाइकेँ समाद पठौने छिऐन्ह।"

"भाइ के?"—भैरव बाबू उत्सुकतासँ पुछलथिन्ह।

"हमरे परशुराम भाइ। हुनका दुखित पड़ि गेने हाथे पैर हेराएल छल, आब नीकेँ भेलाह अछि।"

"हुनकर आएब जरूरिए छन्हि। तथापि हमहु सभ त छीहे। जहिना हुनकर भगिनी छन्हि तहिना त हमरो नतिनी थीक। हमरो त ओतबहि चिन्ता अछि।"—भैरव बाबू कहलथिन्ह!

अनुमोदन करत पदुमसुन्नरि बजलीह—"होबइ चाहिऐन्ह। आब हमर अप्पन त इएह सभ छथि। तखन सभ केओ आबि जाए। कमल सेहो आब अएबे करतैक।"

भैरव बाबू हँसैत कहलथिन्ह—"कमल अखन घटकैतीक हाल की जानय गेल।"

आओर कमलक नाम सुनितहि जेना सीतादाइक देहमे आगि लागि गेल हो! बजलीह—'अहूँ ताले करैत छी ऐ पदुमसुन्नरि! कोनो कनिया पुतराक विआह छैक की? कमल अखन कोन जोकर अछि जे एहि सभक हाल बुझतैक। जतय भाइ सनक लोक अहाँक मददि लेल तैयार, ओतय अहाँ कमलक बाट तकैत छी। कमल कोनो पटनासँ वर किनने अओतैक की?"

परन्तु पदुमसुन्नरि ओहिना अचल बनल रहलीह। हँसैत बजलीह—"तैं त नहि हो। एहि दुआरे कहलिऐन्ह जे नलिनी पर ओकरा बड़ स्नेह छैक। दोसर पढ़लाहा—लिखलाहा वरक हाल त ओएह जनैत होएतैक। ई त से नहि बुझथिन्ह।"

परन्तु सीतादाइ थोड़े ई सभ बुझैवाली छलीह। ईर्ष्यासँ हुनकर मन विकृत भऽ उठलन्हि—"जाहि गाम मे मुर्गा नहि बजैत छैक ताहि गाममे प्रात होइत छैक की नहि? एही गाममे एतेक कन्यादान जे भेलैक अछि से कथा कमले तकलकै अछि की? ओना मनमे दोसर बात हो त कहू।"

सीतादाइक ई कटाक्षपूर्ण उक्ति सुनि पदुमसुन्नरिक मुख मलिन भऽ गेलन्हि। तथापि ओ किछु कहलथिन्ह नहि। जकरा-

जीवनमे खाली दुःख ओ वेदना सहय पड़ल होइ ओकर हृदय पाथर किऐक नहि भऽ जैतैक। सीतादाइक उक्तिकेँ ओ धैर्यपूर्वक सहि लेलन्हि। तथापि एक तरुणीक प्रति एहि प्रौढ़ा नारीक प्रति-द्वन्द्विताक कोनो कारण नहि बुझि पड़लन्हि।

इएह सभ सोचैत छलीह कि भैरब बाबू कहलथिन्ह "आब ककरो भरोसे बैसने काज नहि चलतैन्ह। समय सेहो कम छन्हि, दोसर काज एहि बेर जरूरी छन्हि। एहि बेर ई काज नहि कएने बड़ भारी अयश हैतन्हि। हमहू सभ चारूभरसँ दुसल जाएब।"

"से त जे करथिन्ह से त इएह सभ करथिन्ह।"

भैरबबाबूकेँ जेना बड़का बल भेटि गेल होन्हि। बजलाह— "सैह सभ सोचि त हम एकटा कथा ठीक कएल अछि। जहिए हमरा ओकर खबरि भेटल तहिए हम सोचल जे ई सभ तरहेँ नलिनीक उपयुक्त हैतैक।"

भैरब बाबूक भूमिका आब पदुमसुन्नरिसँ अस्पष्ट नहि रह-लन्हि। प्रकाश्यतः बजलीह—"से त इएह सभ बुझथिन्ह।"

भैरब बाबू जा धरि ओहि कथाक प्रसंग सुनबैत रहलथिन्ह, पदुमसुन्नरि सुनैत रहलीह। हुनका लेल ई कोनो नव समाचार छलन्हि नहि। सीतादाइसँ बहुत किछु सुनि चुकल छलीह। दोसरो आनो लोक सभ जनिका एहि विषयमे थोड़-बहुत सुनल छलन्हि, पदुमसुन्नरिकेँ अपन-अपन परामर्श देने छलथिन्ह। अतः आइ फेर जखन वैह बात सुनाओल गेलन्हि त धैर्य पूर्वक सभटा सुनैत रहलीह। तथापि भैरव बाबूक स्वर हुनका अन्तरतममे प्रवेश

नहि कए सकल। परन्तु कोनो तर्क वितर्क करबाक हुनका साहस नहि भेलन्हि। एकमात्र भगवान पर विश्वास छलन्हि। जँ नलिनीक नसीब मे सैह लिखल हैतन्हि त केओ की कऽ सकैत छल। तइयो भैरब बाबूक आन्तरिक उद्देश्य पदुमसुन्नरिसँ अप्रकट नहि रहलन्हि। ओ कतबहु नलिनीक प्रति अपन उत्तरदायित्वक प्रदर्शन करथु परन्तु हुनका हृदयप्रदेश मे तकर मिसियो भरि स्थान नहि छल। बस, एक स्वार्थ भावनासँ प्रेरित भऽ आइ ओ एहि निर्धन विधवाक पर्णकुटीकेँ पवित्र कएने छलाह तकर पदुमसुन्नरिकेँ कनियो सन्देह नहि रहलन्हि।

भैरब बाबू उठैत कहलथिन्ह—"बेश! त अखन चलैत छी।"

पदुमसुन्नरि अनुरोधपूर्ण स्वरमे बजलीह—"आह! दू टूक सुपारियो त लेने जाथु।"

भैरब बाबू हँसैत बजलाह—"नलिनीक विवाह भऽ जाए दिऔ तखन त पान सुपारी खाइते रहब।"

पदुमसुन्नरि काचक सराइमे सुपारी लौंग आनि कऽ देल-थिन्ह। भैरब बाबू प्रसन्नचित्त ओतयसँ बिदा भेलाह।

भैरब बाबूक गेलाक बाद पदुमसुन्नरि, सीतादाइसँ बैसबाक लेल आग्रह कएलथिन्ह। परन्तु ओ अनेक काजें व्यस्तता देखाय चलि गेलीह।

पाछाँ पदुमसुन्नरि जतेक एहि विषयकेँ सोचलन्हि चिन्ता ओतेक अधिक बढ़ल गेलन्हि। ई विषय वास्तवमे सोचबाक छलन्हि। पहिने जँ ओ नलिनीक विवाह दऽ सोचैत छलीह त

बिछोहक वेदनासँ आँखि भरि जाइत छलन्हि । ओ एहि भावनाकेँ हृदयमे स्थान नहि देमय चाहैत छलीह जे हुनकर एकमात्र कन्या हुनका लगसँ दूर चलि जायत । परन्तु आब एहि अरक्ष-णीया कन्या दिशसँ ओ कते काल धरि आँखि मूनि सकैत छलीह । नलिनीक अवस्था कोनो कम नहि भेलैक । सोलह वर्षक कन्या ककरा घरमे कुमारि रहैत छैक ! परन्तु एहि फूल सन किशोरीकेँ ओ कतहु कऽ कोना देथु । माइक मनोरथ बड़ पैघ होइत छैक । केओ माय अपन कन्याक नीक सँ नीक कथा करए चाहैत अछि । ताहिठाम भैरब बाबू जे द्वितीय बरक प्रसंग बात चलौने छथिन्ह से पदुमसुन्नरिकेँ कोना पसिन्न पड़ितन्हि ? जतेक एकरा सोचलन्हि हुनकर हृदय विषादसँ भरि गेलन्हि । भैरब बाबूकेँ ओ किछु 'हँ' अथवा 'नहि', नहि कहि सकलथिन्ह जे किछु कहलथिन्ह से स्वीकारात्मक अधिक छल । सोझा सोझी मुँह पर 'नहि' कहियो कोना सकैत छलथिन्ह ? ताहिमे सीतादाइ सनक सहायिका संग छलथिन्ह । सीतादाइक हृदयमे नलिनीक प्रति द्वेषभाव उत्पन्न भऽ गेल छन्हि तकर कोनो हेतु नहि भेटलन्हि । अज्ञात भयसँ देह सिहरि उठलन्हि । नहि जानि जे सीतादाइ की सभ प्रचार करथिन्ह । त्रिलोचन काका ओहिना ओहि बेर भैरब बाबूक इच्छानुसार कथा नहि कएलथिन्ह । फल भेलैक जे भैरब बाबू सीतादाइक सहायतासँ कन्याक प्रति तेहेन-तेहेन अप्रिय कथाक प्रचार कएलथिन्ह जे दरबज्जा परसँ बर-वरियाती फिरिकऽ चल गेलैक । इएह सभ सोचैत पदुम-

सुन्नरिक हृदयमे द्वन्द्व चलय लगलन्हि। द्वितीय वर भेनहि कोनो हर्ज नहि। एहिना लोक कहै जे फेकू बाबू बूढ़ वर उठा अनलन्हि अछि आओर आब ओएह अन्नपूर्णा देखैत छिऐक जे कतेक प्रसन्न अछि। सभसँ पैघ भाग्य होइत छैक। परन्तु प्रश्न छैक नलिनीक। नलिनीकेँ ई कथा पसिन्न पड़तैक की नहि? केओ माय-बाप परिस्थितिए विवश भए कऽ अपन सन्तानक आन्तरिक इच्छाक उपेक्षा करैत छैक। पदुमसुन्नरिकेँ नचारीक ओ पद सभ मन पड़ि गेलन्हि जे बाल्यावस्थामे अत्यन्त उद्गारक संग नलिनी गाओल करैत छलि—

माइ हे अजगुत भेल
गौरीके उचित वर विधि नहि देल।
अति बूढ़ वर भेल,
गौरीके मनक बात मनहि रहि गेल।

पदुमसुन्नरिक दूनू आँखि नोरसँ भरि गेलन्हि। एक नव-युवतीक मनोरथ धन-सम्पत्ति धरि सीमित नहि रहैत छैक! ओ विकल भऽ उठलीह।

ता' नलिनी आबि कऽ कहलकन्हि— माय, मामा अएल-थुन्ह अछि। चिन्तासागर मे भसिआइत पदुमसुन्नरि के जेना केओ बाँहि पकड़ि लेने होन्हि। ओ हरबरा कऽ उठलीह। बैसाखक मेघ जहाँ एक क्षणमे समस्त आकाशकेँ आच्छादित

कऽ लौत अछि, ओहिना मुहूर्त्त भरिमे बिलीनो भऽ जाइत अछि। परिश्रम, अनाहार ओ दुर्भावनाक कारणें पदुमसुन्नरिक हृदयाकाशमे जे चिन्ताक मेघ जमा भऽ गेल छल, परशुराम-झाक आगमनसँ ओ नहि जानि कतय चल गेल आओर ओ उल्लसित हृदयसँ भायकँ देखय चललीह।



१३

परशुरामझाक प्रणामक आशीर्वाद दैत पदुमसुन्नरि बजलीह--"तोरा बिना त आँखिक निन्न हेरायल रहैत छल। कतहु केओ नहि सुझैत छल। आब मन कोना रहैत छह?"

नलिनी एक लोटा पानि ओ खराम आनि कऽ देलकन्हि। पैर, हाथ धो, चौकी पर सुभ्यस्त भऽ बैसि परशुरामझा कहलथिन्ह--"आब ठीक रहैत अछि। ई मलेरिया त देह तोड़ि देलक। सै-दू-सै खर्चो करौलक। अखनधरि अबलता नहि गेल अछि।

पदुमसुन्नरि कातर स्वरमे बजलीह—"हमर नसीबे एहन छैक नहि ते काजक बेरमे कतहु तों सब दुखित पड़ि जाह।"

तथापि परशुराम झा सांत्वना देलथिन्ह–"आब नीकें भऽ गलहुँ अछि। काज थोड़े खगए देबैक।"

भाइक रुग्णावस्था देखि पदुमसुन्नरिक आँखि भरि गेल छलन्हि। ओ नोर पोछि नैहरक कुशल समाचार पूछय लगलीह।

परशुरामझा नलिनीकें शोर करैत कहलथिन्ह—"कहाँ गेलैं गे नीलम! एक गिलास ठंढा जल पिआबइ तऽ।"

पदुमसुन्नरिकें एकाएक ध्यान अएलन्हि—"दुर जो! हम त अपनहि बेगरते आन्हर रहैत छी। खाली पेटमे पानि कोना पिबह? किछु पनपिआइ आनि दैत छिअह।"

परन्तु परशुराम मना कऽ देलथिन्ह। अन्ततः पदुमसुन्नरि नलिनीकें शरबत बना कऽ आनय कहलथिन्ह।

नलिनी शरबत बना कऽ दऽ गेलन्हि। जखन चल गेलि परशुरामझा कहलथिन्ह—"कतेक सुन्दर भऽ गेलि अछि।"

बेटीक रूपक प्रशंसा सुनि पदुमसुन्नरिक हृदय आनन्दसँ भरि गेलन्हि।

बड़ीकाल धरि दूनू भाइ-बहिनिक मध्य गप्प होईत रहल। अन्त मे परशुराम कहलथिन्ह—"नहि ए बहिन! अहाँकें भनहि मन मानौ परन्तु हम ई नहि करए कहब। कहबीयो छैक जे "कोमल कलीकें ढेंग कोंकनल।" भैरब झा कें हम नहि चिन्हैत छिऐक? जरूर ओकरा सै-पचास गछने हैतैक।

पदुमसुन्नरि दीर्घ निःश्वास लैत कहलथिन्ह—"हमर मन कोना मानत। तखन करबे की करू? दोसर सुनैत छिऐक जे बड़ धनीक छैक।"

परशुरामझा—"त भैरव बाबू अपनहि भतीजीक विवाह किऐक नहि करा लैत छथि। भतीजीयोकत पन्द्रहम-सोलहम हैतैन्ह ?"

पदुम०—"हँ, ताहिमे कोन ! नलिनी सँ डेढ़ने दू वर्षक छोटि हैतैक।

परशु०—तखन फेर ? अपना घर मे जकरा कुमारी कन्या रहतैक से कतौ दोसरक उपकार कैने फिरतैक ? रामपुरमे ककरा धन छैक से कि हम नहि जनैत छिऐक ? आओर धन रहनहि की ? विवाह बरसँ हैतैक धनसँ नहि। एहि कथा मे हम अपन विचार नहि देबऽ। तोहर अपन मन जे होअऽ।"

पदुमसुन्नरि गम्भीर होइत बजलीह—"हमर अपन मन कोना हैत। जखन तों सभ वर तकनिहार छह त हम अपना मने थोड़े करबौक। मुदा आब बैसनहु काज नहि चलतह। आब सीधा-सम्मरि बान्हि कऽ एहि पाछू पड़ि जाहक।"

परशु०—"अवश्ये की। हमरा एकाध टा कथाक पता भेटल अछि। एकटा चन्दनपुरक कथा सेहो छैक। काल्हिए हम ओतय जाएब। जतेक रुपैआ खर्च हैतैक मुदा हम अपना भगिनीक कथा नीक ठाम करब। नहि वर भेटतैक त बरु कुमारिए रहि जाएत तैं हम कोनो गमारक हाथमे नहि देबैक।"

पदुमसुन्नरिकैं हँसी रोकल नहि गेलन्हि। बजलीह—"आब कते दिन कुमारि रहतैक। देखैत छी जे विना कसूरे सीतादाइ सौंसे गाममे अनघोल कैने छथिन्ह।"

परशु०—"जे अपने जेना रहैत अछि तहिना साँस ' कहल- बुझैत छैक ? ताहि लेल की करबहक ।"

हठात् पदुमसुन्नरिकें किछु स्मरण भऽ अएलन्हि । पुछलथिन्हि "कते रुपैआ लगतैक ?"

परशु०-' जते लगतैक से देखल जेतैक ?"

परन्तु पदुमसुन्नरिकें एहिसँ शान्ति नहि भेलन्हि । बजलीह— "दू-चारि हजार लगतैक से कहाँ सँ अनबैक?"

परशुरामझा सँ बहिनिक अभिप्राय गुप्त नहि रहलन्हि । बजलाह- 'से किएक, हम कथी लै छी । हमरो त इएह टा अछि । आओर के अछि? हम अपना जमीनक गाहक ठीक कऽ आएल छी । जहिया कहबौ दाम गनि जाएत ।"

भाइक एहि उदारतासँ पदुमसुन्नरिक दूनू आँखिसँ झरझर अश्रुपात होमय लगलन्हि । ओ किछु बाजि नहि सकलीह ।

मन हल्लुक भेला पर पुछलथिन्ह—'तों त चल जएबह । आ' भैरब बाबू जँ अओताह त हम की कहबन्हि ?"

अपन म्लान मुखमंडल पर हर्षक रेखा अंकित करत परशुराम झा कहलथिन्ह—"तों तकर चिन्ता जुनि करह । हम हुनकर भेंट कऽ लेबन्हि आओर समुचित उत्तर दऽ देबन्हि ।"

१४

समाजमे अखनहु एहन लोक अछि जे उचित - अनुचित पर विचार करत अछि। चन्दनपुरक नवकृष्ण चौधरीकेँ एकहि टा बालक छलन्हि। धनो सम्पत्ति पर्याप्त। चाहितथि त बेटाक विवाहमे हजार-खान गना सकैत छलाह। परन्तु हुनकर हृदय बड़ पैघ छल। सन्तानक प्रति रुपैया गनाएब हुनका स्वभावक प्रतिकूल छल। हार्दिक अभिलाषा इएह छलन्हि जे ओहने गरीब - दुखिया घरसँ कन्या लाएब जकरा सिन्दूरो किनबाक सामर्थ्य नहि हैतैक। बेटा एहि बेर बी० ए० पास कएने छलथिन्ह। स्वभावहुसँ अतिशय नम्र ओ विनयी। चेहरा पर एक एहन कान्ति छल जे सहजहि लोककेँ आकर्षित कऽ लैत छल।

परशुरामझा जखन कन्याक कुलशीलक वर्णन कएलथिन्ह

त नवकृष्ण बाबूकेँ तत्कालहि पसिन्न पड़ि गेलन्हि। कहल-थिन्ह—सदानन्द ठाकुरकेँ की हम चिन्हैत छिएन्ह! एकहि संग काशीमे पढ़ैत रही। हमरा ई कथा स्वीकार अछि।

आन्हर माङय दुनू आँखि। परशुरामझाक लेल एहिसँ खुशीक बात आओर की होइतन्हि? आओर भाइक मुँहें जखन पदुमसुन्नरि घर-वरक प्रशंसा सुनलन्हि त हर्षसौं नाचय लगलीह। सौंसे गाममे कहैत गेलन्हि जे एहन जीतल काज ककरहु नहि भेल छलैक। परन्तु सीतादाइ तकर कनियों मोजर नहि देलथिन्ह। बजलीह—"कोशीकातरसँ कोनो भिखमंगा के उठा अनने हैत।"

दिन बितैत देरी नहि होइत अछि। ताहूमे आनन्दक दिन। क्रमशः नलिनीक विवाहक दिन आबि गेल। सभक मुख पर आनन्दक रेखा विराजमान छल। पदुमसुन्नरिक त बेटिएक विवाह छलन्हि - चैनसँ कोना रहितथि। रहि-रहिकऽ एकटा बात लेल धरि मन उदास भऽ जाइत छलन्हि। सभसँ कहथिन्ह—"एहन शोभा - सुन्दरक दिनमे कमल नहि जानि कतय जा बैसलैक। आइ लाबा छिरिएबा काल ककरा तकबैक। आइ रहितैक त केहेन दीव होइतैक।" कमलक प्रति हिनक प्रगाढ़ ममता छलन्हि जेना पूर्वजन्ममे ओ हिनकहि बेटा छल होन्हि।

क्रमशः सन्ध्या भेल। वर-बरिआती ओयल। आङन-आङनसँ हकार पूरय स्त्रीगणक दल आएल। गामक आङ-

समाङ अबैत गेलाह। धिया-पुताक कलरव सँ वातावरण भरि गेल। शुभ घड़ी ओ शुभ लग्नमे नलिनीक विवाह भेल। गीतक टहंकारसँ आङन घर गुंजायमान भऽ उठल। परशुरामझा कन्यादान कयलथिन्ह। वर-कन्याक जोड़ीकसभ मुक्तकंठसँ प्रशंसा कएलक। लोक बजैत गेल – नलिनी हाथी पर चढ़ि गौर पूजने छलि।

विवाह निर्विघ्न सम्पन्न भेल। दोसरो विधि-व्यवहार पूर्ण भेल। पदुमसुन्नरिक बड़ पैघ चिन्ता दूर भऽ गेलन्हि। परशुरामझाक एक सभटा अभिलाषा सिद्ध भेल छलन्हि। नवकृष्णचौधरी पुतहुक रूप-सौन्दर्य देखि गद्‌गद् भऽ गेलाह। भैरब बाबू ओ सीतादाइ ईर्ष्यासँ हाथ मलैत रहि गेलीह।

आओर नलिनी ?

ओहि दिन जखन नलिनी सूति क उठलि त नवीन चेतनासँ अनुप्राणित छलि। ओकर मुखमंडल उत्फुल्ल छल-आह्लादित। ओकरा अपना पर घृणा भेलैक। कमल ओकर भाय छलैक, जेठ भाय। फेर ओकरा प्रति ओहि तरहक भावनाकेँ हृदयमे आश्रय देब अनुचित छल - एक बहिनिक मर्यादाक प्रतिकूल। तैं ई ईश्वरकेँ मंजूर नहि भेलन्हि। नलिनीकेँ जेना अपन विचार पर खेद भेलैक आओर पश्चातापक अग्निमे जरि कऽ ओकरा अन्तर्गत एक नवीन आत्माक अभ्युदय भेलैक—एक बहिनिक निष्कलुष स्नेहमय आत्मा। हृदयमंथनक पश्चात् जेना अमृततत्वक उपलब्धि गेल होइ। ओ प्रसन्न छलि। ओकर-

बिषादक नोर सुखा गेलैक— जेना किछु नहि घटित भेल होइ।

आओर आइ जखन एक सुन्दर युवकके नलिनी पतिक रूपमे प्राप्त कएलक त ओकरा चरणमे अपन हृदयक समस्त अनुराग अर्पित कए देलक। जेना स्वर्गक देवता प्रसन्न भए आशीर्वादक रूपमे अञ्जलि भरि कऽ देने होथिन्ह। आन्तरिकआनन्द सँ प्रेरित भए नलिनीक आँखि सँ झरझर अश्रुपात होमए लागल। प्रेमक ई प्रवाह अक्षय अछि। जखन हृदय कलश प्रेम सँ भरि जाइत अछि तखन ईश्वरक प्रेरणासँ स्वत: प्रेमीक नेत्रमे नोर भरि जाइत अछि। ई सनातन प्रथा थीक। नलिनीक लेल ई कोनो नव बात नहि छल। आनन्दक एहि प्रवाहके ओ अविरल गतिसँ बहय देलक।

एक दिन विनय बाबू नलिनी के सम्बोधन कए कहलथिन्ह— 'सुनल! अहाँक भाय प्रथम श्रेणीसँ पास कैलन्हि अछि।"

नलिनी एकाएक चेहा उठलि। कमलक स्मरण भऽ अएलैक। मनमे महान परिताप भेलैकजे कमलकें कोना कऽ बिसरि गेल। ओ सोचय लागलि जे अखन धरि कमल किऐक नहि आयल अछि। ई सभ सोचि ओकर आँखिमे नोर भरि अएलैक। कंठ रुद्ध भऽ गेलैक। किछु उत्तर नहि दऽ सकलि।

'अहाँकें त आइ मधुर खोआबक चाही।"—विनय बाबू पुन: पुछलथिन्ह।

नलिनी मुस्कुरा कऽ नीरव रहि गेलि।

ई गहन उदासी विनय बाबूसँ गुप्त नहि रहलन्हि। विनोदपूर्ण

शब्द मे पुछलथिन्ह—"कोनो बात मन पड़ि गेल ?"

"नहि त ।"—नोर पोछैत नलिनी बाजलि ।

"के जाने, बाल्यकालक कोनो स्मृति जागि पड़ल हो ।"

नलिनी लजा कए हुनका छातीमे मूड़ी नुका लेलक ।

किछु कालक बाद नलिनी बाजलि—"कतेक दिन गेना भऽ गेलैक । कोनो समादो बारी नहि बुझलिऐक ।" फेर विनय बाबू दिश लजाइत दृष्टिसँ तकैत बाजलि—"अहाँकें देखि नहि जानि कते खुशी लगतैक ।"

"खुशी लगतन्हि की दुख हैतन्हि ?"

"जाउ ! अहाँ सँ नहि बजैत छी ।"

विनय बाबू गद्‌गद भऽ गेलाह ।



१५

छोटानागपुरक वर्षामे विशेष आकर्षण अछि । पानि आयल आओर बरसि कऽ चल गेल । ने कतहु थाल, ने कीच ! आकाश स्वच्छ, धरती निर्मल । वर्षाक बाद प्रकृतिक रूप सद्यःस्नाता युवती सदृश प्रतीत होइत अछि ।

पानि खतम भऽ गेल छल परन्तु आकाश तखनहुँ मेघाच्छन्न छले । सामने पहाड़ पर मेघक समूह अपूर्व दृश्यक संगठन कऽ रहल छल। श्वेत-स्निग्ध तूरक फाहा सदृश मेघक टुकड़ी सभ ओहि कज्जल स्तूप पर बड़ सुन्दर लागि रहल छल। फेर जेना-जेना ओ सघन होइत गेल , ओहि पर श्यामताक आवरण चढ़ैत गेल । खिड़की लग ठाढ़ कमल विभोर भेल एहि दृश्यकेँ देखैत रहल ! ओकर भावुक कवि हृदय गुनगुना उठल :

हे यक्ष दूत ! तुम हो महान
आतप से व्याकुल वसुधा पर आए तू करने अमृत दान।
इस आषाढ़ के प्रथम दिवस में
आओ तेरा स्वागत कर लूँ ।
चिर दिन की प्यासी आँखों को।
तुमसे फिर जल लेकर भर लूँ ।
कृषकों के हे भाग्य विधाता।
हे पावस के प्राण !
फसलों के सूखे ओठों पर
देते तू मुस्कान।
बरसो-बरसो आज बिरहिणी की आँखों सी बरसो।
तरुणी के नवयौवन से मनभावन तू सरसो।

वर्षाक ई अभिनव रूप कमलक कल्पनाकें पाँखि लगा देलक। ओ दूर-दूर धरि बिचरण करए लागल। खिड़कीक बाहरक ई रम्य दृश्य ओकर सौन्दर्य-बोध मे नव उन्माद आनय लागल। ओ सोचय लागल रामगिरिक आश्रमकें, ओ सोचय लागल विरही यक्षकें, ओकर मनःस्थितिकें, अलकामे बेसलि यक्ष-प्रियाकेँ... आखिर ई सभ किऐक ?

आब जेना जीवनक नीरवता कमलकेँ काटि रहल छल। ओ धम्म सँ पलंग पर आबि बेसि गेल, जेना प्रकृतिक रूपमे आब कोनो लावण्य नहि रहल हो। फेर पड़ि रहल—किछु सोचय लागल आओर सोचैत-सोचैत जेना ओकर मन ओतयसँ कोसो दूर चल गेल हो।

एकाएक लगमे चूरी खनखना उठल आओर कमलक चिन्तन स्रोत भंग भऽ गेल। ओ उठि कऽ तकलक त देखलक खिड़कीक ओहि पार शेफालीकें।

अपन ठोर पर मुस्कानक रेखा अंकित करैत शेफाली बाजलि—"अहाँ जागले छिऐक ? हमरा सभकें होइत छल जे सूतल छी।"

कमल समुचित उत्तर दए जहाँ कोठली खोलबाक लेल उठय लागल कि शेफाली मना कऽ देलक—"नहि, अखन आराम करू" आओर अपन मंजुल हास्य बिखेरैत चल गेलि।

कमल ठाढ़ भेल देखैत रहल। शेफालीक मुस्कान—जेना एक अपूर्व आकर्षण छल हो ओहिमे! एहि बीचमे कमल जतेक शेफालीसँ दूर हटय चाहैत छल ततेक बुझि पड़ै छल जे शेफाली ओकरा हृदय पर अधिकार कैने जाइत हो। अखन फेर कमल एहि सुमधुर मुस्कानसँ अपनाकें उदासीन नहि राखि सकल। ओकरा आँखिमे शेफालीक मनोहर मूर्त्ति उमड़ि आएल—मने पंछी सन मुक्त, चंचल, चहकैत ओ भावमयी रमणी! सौन्दर्यसँ केओ कोना उदासीन रहि सकैत अछि ? आओर जखन सौन्दर्य ओ माधुर्य्य एकाकार भऽ जाइत अछि तखन त पुष्पधन्वा अपन धनुष ओकरहि हाथमे दैत छथिन्ह। शेफालीक हँसब, ओकर बाजब, ओकर संगीत सभमे अपूर्व आकर्षण छल। कमलकें किछु मन पड़लैक। ओ उठि कऽ लऽ आएल। कोनो पत्रिका छलै जाहिमे प्रकाशित एक कविताकें ओ गुनगुनाय लागल—

तों बिहुँसलो झरय लागऽ फूल।
खसि पड़ल सहजहिं तोहर प्रसन्नता कें जानि—
श्वेत दुकूल।
कमल सम कोमल तोहर सौख गात।
भुजा मे छल नव मृणालक कान्ति।
पुष्ट वक्षःस्थल युगल छविसार।
गिरि संधि मे शोभित परम ग्रिमहार।
की तोहर अतुलित प्रभाक उल्लेख—
कए सकत ई छन्द ?
पाबि किरणक स्पर्श होइछ, दीप-द्युति
अति मन्द।
छी विमुग्ध अतीव देखल रूप गरिमा।
विधिक तों निर्माण सखे तिलोत्तमा।
तों प्रकट भेलीह सखि, लय चन्द्रकेर सोलहो कला।
नील घन मे प्रस्फुटित अछिभेल की नव उत्पला ?
हे हमर चिरकल्पने ! हे चिर युवति !!
निश्चय तोंही छल हैबह विद्यापतिक वरयौवति।

कमल पढ़ैत-पढ़ैत विभोर भऽ गेल, जेना शेफालीक सौन्दर्य एहि पंक्तिमे उतरि आएल हो। निस्संदेह शेफाली कते सुन्दरि अछि ! आओर नलिनी ? जेना केओ ओकरा हृदयमे प्रश्न कैलक। कमल मने स्वप्नसँ जागि गेल हो। मनुष्य क्षणिक भावुकतामे कोना बहि जाइत अछि ? इहए त मनुष्यक दुर्बलता थीक।

ओकरा आँखिक सामने नलिनी प्रकट भऽ आएलि। 'नलिनी शेफाली जकाँ सुन्दरि नहि अछि ? की ओ शेफाली जकाँ चंचल नहि अछि ?' नहि जानि कते तरहक प्रश्न कमलक हृदयमे उठय लगलैक।

कमलक हृदय जेना वेदनासँ द्रवित भऽ उठल। ओकरा मनमे ई पूर्णत: स्पष्ट छल जे यदि ओ नलिनीसँ प्रेम करैत अछि त नलिनीक अतिरिक्त कोनो स्त्रीक विचार ओकरा नहि हैवाक चाही। तकरे प्रेम कहैत छैक। ओकरा बड़ खेद भेलैक जे एहन विचार ओकरा मनमे निरन्तर उठैत रहलैक अछि। 'त की नलिनीसँ ओकरा प्रेम नहि अछि।'—कमलक आँखिमे नाचि गेल ओ दृश्य जहिया नलिनी अपन मुँह कमलक छातीमे नुका लेने छलि। एक अपूर्व स्पन्दन भेल छलैक कमलकें। नलिनीक माथक एक सौरभ, एक सरस, मधुर सुगन्धिसँ ओ अभिभूत भऽ गेल छल। ओकर नाक भरि गेल छलैक। एक हल्लुक नशा जेना ओकरा साँसे शरीरमे पसरि गेल हो। एक अतृप्ति... एक उत्तेजना......आओर फेर नलिनीक व्याकुल भऽ कऽ भागि जैब ..

ई सभ सोचि कमलकें भेलै जेना शेफाली एक चंचल अबोध बालिका हो। कमल मनहि मन दुनूक तुलना कऽ लेलक। एक छल सतर्क सौन्दर्यसँ सज्जित त दोसर स्वाभाविक सुषमासँ सहमलि। एक केर ठोर पर छल मुस्कानक दीप्ति त दोसरक आँखिमे छल करुणाक असीम जलराशि। कमल इएह सभ सोचैत रहल, शेफालीक विषयमे...फेर नलिनी विषयमे...

आओर देखैत अछि जे नलिनीक अश्रु प्रवाहमे शेफालीक अस्तित्व अनायास बहि गेल अछि।

साँझ होइत वर्षाक मेघ फाटि गेल आओर आकाश निर्मल भऽ गेल। कमल एसकरहि टहलय बिदा भऽ गेल। एकान्त नदीक कातमे ठाढ़ भेल कमल देखलक जे पूर्णिमाक विशाल चन्द्रमा क्षितिज पट पर उठि रहल अछि। कमल एकटकसँ देखैत रहल आओर जेना-जेना ओहिमे लीन होइत गेल ओकर हृदय हल्लुक भऽ गेल।

जखन - जखन अपन प्रियपात्रक स्मरण-चर्चा होइत छैक त सुनत छी जे ओहि व्यक्तिके परदेशमे मन नहि लगैत छैक। कमलक संग प्रायः सैह बात भेल। ई दू-अढ़ाय मास कोना बीति गेलैक से किछु नहि बुझि पड़लैक। एहि अवधि मे घूमि-घूमि ओ कते नव स्थान देखलक। राँची जाय हुन्ड्रू क जलप्रपात देखलक। टैबो घाटी मे हिरनी झरना लग जाए वन-भोज कयलक। निकटवर्त्ती लुपुंगट्टूक अन्तःस्रोतक आनन्द लेलक। एकर अतिरिक्त लगपासक कल-कारखानाक भ्रमण कएलक। परन्तु आब एतऽ एको दिन काटब ओकरा लेल कोनादन लगैत छलैक। रहि-रहि कऽ ओकरा नलिनीक स्मरण भऽ अबैत छल आओर ओकरा लेल ओकर मन व्यग्र भऽ उठैत छल।

एक राति ओ सविस्तर घटना उपेन्द्रकेँ सुना देलक। उपेन्द्रक लेल जेना ई एकटा रहस्योद्घाटन हो। आध घंटाधरि उत्सुकता-

पूर्वक सुनलाक पश्चात् बाजल—"खैर आइ जेतना निराशा भेलऽ ओतनाए प्रसन्नतोह ।"

कमल ओकरा गुदगुदी लगबैत पुछलक—"निराशा कथीक भेलह ?"

"से बुझि जा ।"—कमल विभोर भऽ गेल ।

जहिया ओतयसँ कमल विदा भेल त बिछोहक मर्मान्तक पीड़ा भेलैक । तथापि जाहि स्मृतिक संबल लऽ कऽ ओ बिदा भेल से चिरन्तन छल । खाली एक नवीन उल्लास छल कमलक मनमे जे ओ अपन गाम जा रहल अछि—जतय नलिनी अछि—इएह बात, इएह विषय ओकर रोम-रोममे परिव्याप्त छल ।

चलबा काल ओ शेफाली दिश संकेत करैत कुसुमसँ कहलक—"भौजी, हिनका विवाहमे हमरा अवश्य बजाएब । हिनका वरकेँ देखबा लेल हमर मन लागल रहत ।"

शेफाली लजा कऽ कात चल गेलि परन्तु कुसुम उलाहना देबाक स्वरमे बजलीह—"आओर अहाँ अपन विवाह नहिं करबै की ?"

कमल मुस्कुरा कऽ चुप रहि गेल ।

प्रश्नक उत्तर उपेन्द्र देलक—"हिनका लए नइ मालूम कोन गौरी हिमालयके कन्दरामे बैसि तपस्या करि रहलौ छैन्ह ।"

कुसुम बजलीह—"आब जे आबी त 'गौरी' केँ सेहो संग लेने अएबन्हि ।"

समय अधिक भेल जाइत छलैक । कमल सभ गोटेसँ स्नेहपूर्वक बिदाइ लेलक । सभक आँखि नोरसँ आर्द्र भऽ उठल ।

१६

मातृक अएला पर जखन कमलकेँ ज्ञात भेलैक जे नलिनीक विवाह भऽ गेलै त ओ स्तब्ध रहि गेल ! ओकरा एहि बात पर विश्वास नहि भेलै। ई कोना भऽ सकै छल ? एतबहि दिनमे ई परिवर्तन ! ओकरा किछु बुझिए मे नहि अएलैक।

जखन कमल नलिनीक आँगन गेल त पदुमसुन्नरि ओसारा पर बैसलि गहूम बिछैत छलीह। एकाएक कमलकेँ देखि अपना आँखि पर विश्वासे नहि भेलन्हि। विस्फारित नेत्रसँ तकैत बजलीह—"के कमल ?"

कमल प्रणाम कए कऽ बैसल।

पदुमसुन्नरि अभिरोष करत बजलीह—'ह ! ह !! कत जा कऽ बैसि रहलाह। तोरा लेल कतेक अहुरिया कटलहुँ। हमरा सभकेँ एकदम बिसरि देने छला।"

कमल कें किछु नहिं फूरलै जे एकर की उत्तर देल जाय। ओ चुपचाप बैसल रहल।

"पास कएलह से पता लागत। नलिनी कबुला कएने छलि जे कमल भइयाक रिजल्ट नीक हैतैक त मधुर चढ़ायब। सुनि-तहि देरी चढ़ा अएलन्हि।"

कमलक आँखि बड़ी कालसँ नलिनीकेँ ताकि रहल छल। परन्तु ओहि विषयमे जिज्ञासा नहि कए सकल। नलिनीक विषयमे पुछबामे जेना ओकरा संकोच भऽ रहल छलै। परन्तु अपन कौतूहलकेँ ओ रोकि नहि सकल। ओकर चर्चा होइतहि स्वतः ओकरा मुँहसँ ई शब्द बहरा गेलक—'नलिनीकेँ नहि देखै छिऐक?"

पदुमसुन्नरि नलिनीकें शोर कएलथिन्ह। कमलक नाम सुनि पहिने त नलिनीकें विश्वास नहि भेलैक। तथापि लज्जामिश्रित कौतूहलक संग बाहर आएलि आओर बाजलि—'कहाँ गे?"

परन्तु माइक लगमे कमलकें सरिपहु बसल देखि घोर आश्चर्य भेलक। ओ किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेलि।

कमल नलिनीकें देखलक। ओकर शरीरक वर्ण सोन सदृश दमकि रहल छल। मुंह गुलाबक फूल सदृश प्रफुल्ल छल जाहि पर भौंह जेना केओ तूलिकासँ चित्रित कैने हो। पान खने ओकर लाल-लाल ठोर अत्यन्त सुन्दर लगत छल। पातर-पातर मणि-बन्धमे लाहक सुन्दर लहठी चमकि रहल छल। सीमन्तमे सिन्दूरक रेखा परम ज्योतिमान छल। विवाहक बाद रूपमे जेना नव आकर्षण आबि गेल हो।

कमल, नलिनीक एहि अभिनव रूपकें देखलक। बहुत दिनक पश्चात् एहि रूपकें देखने छल। मन प्रसन्न भऽ गलैक। बाजल — 'अच्छा ! नलिनी......।" नहि जानि की कहय जा रहल छल परन्तु चुप रहि गेल।

नलिनी पैर छूबि कमलकें प्रणाम कएलक।

नलिनीक ई नवरूप छल। ई प्रथम अवसर छल जे नलिनी एहि तरहें प्रणाम कएने छलि। ओ विस्मित रहि गेल। परन्तु ओकरा कंठसँ आशीर्वादक अस्फुट शब्द बहरा गेलैक।

नलिनीक विवाहक प्रसंग सविस्तर पदुमसुन्नरि कहि सुनौ-लथिन्ह। फेर जा कऽ विनय बाबूसँ परिचय कएलक। विवाह सुपात्रक हाथमे भेलैक ताहिसँ ओकरा मनकें सांत्वना भेटलैक।

बात-बिचार होइत-होइत साँझ पड़ि गेल। चारूभर अन्हार पसरि गेल। बिनयबाबूसँ बिदा भऽ कमल जहाँ असोरा पर आएल त देखलक नलिनी कें ठाढ़ि। अखन धरि ओ नलिनीसँ एकहु शब्द नहिं बतिआएल छल।

कमल प्रश्न कएलक—"प्रसन्न रहैत छैह ने ?"

नलिनी लजा गेलि। ओहिना गुमसुम रहलि।

कमल फेर पुछलक -"किछु बजलैह नहि ?"

नलिनी की उत्तर दितैक। ओहि दिश कर्णपात नहि कए बाजलि—"एतेक दिन कहाँ छलहक।"

नलिनीक प्रश्न जेना कमलक हृदयकें स्पर्श कए लेलक। ओ किछु सोचिए रहल छल कि आकुल कण्ठसँ नलिनी बाजलि—"तोहर बाट तकैत-तकैत आँखि पथरा गेल।"

कमल सोचितहि रहल जे की उत्तर देल जाय। मन जेना वेदनासँ भरि गेलैक। बाजल—"फेर दोसर दिन आएब। अखन जाइत छी।"

कमल आङन आबि ओछाएन पर पड़ि रहल। सोचय लागल—"त कि असले नलिनीक विवाह भऽ गेल?" जेना अखनहु ओकरा विश्वास नहि भऽ रहल छल। खैर! वर सुन्दर ओ सम्पन्न भेटलै, कमलकें संतोष भेलै जेना हृदय परसँ कोनो भारी वस्तु केओ उतारि लेने हो।

परन्तु नलिनीक बातमे जे एक रहस्यमय अन्तर्ध्वनि छल, ओ की छल?

रातिमे ओ सपना देखलक जे नलिनी लगमे ठाढ़ि अछि। ओकर आँखिसँ नोरक धार बहि रहल छल। कमल अपन धोतीक खूँटसँ ओकर आँखि पोछि देलक। अवरुद्ध कंठसँ नलिनी बाजलि—'तों कहाँ चल गेल छलाह?"

मुस्कुराइत कमल उत्तर देलक—"आब त आबि गेलहुँ। आब नहि कतहु जाएब।"

परन्तु नलिनीक आँखिसँ ओहिना नोरक वर्षा होइत रहल। ई देखि कमलक आँखि सेहो भरि आएल। ओ स्थिर नहि रहि सकल। प्रेम विह्वल भए नलिनीकें आलिंगनमे आबद्ध कए लेलक। आवेशमे बाजल—"आब तोरा हमरासँ केओ नहि छीनि सकैत अछि।"

नलिनीक समस्त शरीर भालरि सदृश काँपि गेल। अपनाकें मुक्त करबाक प्रयास करैत चित्कार कऽ उठलि—"भगवानक लेल हमरा छोड़ि दै कमल। आब हम विवाहिता छी।"

कमलक बाहुपाश ढील भऽ गेल। मुक्त होइत नलिनी बाजलि—"बताह नहि त!" ओकर नोर सुखा गेल छल। ठोर पर हँसीक रेखा विराजमान छल।

तावत कमल केर निन्न टूटि गेलैक। परन्तु स्वप्नक स्मरण कए अत्यन्त ग्लानि भेलैक। आखिर एक विवाहिताक प्रति एहि तरहक भाव ओकरा हृदयमे किऐक उठल? इएह सभ ओ सोचैत रहल।

कमलकेँ एहि बेर मन नहि लागल। आन बेर ओकर अधिकांश समय नलिनीक संग कटि जाइत छल। परन्तु एहि बेर त नलिनीक ओहिठाम जबामे जेना संकोच होइत छलै। नलिनी सेहो कमलक सोझाँ आब पहिने जकाँ कहाँ अबैत छलि। पहिलुका चंचलते जेना लुप्त भऽ गेल हो।

किताब पढ़ैत-पढ़ैत कमल थाकि जाइत छल आओर उतान भेल घरक छत दिश ताकि कल्पना लोक मे डूबि जाइत छल। जीवनक एकाकीपन सँ ओ उदास भऽ जाइत छल। बीच बीचमे ओकरा शेफालीक ध्यान आबि जाइत छल। ओकर हृदय कोनो आकर्षणक अनुभव करए लगैत छल। ई केहेन आकर्षण छल? ई कोन भावना छल? कमलकें उपेन्द्रक गप्प मन

पड़लै। ओ ओही विषयमे सोचय लागल। ओकरा चलबा कालक रूप स्मरण अएलैक जे विवाहक नाम सुनि ओ कोना लजा गेल छलि। आइ कमलक समस्त अभिलाषा ओकरहि पर केन्द्रीभूत भऽ आएल। ओ भागिक ओतहि चल जाए चाहैत छल।

फेर कुसुमक बात स्मरण भऽ अएलैक—"आबो त "गौरी" कें सेहो लेने अएबन्हि।

"गौरी"—कमल सोचलक। मन विकृत भऽ उठलै। जेना ओकर अतुलराशिक केओ अपहरण कऽ लेने हो। कतेक क्रिया-प्रतिक्रियाक उद्भावना ओकरा मन मे भेलैक। मस्तिष्क थाकि गेल आओर आंखि सँ वेदनाक धार बहि चलल।

एकाएक कमलक चेतना घूमि आएल। वैह बात। मनुष्य भावुकताक धारमे कतऽ सँ कतऽ बहि जाइत अछि। ओकरा अपना बुद्धिपर हँसी लगलैक। ओ टहलय बिदा भऽ गेल। गामक बाहर पोखरिक कातमे हरियर घास पर ओ बैसि रहल। प्रकृतिक रम्य वातावरणमे ओकरा शान्ति भेटलैक। रात्रिक अन्धकारमे ओकरा हृदयक समस्त विषाद हेराए गेल।

× × ×

पृथ्वी जेना-जेना अपना अक्ष पर घुमैत गेल तेना-तेना समय बितैत गेल। कमलकें एतय अयना मास दिनसँ अधिक भऽ गेल छल। आइ एकाएक कमलकें उपेन्द्रक पत्र भेटलैक। अपना पर क्षोभ भेलैक जे आइधरि ओ किऐक नहि एकोटा पत्र लिखलकैक।

आइ उपेन्द्रक पत्र पाबि ओकरा आँखिक सम्मुख शेफालीक मूर्त्ति प्रतिभासित भऽ उठल। कमल व्यग्रता पूर्वक ओहि पत्र के पढ़ैत गेल। बेश पैघ छल। उपेन्द्र कें उच्च शिक्षाक निमित्त बिलायत जैबाक छलन्हि। ताहि बिषय मे लिखने छलथिन्ह। अगिला मासमे जैबाक स्थिर भेल छलन्हि। कमलकें एहि समाचारसँ आन्तरिक प्रसन्नता भेल। कमल एकटा शुभकामनाक तार पठेबाक निर्णय कएलक।

तदुपरांत शेफालीक विषयमे लिखल छल। शेफालीक नामे देखि कमलक उत्सुकता जागि गेल। परन्तु समाचार पढ़ि ओ अवसन्न रहि गेल। शेफालीक विवाहक कथा प्रायः स्थिर जेना भऽ गेल छलैक। वर मेडिकल ग्रेजुएट छथिन्ह। विवाह प्रायः अगिला शुद्धमे होएतैक।

कमलक त जेना पैर तरक धरती ससरि गेल हो। से किऐक ? एहि भावान्तरकें ओ अपनहु नहि बुझि सकल। आइ शेफालीक विवाहक समाचारसँ ओ किएक चिन्तित भऽ उठल ? कमलकें कोनो कारण नहि भेटलै। ओ सोचैत रहल।

ओकरा आँखिक आगू असख्य चित्र नाचय लगलैक–अगणित बिसरल बात ओकरा मन पड़लैक—बाप, माय, नलिनी, शेफाली...जेना विचार सागरक ओ एक-एक टा द्वीप हो—

पिताक ओकरा स्मरण नहि छलैक। परन्तु अपन स्नेहमयी माइक अस्पष्ट चित्र अखनहु ओकरा हृदयमे अंकित छल। आओर फेर नलिनी...

ओ अपन जीवन पर विचार कएलक जे भगवान ओकरा प्रति एतेक कठोर किऐक भेल छथिन्ह ? किऐक ओ सभक स्नेह सम्पर्क सँ वंचित भऽ जाइत अछि ? ओ जकरहि सँ प्रेम करैत अछि सह किऐक ओकरा सँ दूर चल जाइत छैक। जीवनक ई केहेन विपन्नता थीक। अनायास ओकर आँखि भरि अएलैक जेना प्रकृति ओकरा भाग्यमे खाली नोरे देने हो।

आइ शेफालीक विवाहक समाचारसँ कमल के बड़ क्लेश भेलैक जेना ओकर कोनो आन्तरिक अभिलाषा—जकर पता ओकरहु नहि छलैक—नष्ट भऽ गेल हो। एक गहन उदासी ओकरा हृदयमे व्याप्त भऽ गेल।

त की ओ शेफालीसँ प्रेम करैत अछि ?

कमलकें मन पड़लैक जे शेफालीकें देखि एक दिन ओ कोना व्याकुल भऽ गेल छल। जेना साँसे शरीरमे एक मधुर हल्लुक नशा पसरि गेल हो। ओकर शरीर जेना तपि गेल हो आओर छातीक धुकधुकी बढ़ि गेल हो। जीवनक शून्यता जेना ओकरा काटय लागल हो। ओ जाकऽ ओछाओन पर सूति रहल छल तखन जाकऽ कतेक कालक बाद मनक आवेग शान्त भेल छलैक।

त की शेफालीक प्रति ओकरा प्रेम नहि छलै ? जखन उपेन्द्र ओकरा पुछलक त कोना ओकरा निभृत अन्तरमे एक दोसरो मूर्त्ति प्रकट भऽ उठल—ओ छल नलिनीक मूर्त्ति। शेफालीक एकटा उपलक्ष्य छलि—असल त छलि नलिनी जकरा सँ जेना कमलक चिरन्तन परिचय हो।

आइ फेर कमलकें अपना पर घृणा भेलै। जँ ओ नलिनीसँ प्रेम करैत अछि त दोसरक विषयमे किऐक सोचैत अछि। एहन बात नहि होमक चाही।

ओकर इच्छा होइत छल जे ओकरा हृदयमे बस एकमात्र विचार हो, एकमात्र आह्लाद हो जे हम नलिनीसँ प्रेम करैत छी।

तावत जेना केओ झकझोरि देलक—"परन्तु नलिनी त विवाहिता अछि।"

"आओर शेफाली" ? —कमल अपनासँ प्रश्न कएलक।

"ओकर विवाह ठीक भऽ गेल छैक।"

"प्रेम और विवाह"—कमलक मानसिक संतुलन एहि दुनू शब्दक संग अस्तव्यस्त भऽ उठल।

कमलकें आइ रंज चढ़लैक नलिनी पर, जेना वैह सभवस्तुक उत्तरदायी हो। ओ इएह सभ सोचि रहल छल ता' जेना ओकर अपनहि मन धिक्कारि उठल हो। "कि प्रेम ओ विवाह इएह टा जीवनक उद्देश्य छैक? जीवन कें क्षणिक भावुकता, क्षणिक प्रमादमे नष्ट करब कहाँ धरि उचित ?"

परन्तु एते विचारियो कऽ की कमल एहि सभ सँ तटस्थ भऽ सकल ? ई सभ सोचि जेना ओकरा जीवनसँ विरक्ति भऽ गेल हो। मनुष्य जखन कोनो अभिलाषाक पूर्त्तिमे असफल रहि जाइत अछि त ओकरा जँ जीवनक प्रति विरक्तिभाव उत्पन्न होइ त अस्वाभाविक नहि कहबैक। कमलक हृदयमे अनायास एक कोमल मधुर भावना उत्पन्न भेल छलक जे तत्कालहि जीवनक नितान्त

अभिलाषामे परिणत भऽ गेल छल। आइ ओहिना आकस्मिक ढंगसँ ओ नष्ट भऽ गेल जेना कने लेट भेलासँ गाड़ी छूटि जाइत छैक। एक बातक धरि ओकरा अत्यन्त कचोट भेलैक जे ओकरा एकर कोनो सूचना किएक नहि देल गेलक। ओ अपन निभृत अन्तरमे एक पोड़ाक अनुभव कएलक।

आइ कते दिनक बाद कमल नलिनोसँ भेंट करय गेल। देखितहि नलिनी बाजलि—"देखैत नहि छलिअह ?"

कमल मुस्कुराक एकर उत्तर टारि देलक।

बड़ी काल धरि नलिनीसँ गप्प करैत रहल। कमलमे वैह स्नेह, वैह आवेश देखि ओकरा आन्तरिक प्रसन्नता भेलैक।

संध्या भऽ गेला पर कमल बाजल—"आब चलैत छी नलिनी।"

"अखन वैसऽ ने।"

कमल उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। व्यग्र होइत बाजल—"हम जा रहल छी। तोरे सँ भेंट करए आएल रही।"

नलिनी किछु नहि बुझि सकल। बहुत दूर धरि संग आएलि। जनशून्यमार्ग मे कमल एकाएक ठाढ़ भऽ गेल। ओ किछु कहय चाहैत छल परन्तु स्वर काँपि रहल छलैक।

नलिनी किछु नहि बुझि सकलि।

"आइ हम जा रहल छी नलिनी।"—कमल दोहरौलक।

सशंकित चित्तसँ नलिनी पुछलक—"कतय ?"

Scanned by CamScanner

परन्तु कमल कतय जा रहल छल ? ओकरा अपनहि मनमे प्रश्न उठल—"हम कतय जा रहल छी ?" हठात् कोनो उत्तर नहि भेटलैक।

कमल जेबी सँ किछु बाहर कएलक—लाकेट लागल सोनक चेन छल। ओकरा ओ नलिनीक हाथ मे राखि देलक। बाजल—"हम एतय सँ जा रहल छी नलिनो। नहि जानि जे फेर कहिया भेंट हैत।"

नलिनी सहसा चौंकि गेल।—"कमल।"

"हँ नलिनी। ई चेन हमरा माइक छलन्हि। हम एहि मे खाली लाकेट लगबा देलिएक अछि—तोरा लाकेटक बड़ सिहन्ता छलौक ने ?"

आश्चर्य ओ दुख सँ अभिभूत स्वर मे नलिनी बाजलि "परन्तु ई हमरा...।

"हँ, तोरा"—तोरा विवाहक प्रति हमरो त किछु कर्तव्य अछि?

चेन घुमबैत नलिनी अनुनय पूर्ण स्वर मे बाजलि—"नहि, नहि से कोना हेतैक।"

ता' कमल ओकर दूनू हाथ पकड़ि लेलक—"हमरा बड़ दुख हैत नलिनी। तोरा सुखी देखबाक हमर बड़ अभिलाषा छल, ओ पूर्ण भऽ गेल। तोरा प्रसन्न देखि हमरा सभ दिन प्रसन्नता हैत। हमर कोनो मनोकामना आब बाँकी नहि रहल अछि नलिनी।"

कमलक बात सुनि ओ अपन नोर नहि रोकि सकल। ओ जेना चेतनाशून्य भऽ गेल हो। कमलक पैर खसैत चित्कार कऽ उठलि—"भइ...या!" परन्तु नलिनीक ई आर्त्तनाद ओहि निस्तब्ध वातावरणमे प्रतिध्वनित भऽ कऽ शान्त भऽ गेल।

दोसर दिन आएल। सूर्य उदय भेल, अस्त भेल, रात्रि भेल। प्रातःकाल भेला पर पुनः सूर्य उदित भेला। यथा समय फेर सूर्यास्त भेल मुदा केओ कमलकेँ नहि देखलक।

पदुमसुन्नरि चर्चा कएलथिन्ह। परन्तु नलिनी कोनो उत्तर नहि दऽ सकलि। खाली ओकरा आँखिसँ टप-टप नोर खसि पड़लैक।

१७

माय-बाप जन्महि टा दैत छैक। भाग्य अपनहि होइत छैक नलिनीक प्रसंग ई आओर स्पष्ट रूपसँ परिलक्षित होइत अछि। से जँ नहि रहितैक त एक निर्धन विधवाक कन्या भऽ कऽ ओ राजरानी कोना बनि जाइत। पदुमसुन्नरि जेहेन घर-वरक कल्पना नहि कैने हैतीह तेहेन कथा भेलन्हि। एक एक दिन आनन्द ओ खुशीक बीच कटल जाइत छल।

मिथिला मे जमायक बिदा हैबा कालक दृश्य अत्यन्त करुणोत्पादक होइत अछि। जहिया विनय बाबू बिदा भेलाह त समस्त गामक लोक देखय अएलन्हि। पदुमसुन्नरि यथासाध्य वर बिदाइ कएलथिन्ह। सभक आँखि नोर सँ भरल छल। एकहि टा आश्वासन छल जे मधुश्रावणी निकट छलेक। सभ आग्रह करैत कहलकन्हि—"पाहुन, मधुश्रावणी मे अवश्ये अबिहथि।" फेर विनय बाबू कोना कहितथिन्ह जे नहि आएब।

पतिक संग नलिनीक जीवन आनन्दपूर्वक कटि रहल छलैक। हुनका जएबाक पश्चात् ओ उदास छलि। कोनो काजमे मने नहि लगैत छलैक। जेना कोनो वस्तु हेराए गेल होइ आओर ओकरा ताकबाक पाछाँ ओ अपनहु हेराएल अछि। कोनो वस्तु की? ओ त छल ओकर सभसँ मधुर ओ प्रियतम वस्तु। एहि वियोगसँ ओ सदिखन व्यथित रहैत छलि।

एहि संग-संग जखन कमलक स्मृति भऽ अबैत छलक तऽ ओकरा औरहु मर्मान्तक पीड़ा होइत छलैक। ओकर पति ओकरासँ दूर चल गेल छथिन्ह परन्तु आब ओ हुनका बान्हि लेने अछि। कहियो ने कहियो आबहि पड़तन्हि। परन्तु कमल जेना सभ स्नेह सूत्रकेँ तोड़ि दूर चल गेल हो। कमलक अकस्मात चल गेलासँ नलिनीकें कम दुख नहि भेलैक। ओकर समस्त हृदय विषादसँ भरि गेलैक। ओ कतबहु प्रसन्न रहबाक चेष्टा करैत छलि तथापि ओकर हृदयगत विषाद समस्त मुखमंडलकें आच्छादित कऽ लैत छल। कमल कहाँ गेल? कत गेल? तकर कोनोटा सूचना नलिनीकेँ नहि छलैक आओर ओ ने ताहि लेल चेष्टा कएलक। ओ तऽ खाली कमलक भावान्तरकेँ पढ़बाक प्रयास करैत छलि।

आइ नलिनीकेँ मन नहि लागल। माय पछबरिया असोरा पर 'कृष्णजन्म' ठेकनाय-ठेकनाय कऽ पढ़ि रहल छलथिन्ह। नलिनी पुबरिया घरमे जा कऽ पड़ि रहल। हृदयमे विचारक तूफान उठय लागल—भावनाक द्वन्द्व शुरू भऽ गेल।

नलिनीकेँ मन पड़ल बाल्यावस्थाक ओ खेल जाहिमे कमल ओ नलिनी पति-पत्नीक अभिनय करैत छल। कतेक मधुर छल ओहो जीवन! प्रसन्नतासँ समस्त शरीर पुलकित भऽ उठलैक। आँखिमे उतरि अएलक कमलक निष्कलुष ओ सरल मुखाकृति। कमलकेँ ओ जेठ भाइ बुझैत आएल अछि। भ्रातृद्वितीयामे नोत लेल करैत छलैक। पदुमसुन्नरि कहल करैत छलथिन्ह—नलिनी एककरि नहि अछि, दू भाइ बहिन अछि। भगवान कमलकेँ ओकर भाइए बना कऽ पठौलथिन्ह अछि।

नलिनीक स्मृतिपट पर ओ दिन चल आयल। एकादशीक व्रत कएने छलि। कमल आओर ओ, जल चढ़ाकए महादेवक मन्दिरसँ अबैत छल। मनहिमन सोचैत छलि—"एकान्तमे कमलक संग देखि लोक की कहत।" आओर एतबाहि नहि ओकरा पूछियो देलक। परन्तु कमल ओहि आशंकाकेँ क्षणहिमे दूर कए देलक—"दू भाइ-बहिनकेँ देखि लोकक हृदयमे जे भाव उठैत छैक।" कतेक निष्कलुष ओ निष्कपट कथन छल। जेना हृदय उठिक कन्ठमे चल आएल हो।

कमलक विषयमे एहि तरहक कतेक बात नलिनी सोचैत रहलि। नलिनीक प्रति कमलकेँ नैसर्गिक स्नेह छल। जाहि बेर अबैत छल नलिनीक लेल कोनो ने कोनो वस्तु उपहारमे अनितहि छल। ई उपहार विशेषतः पुस्तकक होइत छल। नलिनीक पिता नलिनीकेँ भारती बनाबय चाहैत छलाह। परन्तु ओ त अल्पायुमे नलिनीकेँ छोड़ि चल गेलाह। नलिनी जँ आइ धरि

किछु पढ़ि लीखि सकलि अछि त कमलक संगति सँ। ओ कहियो पाठशाला नहि गेलि, कोनो मास्टरसँ नहि पढ़लि तथापि कमलक कृपासँ ओकरा सत्साहित्यक बहुत किछु ज्ञान भऽ गेलैक। ओएह कमल आइ छोड़ि कऽ चल गेलै। फेर तकर दुःख नलिनीकेँ कोना ने होइतैक। ओकर मन मलिन भऽ गेलैक। ओ सोचि नहि पबैत छलि जे कमलकेँ कोन बातक दुःख भेलैक जे एना रूसि कऽ चल गेल। ओकरासँ की अपराध भेल छलैक तकर ओ कनियो कल्पना नहि कए सकलि। कमलक प्रति जँ ओकरा हृदयमे दोसर भावना उदित भेल छलैक त ओ क्षणिक छल। मानव जीवनमे पग-पग पर भ्रान्तिक दर्शन होइत छैक। ओएह भ्रान्ति जँ आकर्षक भेल त शंकाक छायासँ दूरक वस्तु भऽ जाइत अछि। नलिनीक हृदयमे सैह भ्रान्ति छलैक। किन्तु किछुए दिनक अनन्तर ओहि क्षणिक आवेशक अन्त भऽ गेल। नलिनीकेँ अपन मिथ्याधारणाक ज्ञान भेलैक। तथापि ओ कमलक दिशसँ निश्चिन्त नहि भेल। ओहि सरल किशोरीक हृदयमे तरह तरहक भाव उठलैक ओकरा भय भेलैक जे कमल कतहु ई नहि सोचय जे नलिनी धोखा देलक—ओकर स्नेहक अपमान कैलक। परन्तु एतय त दोसरे विवशता छल। कमल ओ नलिनीमे भाइ-बहिनक स्नेह भऽ सकैत छल, पति पत्नीक प्रणय नहि। एहि विषयकेँ स्पष्ट करबा लेल ओ कतेक बेर सोचलक परन्तु जखन ओ देखलक जे सभ बात स्वतः शान्त भऽ गेल छैक त किछु नहि बाजलि।

पुनः एकाएक एहि तरहक घटनासँ ओ क्षुब्ध भऽ उठलि। एहि रहिकऽ चिन्ता होइत छलैक जे फेर कमलक दर्शन हैत की नहि। परन्तु हृदयक कोनो कोनमे दृढ़ विश्वास छल जे कमल ओकरा बिसरतैक नहि। बहिनिक निष्कलुष प्रेम जरूर ओकरा झोकि लाओत। फेर अपन आँखिक अर्घ्यसँ ओ कमलकें प्रसन्न कऽ लेत।

इएह सभ सोचेत-सोचैत नलिनी एक दीर्घ निश्वास लेलक। तावत केओ बाहरसँ शोर केलकै। स्वर चिन्हबामे नलिनोकेँ विलम्ब नहि भेलै। पहिने त बाहर जाइत लाज भेलै। फेर मायकें सूतलि देखि आङनसँ बहार गेलि। बाहर डाकपीन ठाढ़ छल। ओकरा हाथसँ चिट्ठी लए नलिनी फिरि आएलि। आँच-रक तरसँ लिफाफ निकालि ओहि पर लिखल अक्षरकें निहारय लागलि। ओकरा कनियो सोचय नहि पड़लैक जे ककर पत्र छैक। उत्कठा पूर्वक पढ़य लागलि।

हठात कमलक नाम देखि ओ चमत्कृत भऽ उठलि। विनय बाबू लिखने छलथिन्ह—"एकटा खुश खबरी सुनबेत छी। परन्तु शर्त जे मधुर खोआबय पड़त। काल्हि संयोगसँ ट्रेनमे कमल बाबूसँ भेंट भेल। पटना जाइत छलाह। अहाँक बड्ड तारीफ करैत छलाह! बड्ड, जाहिसँ अधिक हो नहि। कहलन्हि जे हमर नलिनी सर्वगुण सम्पन्ना अछि। ओ जाहिसँ प्रसन्न रहय से करबेक।"

नलिनी एहि समाचारकें एक साँसमे पढ़ि गेल। मन भेलक जे जल्दी माएकें सुनाबए। परन्तु लाजसँ एना नहि कए सकलि।

आइ ओकर बड़का आशंका दूर भेल छलैक। ओकरा अत्यन्त संतोष भेलैक। आनन्दसँ मन गद्‌गद भऽ गेलैक। आइ जेना ओकर समस्त विषादक अन्त भऽ गेल।

तकर बाद आओरो कतेक मधुर बात सभ छल—"अहाँक अतुलित रूपराशि हमरा रोम-रोममे उलझि गेल अछि। नहि जानि जे कहिया ओ दिन आओत जहिया ओहि रूप सौन्दर्यके पुनः देखि सकब।"

वियोगिनी नारीक लेल एहि मधुर सन्देशवाहकसँ आओर अधिक प्रिय कोन वस्तु होइतैक। ओ बेर-बेर चिट्ठी पढ़लक तथापि संतोष नहि भेलैक। ओ दुनू हाथें जोरसँ चिट्ठीकेँ छातीमे दबा लेलक। एक अभूतपूर्व स्पन्दन भेलैक। दुनू आँखि स्वतः झँपा गेलैक। ओ बेसुध भऽ गेलि। आओर ओहि मुग्धावस्थामे निन्न ओकरा अपना कोरमे सुता लेलक।

एहि तरहें दू मास बीति गेल। जेना-जेना मधुश्रावणी लगिचिआएल गेलैक अनुरागमयी नलिनी अपना हृदयमे कामनाक संसार सजाबय लागलि। एहि बेर अपन पतिसँ ओ एक रहस्यमय समाचार सुनाओत! जहिना रहस्यमय तहिना सुमधुर। जेना अनायास एहि समाचारसँ ओ अवगत भेल हो। ओहि विषयमे सोचिये कऽ नलिनी लजा गेलि।

आओर मधुश्रावणी आबि गेल। नहि जानि एहन मधुर शब्दक सृष्टि कोना भेल! मेघाच्छन्न श्रावणक एहि मिलन आयोजनकेँ मधु शब्दसँ युक्त नहि कएल जतैक त' आओर की

कहल जेतैक ? मधुश्रावणी वास्तवमे नवविवाहिताक मधुर पावनि होइछ। नलिनीक हृदय आइ रसउल्लाससँ परिपूर्ण छल, परन्तु बाहर छल संकोचक एक झिलमिल आवरण। नहि जानि जे कखन ओ सूति कS उठलि आओर फूल तोड़य चलि गेल। कनेलक फूलसँ ओकर फुलडाली भरि गेलैक। रातुक बर्षासँ सिक्त कनेलक फूल आ' रसस भीजलि नलिनी – दुनूमे अपूर्व समता छल।

जेना-जेना बेर उठैत गेल नलिनीक उत्सुकता बढ़ैत गेल। कोनो सवारीक घड़घड़सँ ओ साकांक्ष भS उठैत छ'ल। पदुमसुन्नरि प्रतीक्षामे आँखि ओछौने छलीह। सौंसे घर अरिपन सँ सुसज्जित भS अपूर्व ज्योति छिटका रहल छल।

परन्तु सभ केओ उदास भS गेल। साँझ पड़ि गेलक तइयो केओ नहि आएल। ई एक आश्चर्यजनक छलैक। नहि अएबाक की कारण भS सकैत छल ? हकार पुरनाहरिमे सँ केओ बजलीह—"एहन निशोख नहि देखल अछि। फेर की मधुश्रावणी दोहरा कS हैतैक ?" एही प्रतीक्षा, चिन्ता, आशंकामे राति बीति गेल। दोसरो कोनो समाचार नहि भेटलन्हि। पदुमसुन्नरि मलिन मुद्रामे बसल छलीह। आशंकासँ नलिनीक चित्त खिन्न छल।

ओहि दिन जखन गामक महिलागण प्रातःस्नानक लेल पोखरिक घाट पर उपस्थित भेल छलीह त सभकेँ सुनाकए सीतादाइ कहलथिन्ह—"जखन कर्म फुटैत छैक त अहिना फुटैत छैक।"

घाट परक आओर स्त्रीगण सभ जखन ई बात सुनलन्हि त अवाक रहि गेलीह। बुझि नहि सकलीह जे ककरा प्रसंग ई बात कहल गेल छलैक। सभकेँ उत्सुकतापूर्वक अपना दिश तकैत देखि सीतादाई पुनः बजलीह—"वैह पदुमसुन्नरि दऽ कहैत छी।"

एकटा प्रौढ़ा उत्सुकतापूर्वक पुछलथिन्ह "फेर कोनो नव बात भेलैक अछि की ?"

"मधुश्रावणीमे जमाय नहि ने अएलथिन्ह।"

"हँ—की भेलैक जे नहि अएलथिन्ह।"

सीतादाइकेँ जेना समाचार सुनेबामे विशेष आनन्द भेटि रहल छलन्हि। बजलीह—"बेचारी मसोम्मात बड़ मनोरथसँ कन्यादान कएने छलि। परन्तु भगबान सभ तरहेँ डुबा देलथिन्ह।"

सभक मुख पर विस्मयक चिह्न प्रगट भऽ आएल।

आगू जे सीतादाइ सुनौलथिन्ह से अत्यन्त करुणोत्पादक छल। ओकरा स्मरण कए आइयो शरीरमे रोमाञ्च भऽ उठत अछि। रूप गुण देखि नलिनीकेँ अप्सरा कहैत छल। रूपवती नलिनी निस्संदेह स्वर्गक अप्सरा छलि जे शापसँ च्युत भए एहि मर्त्य लोकमे जन्म लेने छलि। परन्तु ओ अखनो धरि शापमुक्त नहि भेल छलि। केओ कथीलै सोचनै हैत जे नलिनीक ई सुखद संसार सोनक लंका थीक। ओकर सौभाग्य देखि कानियो आशंकाक गुञ्जाइस नहि छलैक जे जीवनक मधुवन विषादक मरुस्थल मे परिणत भऽ जैतैक।

चन्दनपुरकें एकटा छोट मोट टापुए कहक चाही ! समुद्र त नहि तखन चारूभर नदीसँ घेरल अछि। शरदकाल मे त ई ओहिगामक शोभाकें बढ़ा दैत छैक। परन्तु साओन-भादवमे जखन ओहिमे बाढ़ि अबैत अछि त समस्त इलाका जलमग्न भऽ जाइत अछि। कोशीकें अपन निश्चित धारा नहि छैक। ओकर अपरिमित जल एहि नदी सभक माध्यमसँ बहैत अछि। फेर एहि अनन्त जलराशि कें देखि सहजहि समुद्रक महानताक कल्पना मनमे उठय लगैत छैक। एहि दू तीन मास धरि एहि गाममे जैबाक अएबाक सभ मार्ग बन्द रहैत अछि। आवा-गमनक एक मात्र साधन रहैत अछि नाव। एहन सुखदायक दोसर सवारी भेटब कठिन अछि।

परन्तु कखनहु कऽ इएह सुखदायी वस्तु दुखदायी भऽ जाइत अछि। विनय बाबू मधुश्रावणीक भार दोरक संग नाव पर बिदा भेल छलाह। किछुए दूर अएलाक पश्चात नाव तीव्रधार पड़िगेल। ओ अत्यन्त वेगसँ बहिचलल। सभकेओ घबड़ा जाइत गेल। कोनो तरहें ओकरा कात लए जैबाक प्रयास कएल गेल। परन्तु विपत्ति त एसकरे अबैत नहि अछि। नाव एकटा भासल जाइत गाछसँ टकड़ा गेलैक। कतबहु सम्हारबाक चेष्टा कएल गेल परन्तु सफल नहि भेल। एकहि क्षणमे सभ किछु भऽ गेल। नाव जल समाधि लऽ लेलक। ककरहु कोनो पता नहि चलल।

एहि दुखद घटनाकें सुनि सभ स्तम्भित रहिगेल। भगवान

एहनो क्रूर भऽ सकैत छथि तकर केओ कल्पना नहि कैने छल। ककरहु मुँह सँ एको शब्द बहार नहि भेलैक। खाली आँखिमे नोर भरि अएलैक। एहन-एहन घटना कते काल गुप्त रहि सकैत छल। एक कान सँ दोसर कान आओर फेर सौंसे गाम मे एकरहि चर्चा होमय लागल। सभक स्वर सहानुभूति सँ भरल छल। ककरहु डेग पदुमसुन्नरिक आङन दिश कऽ नहि बढैत छल।

सुखक समाचार सुनेवा लेल कम लोक भेटत। परन्तु दुखक समाचार भनहि ओ सहानुभूतिवश किएक ने हो लोक सुना अबैत छैक। पदुमसुन्नरि त सशंकित चित्त छलीहे, कनिये आभास भेटलासँ विपत्तिक अनुमान सहजहिं भऽ गेलन्हि। ओ छाती पीटि-पीटि कानय लगलीह। सौंसे आंङन लोकसँ भरि गेल। परन्तु एहि विपदावस्थामे ककरा एकर एतेक धैर्य छलैक जे सांत्वना दितैक। सोनक प्रतिमा सदृश नलिनीकें देखि सभक कोढ़ फाटि जाइत छल। नलिनीक दशा औरहु विचित्र छल। ई समाचार सुनि ओ किछु नहि बुझि सकलि, किछु नहि सोचि सकलि आ' ने मुँह खोलि कऽ कानि सकलि। जेना ओकर कंठद्वार रुद्ध भऽ गेल हो। खाली आँखि सँ नोरक अनवरत धार बहि रहल छल। रहि रहि कऽ चौन्ह आबि जाइत छलैक। कतेक चेष्टासँ लोक ओकरा होशमे अनैत छल।

आङन भरि मे लोक भरल छल परन्तु सभ जेना निरुपाय छल। सभक आँखिसँ खाली झर-झर अश्रुपात होइत छल।

१८

सुख मे हो अथवा दुख मे, समयक गति एक समान रहैत अछि। सुख मे ने दिन छोट होइत छैक आ' ने दुख मे पैघ। तथापि दुखक दिन काटब पहाड़ बुझि पड़ैत छैक। कहुना ओहो बीतिए जाइत छैक। केहनो भारी विपत्ति किएक ने होइ लोक धैर्य धारण करितहि अछि। वेह त एकटा अवलम्ब छैक। पदुमसुन्नरि धैर्य धारण कएलन्हि। नलिनी सेहो धैर्य धारण कएलक। दिन कहुना कऽ बितय लागल।

मुदा नलिनीक शरीर दिनानुदिन क्षीण होइत गेल। विषादक रेखा एकहु क्षणक लेल ओकरा आकृति परसँ हटैत नहि छल। राति-दिन जेना ओ किछु सोचितहि रहैत छलि। गामक स्त्रीगण देखि कऽ बाजथि—"ई हो छौड़ी वचतेक नहि। भगवान एहन भाग्य दुश्मनों कें नहि देथुन्ह।"

आओर नलिनीकें सेहो अपन जीवन निरर्थक बुझि पड़ैत छलैक। ओकरा आगू अवन पहाड़सन जीवन पड़ल छल। जीवनक प्रथमहि सीढ़ी पर जकरा हृदयकें एहन आघात लगैत छैक ओकरा जीवनक प्रति विरक्ति हैब स्वाभाविक छैक। नलिनीक लेल जीवनक प्रति कोनो आसक्ति नहि छल। संसारक एहि शोक संतापसँ जे मरि जाइत अछि सेह नीक।

परन्तु नलिनी कोना मरि सकैत छलि। ओकर स्वामी ओकरा छोड़ि कऽ चल गेल छलथिन्ह परन्तु अपन प्रेमक अक्षय स्मृति छोड़ि गेल छलथिन्ह। ओ एक एहन सम्बन्ध सूत्र छोड़ि गेल छलथिन्ह जकर रक्षा करब नलिनी अपन परम कर्तव्य बुझैत छलि। ओकर स्वामी ओकरा ऊपर एक महान उत्तरदायित्व सौंपि गेल छलथिन्ह। सुहागक एहि स्मृतिक रक्षाक लेल ओ जीवन धारण करत, जीवनक दुर्वह भार वहन करत परन्तु एहि कर्त्तव्य सँ विरत नहि हत। नलिनी उत्कंठापूर्ण हृदयसँ आहि दिनक प्रतीक्षा कऽ रहल छलि।

पदुमसुन्नरिक जीवनक ढंगे बदलि गेल छल। आङन सँ कतहु बाहर जायब-आयब छोड़ि देने छलीह। कतय जइतथि? हुनका सन भाग्यवालीकें बेसबोक लेऽ के कहितन्हि? दिन राति अपन दुर्भाग्य पर सोचैत रहैत छलीह। हँसब जेना बिसरि गेल छलीह। डरें कनैत नहि छलीह जे हुनका कनैत देखि नलिनी पर की बिततैक। घर आङन बिल्कुल निस्तब्ध रहैत छल।

साओन बीति गेल। फेर भादव आएल आओर ओहो चल गेल। वर्षाक अन्त भऽ गेल। शरद ऋतु आएल। जेना जेना समय बितैत गेल प्रकृतिक रूपमे परिवर्त्तन होइत गेल। तहिना लोक दुखकें बिसरैत गेल। परन्तु किछु दिनक पश्चात जखन नवकृष्ण बाबू अएलाह त ई सुप्त व्यथा पुनः एक बेर जागि उठल। वृद्ध नवकृष्ण बाबू अपन नोरक वेगकें नहि रोकि सकलाह। कल्पैत कहलथिन्ह –"ओ ओतबहि दिन धरि हमर छलाह। चल गेलाह। आब ओहिं लेल कानब व्यर्थ थीक।"

कतेक सांत्वनाक पश्चात् पदुमसुन्नरि नोर पोछि लेलन्हि। नवकृष्ण बाबू पुनः समधिनकें कहलन्हि—"आब तऽ वैह घर छन्हि। बेटा हमर चल गेलाह परन्तु पुतौह त हमर इएह छथि। हमरा तऽ कहबाक साहस नहि होइत अछि जे ओहि सुन्न घरमे कोना जैतीह.....।" ओ आगू बाजि नहि सकलाह। व्यथासँ कंठ भरि अएलन्हि।

पदुमसुन्नरिक धैर्यक अवसान भऽ गेल। एकाएक जेना बान्हल-धार टूटि गेल हो, आँखिसँ नोर बहि चलल। बड़ीकालक बाद कहबौलथिन्ह—"आब तऽ वैह घर छन्हि। जएतीह कोना नहि। तखन पाँच छह मास कोना जएतीह। कल्याणक योग्यता छन्हि।"

ई शुभ समाचार सुनितहि नवकृष्ण बाबू पुत्रशोक कें बिसरि गेलाह। आनन्दसँ विह्वल भऽ उठलाह। आन्तर प्रसन्नता व्यक्त करबा लेल शब्द नहि भेटलन्हि।

ई समाचार बिजली जेकाँ सौंसे गाममे पसरि गेल जे नलि-नी कें कल्याणक योग्यता छैक। किछु गोटे ईश्वरकें धन्यवाद देलथिन्ह। दोसर कटाक्षसँ एक दोसरक मुँह ताकय लगलीह।

पोखरिक घाटपर गामक विवाहिता तरुणीकें सम्बोधन कए सीतादाइ कहलथिन्ह—"सुनलही गे छौंड़ी सभ! नलिनीकें होनहार छैक।"

ललिता कहलकन्हि—"त एहिमे आश्चर्यक कोन बात भेलैक। एना तऽ कतेक ठाम भेलैक अछि।"

सीतादाइक आलोचक बुद्धि एकरा सहन नहि कए सकल। बजलीह—"तों किएक ने कहबहीं। दहीक गबाही चूरा। तोरा तऽ अपनहु घरमे एहिना भेल छौक।"

सीतादाइक अनुमान छलन्हि जे हुनका बातक केओ उत्तर नहि देतन्हि। किछु तऽ भयसँ, किछु श्रद्धासँ। परन्तु ललिता चुप रहयवाली नहि छलन्हि। ओकरा भौजीकें सेहो विवाहक दसम मासमे नेना भेल छलैक। ओहि विषयमे कतेक तरहक आलो-चना भेल छल। अतः ओ सीतादाइक कटाक्षकें सहन नहि कऽ सकलि—"से कि कोनो कलंकक बात भेलै। धियापुता भेनाई की कोनो अधलाह छैक। जे बात कलंकक छैक से तऽ लोक करितहि अछि तइयो अकरि कऽ चलैत अछि। तैं की कोनो बात छपित रहैत छैक।"

सीतादाई बुझि गेलीह जे ललिताक ई व्यंग हुनकहि पर छैक। पित्तें थर थर काँपय लगलीह। चिकरैत बजलीह "आँ गे

छौड़ी ! तोरा की होइत छौक जे बड़ बुधिआरि भऽ गेलहुँ अछि। हमरा मुंह लागल बाजय चललीह अछि। सट्ट दऽ जीभ पकड़ि कऽ भीकि लेब। बड़ सपरतीभ ! कहै छैक जे माथ करै कुटान पिसान.....।"

परन्तु ललिता जेना हिनकासँ लड़बा लेल बृत्त छलि। बात कटैत बाजलि—'तैं अहाँक आङन कहाँ किछु माङय गेलहुँ अछि। बड़ धनकानि छी त अपना घर। जैं लऽ कऽ खोरिसक रुपैया तैं ई चकमक।"

खोरिशक नाम सुनितहि सीतादाइ ललिताक सातो पुरखाक उद्धार करए लगलथिन्ह—"भगवानसँ कहुन्ह ने जे तोरो खोरिश भेटौक।"

ललिता हाथ चमकाबैत बाजलि—"कौआक श्रापे जँ....।"

घाट पर नहाइत आन लोक सभ देखलक जे बात आओर ने बढ़ि जाइ। एक गोटे सीतादाइकें शान्त करैत कहलथिन्ह—"इहो, धिया-पुता सँ लगैत छथि। लोको सुनतन्हि त की कहतन्हि।"

सीतादाइक जीवनमे एहन पराजय नहि भेल छलन्हि। आँखिमे नोर भरि अएलन्हि। कनैत बजलीह—"एकरत्तीक छौड़ी हमर अपमान कएलक। एकर बाप त सोभ भऽ कऽ हमरासँ बजबे नहि करैत छैक।"

दोसर गोटे संतोष देलथिन्ह—"जाए देथुन्ह ! आइ अधलाह दिन छलैक नहि त हिनका केओ कथा कहन्हि।"

सीतादाइक गेलाक पश्चात तरुणी दलमे गप्प होमय लागल। ललिता विजय गर्वसँ बाजलि—"केहेन के सहबन्हि? एकटा कहतीह दसटा सुनेबन्हि।"

सुशीला—"नीक कहलहुन्ह। बड़ जर्रानिआहि अछि। कहु त नलिनी दऽ एहन बात कोना बाजल गेलैक।"

निर्मला—"एक त बेचारी पर भगवान विपत्ति देलथिन्ह। दोसर इहो लोक कलंक जोड़ैत छेक। से की एना सन्तान नहि होइत छैक?"

ललिता—"सेह सीतादाइकें पुछहुन्ह ने। अपना त हाल साल तक... भैरव बाबू खाली ऊपरेसँ भाइ छथिन्ह।"

सुशीला चट्ट दऽ ओकर मुँह बन्द कऽ देलकै। बाजलि—"तोहूँ आइ बताहि भऽ गेलै अछि की? ओकरा दऽ सुनने नहि छहीं। सुनैत छिऐक जे पदुमसुन्नरि ओकरा विचारेँ नलिनीक विवाह नहि करौलथिन्ह तकरे फल भेटलन्हि।"

ललिता बाजलि—"जो, जो! सौ डाइनिक हम अपनहि एकटा छी। हमरा की करत। कांचे चिबा जएबैक।"

गाम पर जा कऽ पोखरि परक घटना कोन रूप धारण कएलक तकर उल्लेख अपेक्षित नहि अछि। परन्तु ई बात पदुमसुन्नरि ओ नलिनीसँ गुप्त नहि रहल।

१९

पदुमसुन्नरिक आनन्दक ओर-छोर नहि छलन्हि। आओर जहिया नलिनीक पुत्रक जन्म भेल तहियासँ तऽ घरमे प्रसन्नताक सागर उमड़ि आएल। एकटा आदमीकें एहि समाचारकें लय चन्दनपुर दौड़ाओल गेल। गामक महिलावर्ग नवजात शिशुकें देखय अएलीह। आशीर्वाद दैत गेलथिन्ह। नलिनी हास्य-रुदनक बीच सभटा देखैत रहलि।

पश्चात बच्चाक रूप-रंगक प्रसंग चर्चा चलल। एक जनी बजलीह—"बच्चा अनमन बाप सनक छैक।"

दोसर गोटे बजलीह-"बापक एहन सुन्दर मुँह कहाँ सँ

छलैक। एकदम माय सनक बच्चा छैक। भगवान एकरो जिअबथिन्ह जे बेचारीक मनोरथ पूर होइक।"

ता' सीतादाइ कहलथिन्ह—'अहू सभ ताले करैत छी। बच्चाक मुँह जकरा सनक हैबाक चाहिऐक तकरे सनक छैक।'

सभ विस्मय सँ हुनकर मुँह ताकय लगलथिन्ह।

पश्चात सीतादाइ पुनः बजलीह—"एकर मुँह एकदम कमल सनक छक।

सीतादाइक उक्ति सुनि सभकें आश्चर्य भेलैक। महिला-वर्गक बीच कटाक्षक विनिमय होमय लागल।

ओम्हर नवतूरक बीच दोसरे तरहक आलोचना भेल। सीतादाइक उक्ति सुनि ललिता बाजलि—"बच्चाक मुँह अनमन बैद्यजी सनक छक। ओहिना गोलमोल।"

भैरव बाबूकें लोक बैद्यजी कहल करैत छलन्हि। जखन ई बात सीतादाइक कान मे पड़लन्हि त भेलन्हि जे फेर ने झगड़ा बजरि जाय। ओ चुप्पेचाप ओतयसँ घसकि गेलीह।

पदुमसुन्नरि बजा कऽ पुछलथिन्ह—"एना किऐक बजैत छलहीं गे दाइ?"

ललिता बाजलि—"बूझलिऐक नहि। ओ डइनिया की बजैत छलि जे बच्चा मुँह कमल सनक छैक। तैं हम कहलिऐक जे एकर मुँह बैद्यजी सनक छैक। सुनितहि छिलमिलाकऽ भागलि। चोर कतौ इजोत सहय।"

पदुमसुन्नरि सीतादाइक उक्ति नहि सुनने छलथिन्ह। पाछू जखन आंगन खाली भेलैक त गोसाउनिक लग जाकऽ कानि कऽ कहलथिन्ह—"हे भगवती! अहाँ तऽ सभ जनैत छी। जे हमरा बेटीक कलंक जोड़ैत अछि तकर निसाफ अहाँ करबैक।"

चन्दनपुर जखन ई समाचार पहुँचल तऽ नवकृष्ण बाबू दौड़ल अएलाह। कतेक सनेशबारी आनलथिन्ह। पौत्र कें एकटा अशर्फी मुँहदेखाइ देलथिन्ह। पौत्रकें देखि पुत्रक स्मृति नव भऽ अएलन्हि। शिशुक मुख पर बड़ीकाल धरि विभोर भेल अपन पुत्रक आकृतिकें देखैत रहलाह।

नलिनीक अन्धकारपूर्ण भाग्याकाश मे ई शिशु प्रथम सायं-कालीन तारा सदृश उदित भेल छल। एहि पुष्ट ओ सुन्दर पुत्र कें पाबि ओ थोड़े कालक लेल अपन पतिक शोंककें बिसरि गेल। बैधव्यक बीच आइ सर्वप्रथम आनन्दक उपलब्ध भेलैक।

जखन कमल आयल तऽ एहन सुन्दर शिशु के देखि आनन्द विभोर भऽ उठल। कतेक दिनुक बाद ओ आयल छल। नलि-नीक दुर्भाग्यक समाचार ओकरा सँ अज्ञात नहि रहैक; मुदा ओहू परिस्थिति मे ने त ओ स्वयं अयबाक साहस कऽ सकलने दू अक्षर लिखि सहानुभूति प्रदर्शित करबाक धैर्य रहलैक। से आइ एतेक दिनुक पश्चात् कमल के देखि पदुमसुन्नरि अपना के रोकि नहि सकलीह। विपत्तिकाल मे आत्मीय के पाबि नोरक बाढ़ि स्वतः उमड़ि जाइत अछि। अधिक नोर बहने मनो हल्लुक होइत

छैक। एतेक दिन सँ दुनू माइ-धीक हृदय मे जे विषादक गहन मेघ एकत्र छल से जेना कमलक सहानुभूति पूर्ण स्पर्श पाबि अनायास बरसि पड़ल हो। कतेक बुझौल। उत्तर दुनू गोटे धैर्य धारण केलन्हि।

पश्चात् नलिनीक कोमल शिशु के कोर मे लैत कमल, पदुमसुन्नरि कें पुछलकन्हि—"एकर नाम की रखलिऐक अछि मामी ?"

"नाम की रखबेक ? दुखिया भऽ कऽ जन्म लेलक अछि सभ दुखिया कहैत छैक।"

कमलकें बड़ व्यथा भेलक। ब जल—"राम ! राम ! ई किऐक दुखिया रहैत ? एहन कतहु नाम रहैक ?"

पदुम०—"तखन तोंही किछु राखि दहक।"

कमल०—"बसन्तमे एकर जन्म भेलैक अछि। एकर नामो रहतैक बसन्त।"

एकाएक कोनो आन्तरिक प्रसन्नतासँ बच्चा खिलखिला उठल। कमल ब जल—"देखिऔ। एकरो अपन नाम पसिन्न पड़ि गेलैक।

पदुमसुन्नरि हँसय लगलीह।

* * *

परन्तु जीवनक क्रम सदिखन एक गतिसँ नहि बहैत अछि। नलिनीक जीवन मे आनन्द चिरन्तन कालक लेल नहि आएल छल। एक दिन कमल टहलि कऽ आबि रहल छल। चन्द्रकान्त

बाबूक घर लग आएल तऽ हुनक स्त्री खिड़कीसँ कहलथिन्ह—"की ऐ बाबू ! बेटाकें देखलहु ।" चन्द्रकान्त बाबू सम्बन्धे भाइ लगैत छलथिन्ह । कमल मुस्कुरा कऽ बाट धैने चल जाइत रहल ।

दोसर दिन जखन कमल आएल तऽ देखलक जे नलिनी उदास मुद्रामे बैसलि अछि । आइ जखनसँ ओ बूलि कऽ आएल छलि तखनहिसँ विषादक मूर्ति बनल छलि । आइ कतेक दिन पर बूलय गेल छलि । आनन्दी बाबूक आंङनसँ कतेक दिन ने कहा पठौने छलथिन्ह । बच्चाक दुआरे तऽ कतहु जाएब-आएब मुश्किल छलैक । दूपहर मे जखन आंखि लगलैक त मांय कहल-थिन्ह जे जल्दी भेंट कऽ आबहुन्ह ।

आनन्दी बाबू सम्पन्न लोक छथि । चारिटा बेटा छन्हि । चारूक व्याह भेल छन्हि । अखन चारू पुतौहु एतहि छलथिन्ह । नलिनीकें सभ केओ आवेशसँ बैसौलथिन्ह । बहुत दिनक बाद देखने छलथिन्ह । कते तरहक गप्प सप्प होइत रहल । प्रसंगवश कमलक चर्चा आएल ।

जेठकी कनियाँ पुछलथिन्ह-"ओ विआह नहि करथिन्ह की ?

त।' दोसर गोटे नलिनीकें संकेत करैत बजलीह—'एहन सुन्दर कनिया छोड़ि कथील व्याह करताह ।"

एहि व्यंगसँ नलिनी मर्माहत भऽ उठलि । बाजलि—"एना किएक कहत छी ऐ भौजी !"

छोटकी कनिया बजलीह—"कोनो बेजाए थोड़े कहत छथि ।

सभदेआदिनीक सम्मिलित हास्यसँ ओ कोठली गूँजि उठल।

नलिनीक हृदयमे हुनका लोकनिक हँसी तखनहु प्रतिध्वनि भऽ रहल छल। आन्तरिक पीड़ासँ मन क्षुब्ध छलैक। एहि दुर्भाग्यपूर्ण स्थितिमे केओ एतेक निर्मम भए उपहास कऽ सकैछ तकर ओ कल्पना नहि कैने छलि।

पदुमसुन्नरि आँगनमे नहि छली। कमल बैसि गेल। फेर नलिनी कें सम्बोधन करैत बाजल—"कालिह हम चल जाएब नलिनी!"

नलिनी एहिकें जेना नहि सुनलक। एकाएक प्रश्न कएलक—"आब तों ब्याह किएक नहि करैत छह?"

कमल स्तब्ध रहि गेल। बड़ आश्चर्य भेलैक। नलिनीक दिश देखलक जे ओकर आँखि डबडबा अएलैक अछि। बाजल—"हम नहि ब्याह करब नलिनी।"

"से किएक?"

कमल चुप छल।

नलिनी फेर प्रश्न कएलक।

"तोरा एना दुखी जीवन बितबैत देखि सुखी जीवन बितेबाक इच्छा नहि होइत अछि हमरा! एहि लेल हमरा क्षमा कर। बसन्तकें हम अपना संग रखबैक। ओहिमे हमरा सभ आनन्द भेटत।"—कमलक स्वर आर्द्र भऽ गेलैक।

परन्तु नलिनी दृढ़ता सँ बाजलि—'से सभ नहि हेतौह। तोरा नहि ब्याह कैने हमरा लोक की कहैत अछि....?"

"की ?"

नलिनी मुह खोलि कऽ किछु नहि कहि सकलि। कमल प्राय: ओकर मनक भाव बुझि गेलैक। ओकर मुख देखि ओकर अन्त: करण अवस्थाक ओकरा पूर्ण अनुमान भऽ गेलैक। हठात चन्द्रकान्त बाबूक पत्नीक बात मन पड़लैक। मनमें कतेक तरहक तर्क वितर्क उठय लगलैक।

कातर स्वरसँ बाजल—"हम व्याह नहि करब नलिनी। परन्तु आबसँ एहि गाम नहि आएब।"

नलिनी एहि तरहक उत्तर सुनबाक आशा नहि कैने छलि। किछु सोचि रहल छलि। ई सुनि चेहा उठलि।

अपन दिश तकत देखि कमल बाजल—"हँ आबसँ हम एतऽ नहि आएब। हम एहि शुभ्र हृदयमे कलंक नहि लागय देबैक।"

नलिनी निस्तब्ध भेलि सुनत रहलि।

कमल बाजल "हमहुँ बड़ अभागलि छी नलिनी! परन्तु तोहर स्नेह पाबि अपनाकें भाग्यवान बुझैत रही। नहि जानि जे फेर तोहर भेंट हैत।" आओर ओ बिदा भऽ गेल।

नलिनी किछु नहि बाजलि। खाली वेदना विह्वल एवं भावमग्न दृष्टिसँ कमल दिश तकत रहलि। लगैत छल जेना ओ चेष्टा कए कऽ नोरकें पीबि जाए चाहैत अछि। परन्तु दोसरे क्षण बान्ह टूटि गेल आओर नोरक बुन्द ओकरा गाल परसँ टघरय लागल।

२०

तकर बाद नलिनी कतेक बेर सासुर आएलि आओर गेलि। दिनानुदिन ओकर स्वास्थ्य खराबे होइत गेलैक। ओकर शरीरक सभटा कान्ति मलिन भऽ गेल छल। एहि अवस्थामे ओ वृद्धा सदृश लगैत छलि। चिन्ता शरीर के खा जाइत छैक आओर सैह चिन्ता नलिनीक शरीरकें खा रहल छलैक। बसन्त पाँच वरसक भऽ गेल छल। ओकरा देखि ओ दुख के बिसरबाक चेष्टा करैत छलि। परन्तु जकरा जीवनक सभ मनोरथ अपूर्ण रहि गेल हो, जकर सभ सुख सौभाग्य निष्ठुरतापूर्वक छिनि लेल गेल हो, ओ कतेकाल प्रसन्न रहि सकैत अछि?" जीवनक प्रभात मे पिता छोड़ि कऽ चल गेलथिन्ह। यौवनक

प्रभातमे पति छोड़ि गेलथिन्ह। भगवान कमल सन स्नेही भाय देलथिन्ह तकरा ओ अपनहि निर्दयता पूर्वक बैलाय देने छलि। कमलक स्मृति ओकरा औरहु बेचैन बना दैत छलैक। एक बेर जँ दर्शन होइतैक त क्षमा माँगि लितैक। परन्तु आब तकर कनेको आशा नहि छलैक। नलिनी अपन पुत्रकें देखि एहि सभकें बिसरबाक प्रयास करैत छलि, ओकरहि खयबा-खेलैबामे अपनाकेँ बिभोर कऽ दैत छलि परन्तु ओ थोड़बहि कालक लेल होइत छलै। छाउर तकर आगि जेना हृदयक चिरवेदना प्रकट भए उठत छल आओर ओ नलिनीक क्षणिक प्रसन्नताकेँ भस्म कऽ दैत छल।

एक त दुर्बल शरीर दोसर मानसिक चिन्ता। नलिनीके रोग ग्रसित कए लेलक। ओकरा विरोधमे ओ ठहरि नहि सकलि। किछु दिन धरि अन्ठयबाक प्रयास कएलक परन्तु अन्ततः शय्याग्रस्त भऽ गेलि। नलिनीक एहि दुःख सँ नवकृष्ण बाबू चिन्तित भऽ उठलाह। दवाइ-दारूक प्रबन्ध भेल परन्तु कोनो लाभ नहि देखल गेल। दिनानुदिन रोग जेना बढ़ितहि गेल। छ मास बीति गेल, शरीर जर्जर भऽ गेल। नलिनी पूर्ण अनुभव करए लागलि जे ओ आब किछु दिनक पाहुन अछि। फेर एहि संसारसँ ओकर सम्बन्ध समाप्त भऽ जेतैक। ओकरा माय मन पड़लथिन्ह। कमल मन पड़लैक। बसन्त पर ध्यान गेलैक। ई सभ सोचि ओकर आँखि भरि अएलैक।

नलिनीकेँ एना देखि लगमे बैसलि छविक कंठ भरि अएलैक। मुदा ओ नलिनीक आँखि पोछि देलक। एतय आबि कऽ इएह त एकटा अनन्य प्रेमी नलिनीकेँ भेटलैक अछि। ओना त नवकृष्ण बाबूक ओतय नोकर-चाकर कमी नहि छन्हि तथापि छवि भरि दिन नलिनीक सेवा शुश्रुषा मे लागल रहैत अछि।

एहि आख्यायिकामे छविक प्रयोजन अछि अतः ओकर परिचय देब आवश्यक अछि। छवि एहि गामक बेटी थीक। सभ दिन शहरहिंमे रहलि। एम्हरहि किछु दिनसँ गाममे रहैत अछि। पिता सरकारी अफसर छलथिन्ह। छवि हुनकहिं लग रहि पढ़ैत छलि। जखन बी० ए० मे छलि, रक्तचाप बढ़ि गेलासँ अकस्मात पिताक मृत्यु भऽ गेलन्हि। फेर सभ गोटे गाम चल अबैत गेलीह। पढ़नाइक क्रम टूटि गेलन्हि। गाम पर पित्ती छथिन्ह वह कर्त्ता भर्त्ता छथिन्ह। छविक बयश पूर्ण भेलैक। परन्तु एखन धरि अविवाहिते अछि। बाप जखन जीविते छलथिन्ह तखनहि विवाहक एकटा कथा उठल छलैक परन्तु कोनो कारणवश ओ कथा टूटि गेलैक। बाप जे कमेलथिन्ह से खर्चे कएलथिन्ह। परिवारक ई स्थिति नहि छैक जे दश पाँच हजार गनि कऽ नीक वर आनि सकत। एहन पढ़ल-लिखल कन्याकें ओना कोना फेकि देल जेतैक ? सभ केओ ताही सँ चिन्तित रहैत जाइत छथि। समाजक व्यंग ओ कटु-उक्तिसँ छवि मर्माहित रहैत अछि।

शुरू-शुरूमे जखन ओ आएलि त मन नहि लगैत छलैक। सर्वदा खिन्न ओ उदास रहैत छलि। जखन नलिनीसँ परिचय भेलैक त ओकरा मनोनुकूल संगी भेटि गेलैक। नलिनीक प्रति ओकरा ततेक स्नेहभाव बढ़ि गेलैक जे ओ भरि दिन ओकरहि लग बैसल रहैत छलि।

ओहि दिन नलिनीक क्लेश बहुत बढ़ि गेल छल। भरि दिन तेना बेहोश छलि जेना नशा पीने हो। छवि लगमे बसि पखा होंकैत छलि। भोरसँ साँझ धरि ओकरा कनियो फुरसति नहि भेटलैक। निरन्तर ओकरहि सेवामे लागल रहलि। संध्या कालमे जखन किछु होश भेलै त नलिनी देखलक जे छवि तखनहु ओहिना बैसल अछि। अपन क्षीण हाथमे ओकर हाथ लत बाजलि—"अहाँ अखन धरि छीहे?"

"त की हैतैक?"

नलिनीक स्वर द्रवित भऽ गेल—'अहाँक ऋण हम कोना चुकाएब। निश्चय ओहि जन्म हम दूनू गोटे सहोदर छल हैब।

आन्तरिक आनन्दसँ छविक आँखि भरि अयलैक।

अनुरोधपूर्ण स्वरमे नलिनी बाजलि—"आब बहुत अबेर भेल; जाउ....।" छविकें बिवश भए बिदा होमय पड़ल।

क्रमशः संध्या भेल आओर नलिनीकें निन्न आबि गेल।

रातिमे ओ सपना देखलक।

देखलक जे स्वर्गसँ ओकर प्रति शोर कए रहल छथिन्ह।

नलिनी बाजलि—"हम कोना आउ। हमरा त बाट नहि देखल अछि।"

"आउ ने हम देखा दैत छी।"

स्वर्गक द्वार पर गेला उत्तर स्वामी ओकर हाथ पकड़ि लेल-थिन्ह। नलिनी आब अत्यन्त प्रसन्न छलि। जहाँ ओ बिदा भेलि कि बुझि पड़लैक जे केओ पोछूहुँ टाँग पकड़ि कऽ भीकि रहल अछि। फिरि कऽ देखलक जे कमल अछि।

कमल भर्त्सना पूर्ण शब्दमे बाजल—'हमर जीवन नष्ट कऽ तों कहाँ भागल जा रहल छँह। से नहि हैतौक। हम तोरा स्वर्ग नहिं जाय देबौक।"

पतिक हाथसँ ओकर डेन छूटि गेलैक आओर ओ नीचा धरती पर खसि पड़लि। ओ जोरसँ चिचिया उठलि।

नलिनीक एहि चीत्कारसँ घर भरिक लोक जागि गेल। दौड़ि कऽ अबैत गेल त नलिनी वेहोश छलि। ओकरा होशमे आनबाक उपचार होमय लागल। डाक्टरकें आदमी पठाओल गेलन्हि।

डाक्टर आबि कऽ देखलथिन्ह। नवकृष्ण बाबू अपने चिन्तित भेल बाहर मे ठाढ़ छलाह। डाक्टर कहलथिन्ह-"कोनो खराब सपना देखलन्हि अछि, ताहिसँ डेराए गेलीह अछि। ठीक भऽ जैतन्हि।"

थोड़ेकाल बाद नलिनी कें चैतन्य भेल।

दोसर दिन नलिनीक मन नीक रहल। छवि सँ आग्रह करत बाजलि—"छवि दाइ! बहुत दिनसँ अहाँक गीत नहि सुनल। आइ कोनो गीत सुनाउ।"

छवि ओकर आग्रहक अवहेलना नहि कए सकलि ओ अपन मधुर स्वरमे गाबए लागलि।

सखि हे कान्हक नहि बिश्वास।
यमुना पुलिन कदम्बक कानन मुरली मधुर वजाय।
तन मन धन यौवन सरबस लै छोड़ि देल निरुपाय॥
पूर्ण कलाधर शरत निशामे कैल नृत्य आ रास॥ सखि०॥
प्रीतक लता लगाय बिदा भेल वनमाली भै क्रूर।
अनुपल क्षण जे रहै हृदय मे गेल कतै से दूर॥
लोक लाज जकरा लै त्यागल जगत करै उपहास॥ सखि०॥
श्याम मेघ विद्युतसँ मुसकात लगादेत अछि आगि।
वन वन कुसुम गंध सँ मातल विरह उठै अछि जागि॥
कृष्ण नाम लै भ्रमर कानमे कहि-कहि जाय उदास॥ सखि०॥

छवि गीत समाप्त कएलक तऽ देखलक जे नलिनीक आँखिमे नोर डबडबाएल अछि। छवि कें अपना दिश तकैत देखि नलिनी नोर पोछि लेलक। पुनः मुस्कुरेबाक प्रयास करैत छविसँ आग्रह कएलक—"एकटा आओर गीत कहियौक।"

छवि असमंजस मे पड़ि गेलि। बाजल—"कोन गीत?"

"ओहि दिन जे गौने छलिऐक। नहि जानि जे ओ गीत हमरा एतेक नीक किएक लगैत अछि।"

छवि पुनः दोसर गीत उठौकल—

तोमाय साजाबो यतने कुसुम रतने।
केयूरे कंकने कुंकुमे चन्दने॥

कुन्तले वेष्टिव स्वर्ण जालिका।
कंठे दोलाइव मुक्ता मालिका॥
सीमन्ते सिन्दूर अरुण सिन्दूर।
चरण रंजित अलक्त अञ्जने॥
सखी रे सजाबो सखार प्रेमे।
अलद्य प्राणेर मधुर हेमे॥
सजाबो सकरुण विरह वेदनाय।
साजाबो अक्षय मिलन साधनाय॥
मधुर लज्जा रचिबो सज्जा।
युगल प्राणेर वाणेर बन्धने॥

नलिनी प्रसन्न होइत बाजलि—"छवि दाइ! हमर इच्छा अछि जे अहाँकें अहिना सजबितहुँ। देखी जे ई अवसर कहिया धरि भेटैत अछि।"

छवि लजा गेलि। बुझि नहि सकलि जे नलिनीक अभिप्राय की अछि। खाली विमूढ़ भेलि नलिनी दिश तकैत रहलि।

२१

बनिहालक घाटी लग जा कए कमलकें एक बेर पाछू दिस तकबाक बड़ उत्कंठा भेलैक। परन्तु एकाएक लज्जा आबि कऽ ओकर मनोभावकें दाबि देलक। खाली सोचैत रहल जे रूपक आकर्षण कते तीव्र होइत छैक। पठानकोटमे जखन ओ सर्वप्रथम एहि रूपसीकें देखलक तऽ किछुकाल धरि ओहि दिश स्तब्ध भेल तकैत रहि गेल छल। तखनसँ बेर-बेर भरि आँखि देखबाक इच्छा होइत रहलैक। परन्तु लोकलज्जासँ ओ एना नहि कऽ पबैत छल। आखिर वैह की बुझितैक जे ई केहन अपात्र अछि जे घूरि घूरि कऽ हमरा दिश ताकि रहल अछि। ओकरा संग युवककें देखि ओ सहजहि अनुमान कऽ लेने छल जे ओ ओहि सुन्दरीक पति हेतैक।

कमल अगिला 'सीट' पर बैसल छल आओर ओ दूनू गोटा पछिला पर। 'बस' एगारह हजार ऊँच बनिहालक पहाड़ पर सों-सों कऽ चढ़ि रहल छल। एक दिश छल आकाशसँ गप्प करैत पहाड़ आ दोसर दिश अतल घाटी। काते काते कनछी पर दऽ कऽ सड़क छल। नीचा दिश तकितहुँ एकटा भय होइत छलैक। कनेक जँ मोटरक पहिया पिछड़ि जाए त पता नहि जे कतऽ जाकऽ रहत; एकर कोनो अस्तित्वो रहतैक की नहि। कमल एकबेर नीचा दिश तकलक। ओ सभ सड़क एकहिबेर दृष्टिगोचर भेलैक जाहि द्वारा ओ एतेक दूर धरि पहुँचल छल। 'कोनो निश्चित स्थान धरि पहुँचबामे मनुष्यकें कतेक चक्कर काटऽ पड़ैत छैक'—कमल सोचय लागल।

कमल एक मासक छुट्टी लए काश्मीर यात्राक लेल बहराएल छल। बहुत दिनसँ एहि यात्राक विचार छलैक। सरकारी प्रतियोगिता परीक्षामे सफल भेला पर एक प्रतिष्ठित पर ओकर नियुक्ति भेल छलैक। एहि चारि पाँच वर्षक अभ्यंतर ओ कतेक घुमल, कतेक नव स्थान देखलक परन्तु जीवनमे स्थिरताक अनुभव नहि भेलैक। बूझि पड़लैक जेना निश्चित स्थान धरि पहुँचबामे अखन ओकरा बहुत चक्कर काटऽ पड़तैक।

पठानकोट धरि रेलक यात्रा छलैक। अखन धरि ओ यात्रामे एकाकीपनक अनुभव नहि कएने छल। परन्तु एतय उतरला पर एकाकीपन जेना काटय लगलैक। एतेक दूरक यात्रामे ओ ककरोसँ बाजि नहि सकल, अपन मनोभाव नहि

व्यक्त कऽ सकल तऽ यात्राक आनन्द की ? ओकर महत्व की ? एहि शान्त पहाड़ी स्टेशन पर उतरि सर्वप्रथम कमलकें एकरहि बोध भेलैक। इएह सब सोचैत रातिमे ओकरा निन्न आबि गेलैक।

प्रातःकाल जखन ओ श्रीनगरक लेल 'बस' क विषयमे पूछय गेल तऽ एहि रूपसीक दर्शन भेलैक। ओहो अपन पतिक संग श्रीनगर जा रहल छलि। कमलक हृदय कोनो अज्ञात वेदनासँ अभिभूत भऽ उठल। ओ 'बस' मे सीट रीजर्व कराय ओतयसँ चल आएल।

दिनमे बारह बजेक करीब ओतयसँ 'बस' खुजलैक। आगू हिमालयक श्यामश्रृंखला दृष्टिगोचर भऽ रहल छल। सड़क उभड़-खाभर मैदान दऽ कऽ छल। एना प्रतीत होइत छल जे 'बस' दौड़ि कऽ पहाड़क चोटीकें छूबय जा रहल अछि। जम्मू धरि इएह रूप रहल। तकर बाद घाटी शुरू भेल। प्राकृतिक सुषमाक दर्शनमे कमल विभोर भऽ गेल।

रात्रिमे बस 'कूद' मे ठाढ़ भऽ गेल। कमल डाकबंगलाक एकटा कोठलीमें डेरा राखलक। लगक कोठलीमे ओ दम्पति छलाह। भोरमें कमल निन्न टूटल त देखलक जे पहाड़क चोटी पर सूर्यक प्रकाश पसरि गेल अछि। प्रभातक ओहि किरणसँ पार्वत्य प्रदेशक हरीतिमा अत्यन्त निर्मल लागि रहल छल। शीतल पहाड़ी हवा जेना नव चेतनाक संचार कय रहल छल। प्रकृतिक एहन मोहक रूप कमल आइ सर्वप्रथम देखने छल। ओ

स्थिर भावें ओकर दर्शन करैत रहल।

कमल तखन धरि ऊपर पहाड़े दिश टकटकी लगौने छल। नीचा नजरि गेलैक त विस्मित रहि गेल। डाकबंगलाक नीचा पार्क मे वैह अपरिचिता टहलि रहल छलीह। प्रभातक ओहि स्निग्ध वातावरण मे रमणीक अनिद्य सौन्दर्य देखबाक योग्य छल। कमल ओहि रूप दर्शनमे लागल छल ता एकाएक सुन्दरीक ध्यान कमल दिश आकृष्ट भेल। ओ लजाकए दोसर दिश देखय लागलि।

यात्रा पुनः प्रारम्भ भेल। 'बस' जेना सौन्दर्य सागरकें चीरैत जा रहल हो। स्थान-स्थान पर झरनाक सुमधुर नाद, कतहु कलकल निनाद सँ बहैत नदी, चीरक पातकें चीरि-चीरि बहैत शीतल बयार मन कें मोहि रहल छल। एहि अतुल सौन्दर्यसँ केओ किए अघाएत!

कमल तहिना तृषित भेल प्राकृतिक सुषमाक पान कए रहल छल। 'बस' अपन गतिसँ पार्वत्य नीरवताके भंग करैत चल जा रहल छल। एहि सौन्दर्य दर्शनक बीच कमलके एहि रूपसीक ध्यान आबि गेलैक। आखिर प्रकृतिएक दोसर नाम ने नारी छैक? ओकरा विषयमे सोचैत कमल कतेक बात ने सोचि गेल।

बनिहालक सुरंगमे जइतहि एकदम सँअन्हार भऽ गेल। एहि आकस्मिक घटनासँ कमलक चिन्तन क्रम टूटि गेल। एते समयमे ओ कहाँ सँ कहाँ भासि गेल।

गाड़ी सुरंग सँ बाहर भेल तऽ कमलक ध्यान पुनः प्रकृतिक रूप-वैभव दिश गेल। आब खाली उतार छल। ऊपर पहाड़ परसँ श्रीनगर घाटीक शोभा बड़ रम्य लागि रहल छल। ठाम ठाम बसल छोट-छोट बस्ती, चारूकात बहुरंगी फूल-पातसँ सुशोभित गाछ-वृक्ष दूरसँ देखलासँ कोनो कलाकार द्वारा अंकित चित्र प्रतीत होइत छल। सायंकालीन सूर्यक किरणसँ स्नात ओकर रूप और्हु भव्य छल।

सूर्यास्तक पश्चात सन्ध्याक धूमिल आँचर पसरैत गेल। किछुकाल बाद चन्द्रोदयक पश्चात प्रकृतिक ओ प्रांगण पुनः देदीप्यमान भऽ उठल।

बहुत राति बितला पर 'बस' श्रीनगर पहुँचल। कमल एकबेर फेर स्नेहपूर्ण दृष्टिसँ ओहि अपरिचिताकें देखलक। परन्तु पिपाशा शान्त नहि भेलैक। ओ एक दीर्घ निश्वास लए होटल दिशक बिदा भऽ गेल।

दोसर दिन भोर होइतहि कमल होटलक बालकोनीमे ठाढ़ भए शहरकें देखबाक चेष्टा कएलक। आगू छल दूरदूर धरि पसरल डल झीलक हरियर-कचोर विराट जलराशि आओर पृष्ठभूमिमे ठाढ़ छल शंकराचार्यहिल केर श्यामल शिखर। कमलकें शीघ्रातिशीघ्र बूलय जएबाक इच्छा भेलैक। स्नानदिसँ निवृत्त भए जलपान आदिक पश्चात ओ जखन नीचा उतरल त आश्चर्य चकित रहि गेल। ड्राइंगरूम लगक कोठली मे बैह

दम्पति ठहरल छलाह। कमल विस्मय-विमुग्ध भेल टहलय चल गेल।

घूमि कS अएलाक पश्चात जखन कमल 'डाइनिंग हाल' मे भोजन करए गेल त देखलक जे ओकर अपरिचित मित्र पहिनहि सँ ओतय बैसल छथि। हुनक पत्नी ता' ओतय नहि छल-थिन्ह। एक दोसरकें देखि दुनूक ठोर पर हँसीक रेखा प्रकट भS गेल, जेना दुनू एक दोसरासँ परिचय करबः लेल उत्सुक होथि। कमल जखन सुभ्यस्त भS कS बैसल त पहिने ओएह प्रश्न कएलथिन्ह। जखन हुनका ज्ञात भेलन्हि जे कमल पटनासँ आबि रहल छथि त हुनक आनन्दक ठेकान नहि रहल। गद्गद् होइत बजलाह—"हमहूँ त ओतहि सँ आबि रहल छी। कहू त! 'बस' मे ओतेक काल संग रहलहुँ परन्तु कोना अपरिचित जकाँ बैसल रही। हमरा त कतेक बेर ने इच्छा भेल जे पूछी...।"

'परन्तु'—कमल मुस्कुराइत बाजल।

"नहि जानि जे फेर किऐक चुप रहि जाइत रही।"

तावत हुनक पत्नी सेहो अएलथिन्ह। ओ अपन पत्नीसँ उल्लसित होइत बजलाह—'बुझल ऐ! ईहो पटनासँ आबि रहल छथि। ओतेक काल एक संग रहलहुँ, से कथी लै टोका-चाली हैत। एही होटलक उपरका कोठलीमे ठहरल छथि।"

सुन्दरी अपन दुनू हाथ जोड़ि हुनक अभिवादन कएलथिन्ह।

Scanned by CamScanner

कमल एहि अभिवादनक उत्तर दए अपन अपरिचित मित्रसँ पुछलथिन्ह—'अपनेक शुभ नाम ?"

ओ उत्तर देलथिन्ह—"हमर नाम अछि सुनील कुमार।"

"आओर हमर नाम अछि कमल"—कमल प्रश्नक प्रतीक्षा बिनु कएनहि बाजल।

एकाएक कुमार साहेब खिलखिला उठलाह। रमणीक ठोर पर सेहो हास्यक रेखा अंकित भऽ उठल।

कमलकें अप्रतिभ देखि वैह बजलीह—"बुझल नहि। हमर नाम अछि कमला तें हिनका हंसी लगलन्हि।

आब कमल सेहो हँसीकें रोकि नहि सकल।

कमला बजलीह—"अहाँ त एकसरहि छी ?"

कमल उत्तर देलक—"से त भरि बाट देखबे कएलहुँ अछि।"

कमला पुनः कटाक्षसँ प्रश्न कएलन्हि—"से त देखल अछि, परन्तु ई एसकरक यात्रा की फूरल ?"

कमल त स्वयं एहि बातक अनुभव कए रहल छल। एकाएक ई प्रश्न जेना ओकरा हृदयकें छूबि लेलक। तथापि ओ सहजहि उत्तर देलक—"विश्वास छल जे एतय अहाँ सभ सन संगी भेटि जैत।"

एहि उत्तरस कमला लजा गेलीह। पुनः अपना पति दिश तकैत बजलीह—"आब हमरा सभक संग बढ़िया रहत।"

भोजनोत्तर विचार भेल जे डल झीलक सैर कएल जाए। एकटा 'शिकारा' ठीक कएल गेल आओर तीनू गोटे नौका-बिहारक लेल प्रस्थान कएलन्हि। किछु दूर जा कऽ डलझील फुलाएल कमलक शोभा सँ अपूर्व रूप धारण कएने छल। शिकारा ओही कमल वनकें चीरैत जा रहल छल। डाँड़सँ उड़ैत पानिक छिटका कमलक पात पर पड़ि मोतीक रूप धारण कए रहल छल। कमल ओ कुमार साहेब थोड़ेरास फूल तोड़लन्हि। कमला मरालिनी सदृश ओकरा कुतरि-कुतरि खाए लगलीह।

सन्ध्या बीतल 'गोल्डेन आइलैंड' मे। एहि विराट जल-राशिक बीच ई छोट भूखंड बड़ भव्य लगैत छल। कातेकात चिनारक गाछक शोभा अद्भुत छल। बीच मे छल पार्क। सभ केओ एक बेंच पर बैसि बड़ी काल धरि गप्प-सप्प कएलन्हि। ओतहि चाह बनाओल गेल। आओर जखन चन्द्रमा झीलक जल पर अपन किरण जालसँ चित्रकारी करए लागल तखन ओ लोकनि होटल घूमि क अएलाह।

कुमार साहेबक विचार भेलन्हि जे होटलमे नहि रहि कोनो हाउसबोट ठीक कएल जाए। कमल सेहो अनुमोदन करैत बाजल—"हँ, होटलमे त लोक सभ शहरमे ठहरैत अछि परन्तु हाउस-बोट त खाली श्रीनगरेक विशेषता छेक।" कमल कें सेहो ई विचार पसिन्न पड़लन्हि। अतः दोसर दिन प्रातःकाल

एक नीक हाउस-बोटक अन्वेषण कएल गेल आओर सभ केओ ओहीमे डेरा लऽ जाइत गेलाह।

अपराह्नमे सभ केओ श्रीनगरक ख्याति प्राप्त मुगल बागक सभक दर्शन करए गेलाह। ई बाग सभ मुगलकालीन वैभवक अक्षयकीर्ति अछि। मुगल बादशाह लोकनि अपन काश्मीर यात्रामे एहि केर निर्माण करौने छलाह। एहि बाग सभमे दू अत्यन्त प्रसिद्ध अछि--शालीमार ओ निशात। परन्तु शालीमार ओ निशातक यदि तुलना कएल जाए त निशातक संग किछु विशेषत्वक बोध हैत। कलाक दृष्टिसँ एकरूपता रहितहुँ निशात बागक स्थापना किछु एहेन ठाम अछि जे ओकर सौन्दर्यकें बढ़ा दैत छैक। पृष्ठभूमि मे पहाड़ आओर सम्मुख झील, निशातक सौन्दर्यमे चारि चन्द्रमा जड़ि दैत अछि---निशात बाग जेना मुग्धा नायिका सदृश पहाड़क कोरमे सूतल हो आओर डल झील जफल परिचारिका सदृश आकर पैर पखारैत हो।

शिकारा सँ उतरि कुमार साहेब एक बेर ऊपर बाग दिश तकलन्हि आओर बजलाह--"एतय आबि जहाँगीर ओ नूरजहाँक स्मृति सजग भऽ उठैत अछि।"

कमला गर्वसँ मुस्कुरा उठलीह।

फेर तीनू गोटा सीढ़ीसँ चढ़ि ऊपर बागमे अएलाह।

कमला किछु थाकि गेल छलीह। अतः मखमली दूबि देखि ओहि पर बैसबाक लोभकें संवरण नहि कऽ सकलीह।

कुमार साहेब "गाइड टू काश्मीर" उनटौलन्हि आओर नूरजहाँ एवं जहाँगीरक प्रेम तथा निशात बागक कथा बाँचय लगलाह।

'नूरजहाँ ओ जहाँगीर!"--कमल एही विषयमे सोचय लागल। ओकरा इतिहास मन पड़लैक। मेहर ओ सलीमक बाल्यावस्थाक प्रेम! फेर शेर अफगानसँ ओकर विवाह आओर अन्तत: दूनूक पुनर्मिलन।

नूरजहाँ ओ जहाँगीर ..... नलिनी ओ कमल, दूनूक स्थिति त तेहने अछि-- अनायास कमलक मस्तिष्कमे ई बात घूमि गेल।

आओर ओकरा हृदयमे निहित कोमलतम एवं सुकुमारतम भावना एक रहस्यमय ढंगसँ जागि उठल। परन्तु ओ तत्काल सजग भऽ गेल "हम ई सभ की सोचि रहल छी?"

ओकरा अपनहि पर घृणा भेलैक। मन घोर भऽ गेलैक।

पाँच बर्ष पहिनहि ओ नलिनीक लगसँ आएल छल। तकर बाद ओ ओतय गेल नहि। एक मात्र एही हेतु जे केओ ओकर शुभ्र चरित्र पर कलंक नहि लगा सकै। तखन फेर आइ ई सभ ओ की सोचय लागल अछि?

कमल एक बेर हिमालयक चोटी दिश ताकलक जाहि पर कहियो महादेव तपस्या कएल करैत छलाह जनिक नेत्रक ज्वालासँ कामदेव दग्ध भऽ गेल छल। कमलक इच्छा भेलै जे दौड़ि कऽ ओतए चल जाए। हठात ध्यान नीचा दिश गेलै तऽ देखलक

जे बसात सँ बागक फूल सभ लहरा रहल अछि। कमल देखैत रहल। अखिर एहू दिससँ केओ कोना उदासीन भऽ सकैत छल ?

कमल कें एहि प्रकारें निमग्न देखि कमला पुछलथिन्ह "तखन सँ की सोचि रहल छी ?"

कमलक ध्यान भंग भेल। ओ बाजल—"कहाँ किछु ?"

कछु त जरूर सोचि रहल छलहुँ। नहि कहब से कोना मानब।"

"त अही कहू जे की सोचेत रही ?"

कमला किछु असमंजस मे पड़ि गेली। किछु नहि फुरलन्हि। उत्तरक बदला कमलक सम्मुख नव प्रश्न लए उपस्थित भेली—"अच्छा ! अहाँ अखन धरि विवाह किएक नहि कएल अछि ?"

कमल कें किछु आश्चर्य भेलै। लज़ाइत टोनमे बाजल—"एका-एक ई प्रश्न कोना फुरल ?"

"से किऐक ! अप्रिय लागल की ?"

"नहि अप्रिय किएक लागत। परन्तु आश्चर्य त अवश्य भल अछि। एना सन जे अखन हम ताही दऽ सोचि रहल छलहुँ।"

तीनूक सम्मिलित हास्यसँ ब गक ओ कोन गुंजि उठल। पाछू कमल जिज्ञासा कएलक—"अहाँ कोना जानल जे हम अविवाहित छी ?"

कमला किछु उत्तर देबासँ पूर्व लजा गेलीह। पुनः बजलो—

"जीवन मे अनुभवो त किछु होइत छैक। अहीं बूझू जे हम कोना बुझि गेलहुँ।"

कमल आश्चर्य सँ सुन्दरी दिश तकैत रहल।

कुमार साहेब बजलाह—"कमल बाबू! हिनका सभक पार पाएब सम्भव नहि अछि। अपन अनुभव ओ अनुमानक बलें नहि जानिजे ई सभ की ने सोचि लेथि।

एहि हास्य ओ विनोदक बीच मे एकटा छौंड़ा थोड़ेक फूल लए कमलाक सेवामे उपस्थित भेल।

कुमार साहेब ओ फूल ओकरा हाथ सँ लऽ कऽ अपन पत्नी कें देलन्हि आओर ओहि छौंड़ा कें एकटा चौअन्नी दऽ कऽ विदा कयलथिन्ह।

कमला फूलक एकटा पैघ थौका लए अपना खोपा मे खोंसि लेलन्हि आओर पति दिश ताकि मुस्कुरा उठलीह।

कमल एक बेर कमलाक केशराशि मे शुक्रतारा सदृश शोभायमान ओहि फूलके देखलक। फेर लजाकय दूर हिमालयक चोटी दिश ताकय लागल जाहि पर कोनो देवदारक छोट-छीन गाछ सूर्यक किरण मे एहन प्रतीत होइत छल जेना हल्लुक हरियर परिधान पहिरि स्वयं पार्वती लास्यक मुद्रा धारण कएने होथि।

गुलमर्ग काश्मीरक सुरम्य स्थान अछि। स्निग्ध-हरियर दूभि, ऊँच-ऊँच पाइन ओ फर केर गाछ, अविराम गतिसे बहैत नाला

एवं प्रपात आओर हिमाच्छन्न पर्वत शृंखला गुलमर्गक नैसर्गिक सुन्दरता कें अद्भुत रूप प्रदान करत अछि। 'गुल' शब्द फूलक पर्यायवाची अछि आओर 'मर्ग' सँ मैदानक बोध होइत अछि। वास्तव मे नव-वसन्तक सौरभ सँ गर्वित गुलमर्ग अपन नामक सार्थकता कें प्रमाणित करैत अछि। तीनू गोटे जखन एहि सुरम्य स्थान कें देखय अएलाह तऽ दू-चारि दिन एतय रहबाक लोभ नहि छोड़ि सकलाह। मैदान सँ किछु हटि चीर ओ फरहदक वन मे एकटा 'काटेज' भाड़ा पर लेल गेल। चीर ओ फरहद एहि भू-भागक दुइमात्र वृक्ष। पहाड़क चोटी सँ स्पर्द्धा रखनिहार एहि दूनू वृक्ष मे एक अपूर्व सौन्दर्य अछि। एकर छोट-छोट आकर्षक पातसँ छनि-छनि कऽ जखन बसात बहैत अछि त ओहिमे सँ एक संगीत मय स्वर बहराइत अछि। काटेज सँ कने हटि एकटा अन्तःस्रोत रहय जकर शीतल एवं स्वच्छ जल कलकल नाद सँ प्रवाहित होइत छल। गुलमर्गक एकभागमे छल 'सन शाइन पीक' जकर तुषार धवल शिखर पर उदयाचलक सूर्य अपन प्रथम किरणक संग उतरैत छल, त दोसर दिश छल 'फ्रोजेन लेल' जे स्वच्छ ज्योत्सना मे तरल चानीक सरोवर सदृश प्रतीत होइत छल।

कमल, कुमार एवं कमला तीनू के ई स्थान बड़ प्रिय लगलन्हि। प्रकृतिक एहि अतुल सौन्दर्य कें ओ लोकनि इच्छा भरि उपभोग कएलन्हि। कखनहु कोनो झरनाक कात मे जा बैसैत छलाह त कखनहुक ओहि निरापद वन मे दूर-दूर धरि टहलय चल

जाइत छलाह। सभ दिश त सौन्दर्य-सौन्दर्य छल। सौन्दर्यक ई अक्षय भंडार मनुष्यक उपभोग कएने कते निघटैत ? ओ त चिर नूतन अछि, नित नव आकर्षणक संग आँखिक सम्मुख उपस्थित होइत रहैत अछि।

एक दिन तीनू व्यक्ति 'खेलनमार्ग' जाइत गेलाह। तंगमर्गक बाद गुलमर्ग अथवा 'खेलेन मर्ग' धरि घोड़ाक रास्ता अछि। एम्हर ने मोटर अबैत अछि आ' ने समतल भूमि मे रहनिहार पैदल चढ़ि सकैत छथि। कमल कें शंका छल जे कमला कोना घोड़ापर चढ़तीह। परन्तु जखन ओ निर्घोष भऽ कऽ घोड़ा पर फानि चढ़लीह त ओ विस्मित रहिगेल। ओहि तरहें सभ केओ 'खेलनमर्ग' पहुँचैत गेलाह। समुद्रतल सँ साढ़े एगारह हजार फीट ऊँच यहि स्थान मे सन सन कय बहैत शीतल हवा रागक सृष्टि कय रहल छल। कमलाक चिकुर-राशि पवनक जोरसँ उधियाक हुनक सौन्दर्य कें द्विगुण कए रहल छल। कमल एहि कें अनुभव कने बिना नहि रहल। मुस्कुराइत बाजल—"आइ जँ हमरा सभक बीच केओ चित्रकार रहैत त ओकरा 'झांसीक रानी' क मोडेल अनायास प्राप्त भऽ जैतैक।"

कमला सँ ई कटाक्ष अस्पष्ट नहि रहल। बजलीह—चित्रकार भनहि नहि रहथु परन्तु फोटोग्राफर त अवश्य छथि।"

कमल कें त तहरहि इच्छा छलैक। ओ घोड़ा पर चढ़ल कमलाक एकटा 'स्नैप' लेलक।

पश्चात सभ केओ चारूभरक प्राकृतिक सौन्दर्यक दर्शन करए लगलाह। घोड़ाक सहिस हिनका सभकें विभिन्न चोटी सँ परिचय कराबय लागल। 'सन साइन पीक' ओ 'फ्रोजेन लेक' त ओतयसँ अत्यन्त निकट छल। दूर-सुदूरक एक चोटी दिश आंगुर देखबैत ओ कहलक—"ओ जे देखैत छिऐक सैह बीक नंगा पर्वत।"

कमल देखलक जे नंगा पर्वतक हिममण्डित शिखर कोनो बयोबृद्ध संतक धवल जटाजूट सदृश उद्भासित भऽ रहल अछि।

कुमार साहेब ओहि युवक सहीश सँ पुछलथिन्ह-- "तों सभ कहियो ओम्हर गेल छह की नहिं?"

युवक मुस्कुराइत उत्तर देलक—"हम त नहि, तखन हमर बाप एक बेर ओम्हर गेल छल। बड़ कठिन चढ़ाई छैक। ओम्हर अहाँकें तुषार कन्याक दर्शन हैत।"

'तुषार कन्या'क नाम सुनि कमलाक उत्सुकता बड़ बढ़ि गेलन्हि। पुछलथिन्ह—"ई तुषार कन्या के?"

कुमार साहेब हँसैत कहलथिन्ह—"पार्वतीक सखी-सहेली लोकनि।"

कमला कटाक्षसँ कमल दिश तकैत बजलीह—"हमरा जँ एकटा भेटैत त हम कमल बाबूक संग लगा दितिऐक।"

कमलाक एहि सरलता सँ कमल के बड़ प्रसन्नता भेलैक। विभोर होइत बाजल—"नहि जानि, अहाँ हमरा विषयमे की

सोचि लेल अछि। परन्तु ई धरि निश्चय जानू जे हमरा निमित्त कामदेवकें अपन बलि नहि देमय पड़तन्हि।"

कमला आँखि मूनि दूनू हाथ जोड़ि नंगा पर्वत दिश घूमि ठाढ़ि भऽ गेलीह आओर पुनः बजलीह–"हे तुषार कन्ये! अहाँ धन्य थिकहुँ जनिक नामे सुनि हमर कमल बाबूक हृदय ग्लेशियर जकाँ पघिलय लागल।"

कमलाक एहि नाट्य युक्त कथनसँ कमल गद्-गद्-भऽ गेल। परन्तु तुषार कन्याक कल्पना ओकरा मन मे रहि रहि क उठय लागल।

रात मे जखन सूतल त स्वप्नलोकमे तुषार कन्या अपन हिम मण्डित गात लए अवतीर्ण भेलि। कमल ओकरहि शान्त, स्निग्ध आनन दिश देखिए रहल छल कि आश्चर्य चकित रहि गेल। ई तुषार कन्या केओ नहि नलिनी छलि।

परन्तु ओ किछु कहय जा रहल छल कि रूप बदलि गेल। कमल देखलक जे ओ नलिनी नहि शेफाली अछि। सौन्दर्य मे कते साम्य रहैत छैक? कमल एकटक सँ शेफाली कें देखि रहल छल। आदिवासी कन्याक देखादेखी फूल सँ सज्जित ओकर कुन्तल, सौन्दर्य के औरहु उदभासित कऽ रहल छल। परन्तु तत्काल ओ लजा गेल। ओकर नजरि नीचा झुकि गेलैक। ओ ककरा दिश एना मंत्रमुग्ध भेल देखि रहल छल? ई त कमला छलीह जनिका ठोर पर कुटिल-कृत्रिम मुस्कान विराजमान छल।

कमलक निन्न टूटि गेल। ज्ञात भेलैक जे ओ स्वप्न देखि रहल छल। 'त की ई तुषार कन्ये थिकीह जे नलिनी, शेफाली ओ कमलाक रूप धारण कएल करैत छथि? ई तुषार कन्या केओ नहि सौन्दर्यक काल्पनिक मूर्त्ति थिकीह।'—कमल सैह सभ सोचत पुनः सूति रहल।

भोर मे कमलक निन्न देरी सँ टूटल। बाहर अएला पर देखलक जे 'सन शाइन पीक' पर सूर्यक किरण चमकि रहल छल। कुमार साहेब सभ डेरा मे नहि छलाह। कमल हुनका सभकें ताकय लागल। एकठाम जा कऽ ओकर दृष्टि स्थिर भऽ गेलैक। देखलक जे झरनाक कात मे एक शिलाखण्ड पर कुमार साहेब बैसल छथि आओर हुनका कन्हा पर भार देने ओंठगि कऽ बैसलि कमला झरनाक स्वच्छ मुकुर मे अपन प्रति-विम्ब देखि रहल छथि। कमल किछु काल धरि विमूढ़ भेल ओहि युगल मूर्ति दिश देखैत रहल। ओ ओतय गेल नहि। हुनका लोकनिक प्रमोद मे ओ वाधा नहि देमय चाहैत छल। खाली मने मन सोचलक 'जीवन मे जे सुन्दर ओ मधुर अछि, जे आनन्दरूप ओ मंगलमय अछि ताहि पर आवरण देव की संभव छैक।"

ओकर जी अगुता गेलै आओर ओ विपरीत दिशा में बिदा भेल जाहि सँ मन किछु शान्त हो। ओ फरहदक बनमे नहि नहि जानि जे कतेक दूर धरि चल गेल। जखन घूमल तऽ बेर खूब उठि आएल छलै। कमला एकसरि बरामदा मे बैसलि

छलीह। कमल कें देखि ठाढ़ि भऽ गेलीह। कमल एक बेर हुनका दिश ताकलक— वेह सहज स्वभाविक रूप छलैक जे राति तुषार कन्या मे देखने छल। कमला मुस्कुराइत बजलीह—"आइ एसकरहि टहलय चल गेल रही ?"

कमल एहि प्रश्नक कोनो समुचित उत्तर देबाक नियार करितहि रहल त' एक उदासीन भाव ओकरा मुख पर व्याप्त भऽ उठल। तथापि उत्तर देलक—"आइ उठबा मे बिलम्ब भऽ गेल। अहाँ सभ तावत बहरा गेल रही।" तथा गप्पक स्रोत कें दोसर दिस मोड़बाक उद्देश्यसँ प्रश्न कएलक—"आओर कुमार साहेब ! देखैत नहि छिऐन्ह ? छोड़िक कतहु भागि तने गेलाह ?"

कमलक एहि सरस परिहास सँ ओ जोर सँ खिलखिला उठलीह। विभोर होइत बजलीह— 'नहि, बाथ रूम मे छथि। आ' पड़ाइयो जैताह तैं चिन्ता नहि। आब अहाँ जे लग मे छी।"

पुनः कमल दिश तकैत कहलथिन्ह—"शरत बाबू क कमल जेकाँ...नामो मे त एकहि मात्राक अन्तर अछि...कहू तैयार छी ?"

एहि प्रगल्भा सुन्दरी क एहि परिहास सँ कमल म्लान भाव सँ मुस्कुरा उठल। देखलक जे कमला दुष्टता भरल दृष्टि सँ ओकरहि दिश ताकि रहल छथि।

परन्तु कमलक मुख परक म्लान भावक प्रतिबिम्ब तत्क्षण कमलाक आँखिमे चमकि उठल। ओकर पीड़ा कमलाक अन्तरक समवेदनाक तार कें झनझना देलक।

आग्रहपूर्ण स्वर मे ओ बजलीह—"एना ठाढ़ किऐक छी ?" आओर कमलक हाथ पकड़ि कुर्सीपर बैसा देलन्हि। फेर अपनहु बैसि गेलीह।

तावत नौकर आबि कऽ चाय दऽ गेल। कमला 'कप' कें कमल दिश बढ़बैत पुछलथिन्ह—"आइ अहाँ कें उदास देखैत छी। मन ठीक अछि कि ने ?"

कमल एहि तरहक सहानुभूतिपूर्ण शब्द सुनबाक अभ्यस्त नहि छल। आनन्द सँ आँखि छलछला अएलैक। संक्षेप मे उत्तर देलक—"ठीक तऽ अछि।"

आओर चायक एक घोंट पीबि कमला कें बिश्वास दिएबाक भाव सँ ताकलक। देखलक जे कमला अपन दूनू सुन्दर सहृदयतापूर्ण एवं उत्सुक आँखि सँ ओकरहि आन्तरिक वेदना कें पढ़बाक प्रयास क रहल छथि।

मुदा कमला कें विश्वास नहि भेलन्हि—"नहि कमल बाबू ! कोनो बात क जरूर छैक जकरा अहाँ हमरा सँ नुका रहल छी।"

'इहो अहाँ अपन अनुभवक बलें त नहि कहि रहल छी"—कमल व्यंग्य करैत बाजल।

'अवश्य"—कमला तत्क्षण बाजि उठलीह—"अहाँ हमरा अनुभव कें ततेक अपरिपक्व नहि बुझू।"

कमल खिन्न होइत बाजल—'उदासीनता त हमरा जीवनक चिरसंगी बनि गेल अछि कमला जी"—ओ आगू नहि बाजि सकल।

एहि मधुर सम्बोधन सँ कमलाक हृदय मे सहानुभूतिक प्रबल धारा बिगलित भ उठल। अनुरोध पूर्ण स्वर मे बजलीह–"अहाँ त अपना विषय मे व हियो किछु कहबो नहि कएलहुँ। परन्तु एक बात धरि पूछब। देखू अहाँ कें उत्तर देमय पड़त।"

फेर कमल कें उत्सुकता सँ अपन दिश तकैत पुछलथिन्ह—"अहाँ अखन धरि विवाह किऐक नहि कएल अछि?"—आओर एहि प्रस्तावसँ हुनका आँखिमे मधुर लाज भरल उल्लास चमकि उठल।

कमल जेना एहि प्रश्नक अपेक्षा पूर्वहि सँ कऽ चुकल छल आओर उत्तर देबा लेल प्रस्तुत छल। बाजल—"विवाह करब कोनो आवश्यक छैक की?"

"हँ व्यक्ति-विशेषक लेल आओर अहाँ लेल त आओर वेशी" —कमला दुष्टतापूर्ण मुस्कान संग उत्तर देलथिन्ह।

एहि मन्तव्य सँ कमल विक्षुब्ध भऽ उठल। सोचि नहि सकल जे की जबाब देल जाए।

ता' कमला फेर बजलीह—"हम कोनो दोसर भाव सँ नहि कहल अछि। इएह जे अहाँ बड़ भावुक छी आओर भावुक व्यक्ति कें एकटा स्नेह-बन्धन चाही। बुझल?"

कमल जकरा अपनापर एकटा दोषारोपण बुझि चिन्तित भऽ गेल छल ताहि विषय मे कमलाक सरस उक्ति सुनि बिहुँसि पड़ल। कहलक—"हमरा त भेल जे अनजान मे हमरा सँ

कोनो अपराध त ने भऽ गेल, कारण जे हमरा जीवन मे कोनो महिला संग एहि तरहेँ रहबाक ई अवसर थीक।

'जे व्यक्ति महिलाक छाया सँ दूर भागऽ चाहैत अछि ओकरा अवसर कोना भेटतैक।"– मधुर व्यंग सँ भरल मुस्कान कमलाक मुख पर झलकि उठल।

"....त इएह विचार जे हम अपन स्वच्छन्द जीवन कें बन्धन मे बान्हि दी ?"– कमल परिहासपूर्ण स्वर मे प्रश्न कएलक।

"ई एहन बन्धन छैक जे बन्धज होइतहुँ बन्धन नहि छैक। फूल एवं लता सँ कोमल एहि बंधन कें हम जीवनक प्रसाधन बुझैत छिऐक। कहू जे नहि ?"—कमला सशंकोच मस्कुराइत बजलीह।

कमल एक बेर मुग्ध दृष्टि सँ कमला कें देखि उत्तर देलक— "ई त केओ अनुभवी व्यक्ति कहि सकैत अछि। आओर अहाँ कहल त मानि लेल।"

"तखन फेर ई विरक्ति भाव किएक ?" कमला जिज्ञासा कएलथिन्ह।

कमलकें आश्चर्य भेलैक। जेना ई असाधारण बुद्धिमती नारी अपन अनुभवक बलें ओकरा अन्तर्मनक विकलता कें जानि गेल अछि। परन्तु ओकरामे विरक्ति भाव कहाँ छल ? अपन विश्रृंखल जीवन एवं अनियमित गति सँ त ओ स्वयं उदास छल, जेना ई आन्तरिक व्यथा जीवनक समस्त आनन्द कें ध्वस्त कऽ देने हो। आखिर ओकर एहि अर्थहीन बेदनाक की मूल्य ?

कमल किछु काल धरि मोहाविष्ट भेल सोचैत रहल। कमलाक स्नेहानुरोध ओकरा मर्मक सुकुमार तन्तु कें अपन सरस-परस सँ आन्दोलित कए देलक।

निश्छल कटाक्ष सँ कमला कें देखैत बाजल—"अहाँ बड़ सुकुमार हृदय पौने छी। की सभ नारीक हृदय एहने कोमल एवं मधुर होइत छैक?"

"अहाँक की अनुमान अछि?"—कमला भाव गद्‌गद्‌ होइत पुछलथिन्ह।

कमल किछु उत्तर नहि देलक। परन्तु ओकर हृदय एहि कें अस्वीकार नहि कऽ सकल।

कमला अपन प्रश्न कें पुनः दोहरौलन्हि—'हँ तऽ! हमरा बातऽ कें अन्ठौने काज नहि चलत। उत्तर दिअ।"

कमल की उत्तर दितक? एहि पर बौद्धिक स्तर पर विचार कएल जा सकैत छल परन्तु जखन कोनो वस्तु कें हृदय मानि लैत छैक तखन शुष्क विवाद सँ लाभ कोन?

एकटा प्रसन्नताक भाव सहजहि ओकरा मुँह पर प्रकट भऽ आयल जेना कमलाक स्नेहयुक्त अनुरोध ओकर अन्तर्मन स्वीकार कऽ लेने हो।

दोसर दिन सभ केओ श्रीनगर घूमि अएलाह। फेर पहलगाँवओ अमरनाथक दर्शन कए कऽ एहि काश्मीर-यात्राक पूर्णाहुति कएल गेल।

वापसी मे कुमार साहेब बनारस मे उतरि गेलाह। कमल सँ सेहो आग्रह कएलथिन्ह। परन्तु नहि जानि जे कमल कें की मन भS गेलैक आओर ओ एक आवश्यक काजक लाथ कए यात्रा भंग नहि कैलक।

कुमार साहेबक मन उदास भS गेलन्हि।

कमला मौन छलीह। परन्तु दुनू आँखि डबडबाएल छलन्हि।

गाड़ी खुजि गेल। कमल दुनू हाथ जोड़ि हुनका सभ सँ बिदा लेलक। एतेक दिनक एहि स्नेह-सम्पर्कक उपरान्त हिनका लोकनि सँ विलग होइत आन्तरिक क्लेश भेलैक। बुझि पड़ैत छल जेना नोरक प्रबल वेग हृदयक समस्त दृढ़ता कें तोड़ि कS बहय लागत।

कमलाक मंजुल मूर्ति तखनहु ओकरा आँखि मे नाचि रहल छल। ओकरा ध्यान हुनकर नोर सँ डबडबाएल आँखि पर छल। पता नहि जे कोन मंगल-मुहूर्त्त मे ई परिचय भेल छल? कमल हुनकर अतिशय आभारी छल। ओहि कमल-किशोरीक हृदय जेना खाली स्नेहक उपादान सँ निर्मित भेल हो।

कमल, कुमार साहेबक सौभाग्य पर विचार करए लागल। वास्तव मे कमला सनक सुन्दरी एवं स्नेहमयी पत्नी पौनिहार कें सौभाग्यशाली नहि त की कहल जैतैक? दुनूक जीवन कते मधुर छल? जेना ई सभ सोचि कमल कें प्रसन्नता भS रहल छल।

बहुत काल धरि कमल इएह सभ सोचबाक प्रयत्न करैत रहल। ओ जेना दूर कोनो सुदूर कल्पना लोक मे विचरण कऽ रहल छल। मन मे तरह-तरहक भाव उठय लागल। नव नव कामना मन-उदधि कें तरंगित करए लागल।

बड़ीकाल धरि कमल एहि स्वप्न लोक मे डूबल रहल। ध्यान भंग भेल तऽ गाड़ी कोनो देहातक स्टेशन पर ठाढ़ छल। कमल देखलक जे एक नव परिणीता गाड़ी मे चढ़ि रहल अछि। नव वस्त्राभूषण सँ सजलि, सहमलि ओ नववधू कमलसँ कनेक हटि दोसर बेंच पर बैसि गेल। बस्तुजात सँ डिब्बा भरि गेलैक। प्लैटफार्म पर कतेक गोटे एहि नव युवती कें बिदा करए आयल छल। सभक आँखि नोर सँ भरल छल।

गाड़ी पुनः विदा भेल। नवयुवती अपन आँखि सँ एकबेर प्लैटफार्म दिश ताकबाक प्रयास कएलक। ओकरा आँखि सँ नोरक वर्षा भऽ रहल छल।

पश्चात् चीज-वस्तु कें सुव्यवस्थित रूपें राखि ओकर युवक पति ओकरा लग मे आबि कऽ बसि रहल। फेर अपना पत्नी सँ मन्द स्वरें किछु कहलक। पता नहि जे ओहि वाणी मे कोन जादू छल। ओकर आँखि सँ तखनहु नोरक धार प्रवाहित होइत छल तथापि ओकरा ठोर पर हास्यक रेखा लहरि जेकाँ दौड़ि गेल। ओ एक बेर अपन निश्छल कटाक्ष सँ पति दिश ताकि पुनः लजाकय नीचा देखय लागल।

एक अभिनव दृश्य छल। कमल एक मोह-भ्रमित व्यक्ति सदृश ओहि सुन्दरी कें देखि रहल छल। सोलह वसन्तक विकसित सौन्दर्य कें ओ अपलक, स्तब्ध, विस्मय मे डूबल देखैत रहल छल। करुणा एवं माधुर्यक संगम पर ठाढ़ि नारीक ई रूप कते आकर्षक ओ दिव्य होइत अछि। इएह त नारीक शाश्वत रूप अछि।

कमल कें बुझि पड़लैक जेना ओ एहि सँ पहिनहु एहि सुन्दरी कें देखने अछि। परन्तु कतय ? कमल सैह सोचि रहल छल। हठात् नलिनी पर मन दौड़ि गेलैक। दूनूक रूप मे कतेक साम्य छल। एकदम ओहने। विवाहक पश्चात ओ जे नलिनी के देखने छल से ठीक इएह रूप।

नलिनीक विषय मे सोचि कमलक मुद्रा पुनः मलिन भऽ गेलैक। फेर एक बेर कुहेश ओकरा प्राण कें आच्छादित कए लेलक। एक नीरव अपमान, एक विकल वेदना ओकरा मर्म कें छूबि लेलक।

परन्तु ई सभ क्षणिक छल। तत्काल बुझि पड़लैक जेना नलिनी सँ ओकर चिरन्तन सम्बन्ध होइक—जकरा सम्मुख ओ केहनो अपमान के पीबि जत, केहनो वेदना कें बिसरि जैत। ई सभ जेना ओकर संस्कार भऽ गेल छलैक।

कमलक आँखिमे एक करुण मूर्ति प्रकट भऽ आएल—श्वेताम्बरा, उधियाइत केशराशि ओ रुग्ण मुख मंडल ! निष्प्रभ आँखि जेना ककरहु प्रतीक्षा मे विरत हो। एकाएक कमल कें सम्मुख

देखि जेना ओ अपन मूक भाषा मे अनुनय कऽ रहल हो —'तों हमरा सँ रूसल छह ! हमर भाग्ये एहन अछि...तोरा की दोष देबह !....कहियो तों बिचारबह जे हमर अपराध की अछि। हमरा स्थिति पर बिचार करितह...हमरा कतेक दुख अछि से कोना कहबह....हम त नारी छी, अबला छी...हमर मर्यादाक रक्षा त आब तोरे सभक हाथ अछि....

कमल जेना स्वप्न सँ जागि गेल। ओकर दूनू आँखि छलछला अएलेक।

मन हल्लुक भेलेक त ओकर ध्यान ओहि सुन्दरी दिश गेलैक। रमणीक आँखिक नोर सुखा गेल छलैक आओर अपन पतिक कोनो मधुर प्रश्नक उत्तरमे एक रहस्यमय मुस्कान ओकरा मुखमंडलकें आवृत्त कऽ लेने छल।

कमल ओहि मुस्कानकें देखलक—ओहि मे एक अकृत्रिम माधुर्य छल, एक आन्तरिक उल्लास एवं एक अलभ्य तृप्ति छल।

परंतु कमल त अपना हृदय मे कोनो अतृप्तिक अनुभव कर रहल छल। एहि अभावक पूर्ति हो त कोना ? दुख जेना ओकरा जीवनक एक भाग हो। फेर ओकरा भाग्य मे सुख कतए भेटतैक ? प्रायः इएह विधिक विधान छन्हि। ओकर एहि त्याग आ वेदनाक पाछाँ कोन रहस्य छैक से ओ स्वयं नहि अनुभव कऽ पबैत छल।

तत्काल कमलाक स्नेहानुरोध ओकरा कानमे गुंजित होमय

लागल आओर एक अनिर्वचनीय अनुभूति स ओ विभोर भऽ गेल।

गाड़ी ओहिना तीव्र गति सँ जा रहल छल। बाहर चन्द्रमाक हल्लुक चन्द्रिका पसरल छल। कमल खिड़की सँ मुँह बाहर कए कऽ तकलक—पश्चिम आकाश मे तृतीयाक वक्राकार चन्द्रमाक निकट शुभ्र स्निग्ध शुक्रतारा कोनो नववधूक कानक कुन्डल मे मोती सदृश शोभि रहल छल। कमल एकटक सँ ओकरा देखैत रहल। ओकरा कल्पना लोक मे कोनो सुन्दरीक मुखचन्द्र चमकि उठल। ओकर भाव गम्भीर मनः स्थिति छिन्न भिन्न भऽ गेल आओर एक नवीन रसोल्लासक रूप मे फूटि पड़ल।

२२

संध्याकाल छविक गेलाक बाद खबासिनी आबि कऽ नलिनी सँ बाजलि—"मलिकानि अहांक नैहर सँ पाहुन अएलाह अछि।"

नलिनी विस्मय एवं उत्सुकता सँ ताकय लागलि। खबासिन पुनः बाजलि—"बड़ सुन्दर गोर-नार मनुक्ख छैक। अहाँक भाय छथि की?"

ई सुनितहि नलिनी ततेक विह्वल भऽ उठलि जे अपन सभ दुख बिसरि गेल। ओ हरबराक ओछाओन पर सँ उतरय लागलि! ता' बाहर असोरा पर ससुरक स्वर सुनि पड़लैक। ओ कहैत छलथिन्ह—'एहि घरमे छथि भेट कैने अबिअन्हु।" आओर नलिनी देखलक जे सरिपहुँ एक गोर नार युवक कोठली मे प्रवेश कऽ रहल अछि।

कमल कें चिन्हतहि नलिनीक आँखि सँ आनन्दाश्रु झरय लगल। ओ कमलकें प्रणाम करबा लेल उठिये रहल छल तँ कमल रोकि देलक—"ओहिना रहऽ तोहर मन खराब छौक।"

आनन्द सँ नलिनी बाजि नहि सकलि।

कमल नलिनी कें देखलक। लुब्ध रहि गेल। कतेक परिवर्तन भऽ गेल छल।

ओ पहिने मातृक गेल छल। पदुमसुन्नरि सँ नलिनीक दुखित दऽ सुनलक त सन्न रहि गेल। ई जानि जे ओ छः मास सँ शय्याग्रस्त अछि ओकर मन मलिन भऽ गेलैक।

आँखिक नोर पोछैत पदुमसुन्नरि कहलथिन्ह—'जहिना हमर जरल भाग्य भेलै तेहने भगवान ओकरो बनौलथिन्ह। नहि जानि जे एहि जीवन मे की सभ देखय पड़त।"

कमल सान्त्वना देलक—"ई की अपन सक छैक?"

पदुमसुन्नरि कातर स्वर मे बजलीह—"जहिना भगवान कठोर भऽ गेलथिन्ह तहिना इहो लोक ओकर हृदय बेधि देलकै। कहिओ नहि सोचल जे ओकर ऐहन खराब नसीब हेतै।"

कमलक आँखि मे सेहो नोर भरि आयल।

एतेक दिनक बाद कमल कें देखि पदुमसुन्नरि कें अतीतक घटना सभ मन पड़य लगलन्हि। भावावेश मे ओ सभ बात बजैत गेलीह"—तोहर माय कें नलिनी पर कतेक स्नेह रहैक। तोरा दूनू कें एक संग खेलाइत देखि ओकरा बड़ आनन्द होइक। कहल करैक—एकर बिआह नलिनीक संग

हेतैक। हम डाँटि लिऐक—धुर बताहि! लोक सुनतौ त हँसतौ। भाइ-बहिन मे कतौ बिआह भेलै अछि? परन्तु सुशीला कें त अपन जिद्द—'से की कोनो ऐक पेटक छै की? और आब लोक ऐतेक बड़े देखैत छैक।' हम कहिऐक—एक पेटक भनहि नहि रहौक—एक छातीक दूध त पीने छैक। सुशीला विभोर भऽ जाइत छलि—आँखि नोरा जाइत छलैक।" सुशीला कें रुग्ण भेने पदुमसुन्नरि अपनहि दूध पिया कऽ कमल कें पोसने छलथिन्ह। आइ एहि सभ कें स्मरण कय हुनका ठोर पर एक गोट म्लान आलोक पसरि गेलन्हि।

आओर कमल कें गम्भीर भेल किछु सोचैत देखि फेर बजलीह—"ओ बेचारी त चले गेलि तखन तोरा देखि बेटाक मनोरथ पूर होइत अछि। कहियो नहि बूझि पड़ल जे नलिनी कें भाय नहि छैक। परन्तु मुदइ सभ कें सेहो नहि देखल गेलैक। नहि जानि की सभ अपवाद जोड़लक। नलिनी कतेक बेर लिखलक जे कमल भैया के पठा दिअही। परन्तु तों तऽ गामो-घर छोड़ि देने छलाह।"

पदुमसुन्नरि चुप भऽ गेलीह। हुनका आँखि सँ टप-टप नोर चूबय लगलन्हि।

परन्तु कमल कें एहि बात सभ कें सूनि बड़ सन्तोष भेलैक। अकृत्रिम स्नेहक मर्म बुझबाक सौभाग्य ओकरा कम्महि भेल छलैक। विस्मित भेल पदुमसुन्नरि दिश तकैत रहल।

नलिनीक विवाह भऽ गेला उत्तर ओकरा हृदय में तीव्र व्यथा उत्पन्न भेल छलैक। आइ तकर कारण बुझि पड़लैक। नलिनीक प्रति ओकर अनुराग औरहु अधिक बढ़ि गेलै। ओकरा सँ भेंट करबा लेल ओकर मन व्याकुल भऽ उठलैक।

और एतय नलिनीक ई दशा देखि ओकरा आन्तरिक क्लेश भेलैक। बाजल – "तोहर एहन हालत कोना भऽ गेलौ ?"

परन्तु नलिनी आइ अपन सभ दुख बिसरि गेल छल। ठोर पर मुस्कान आनबाक प्रयास करैत उत्तर देलक—"आब तोहर दर्शन भऽ गेल त कोनों दुख नहि अछि। कनियो आशा नहि छल जे तोहर दर्शन भऽ सकत। आब मरबाक किछु परिताप नहि हैत।"

कमल अपना हाथ सँ ओकर मुँह बन्द कऽ देलक—"अहुना केओ बजैत अछि। तों नीके भऽ जएबैंह को।"

उदास होइत नलिनी उत्तर देलक—'तोहू ठकैत छह। आब हम नहि बाँचब। एकहि बात लऽ कऽ दुख होइत अछि...........।"

ता' वसन्त माय, माय करैत दौड़ल आएल।

नलिनी सतृष्ण दृष्टि सँ ओकरा ताकय लागलि।

अकस्मात नव लोक कें देखि वसन्तक चंचलता विलीन भऽ गेल। ओ माइक पलंग लग जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल।

नलिनी बाजलि—"हिनका चिन्हलहुन्ह नहि ? इएह छथुन्ह तोहर कमल मामा। पैर छुबि प्रणाम करहुन्ह।"

बसन्त लजाएल गेल आओर कमल कें प्रणाम कएलक।

नलिनीक आँखि पुनः भरि आयल। कमल सँ बाजलि—"भइया, एक दिन तों वसन्त कें मङ्ने छलाह। आइ ओ दिन आबि गेल। आइ हम वसन्त कें तोरा हाथ मे सौंपि दैत छिअह। एकरा तों अपने जेकाँ आदमी बनबिहक।"

फेर ओ बसन्त कें अपना लग भीकि लेलक। काँपैत हाथ सँ ओकरा मुँह पर हाथ फेरय लागलि। फेर ओकरा कमलक हाथ मे भरा देलक। एहि दृश्य कें देखि कमलक आँखि सँ नोरक धार बहि चलल। ओ बसन्त कें कसि कऽ छाती सँ लगा लेलक।

किछु काल धरि पूर्ण निस्तब्धता रहल। नलिनी ओकरा भंग करैत बाजलि। ओकर स्वर वेदना सँ भरल छल—"आइ तों हमर बड़का चिन्ता दूर कऽ देलह। आब हम चैन सँ मरि सकब। परन्तु हमर एकटा अनुरोध आओर अछि ..।"

ओ जा किछु कहय जा रहल छलि ता कमल कें जलपानक लेल बजाबए आयल।

नलिनी बाजलि—"अखन धरि जलखइ नहि कएलह अछि। जा पहिने कएने आबह। तों अएलह अछि त किछु दिनक लेल हमर आयुर्दा बढ़ि गेल।"

कमल नलिनीक अनुरोध के नहि टारि सकल।

दोसर दिन भोरहि सँ जे पानि बरसय लागल से कथी मे

बन्द हैत। साओनक मेघ! लगैत छल जे आइ संसार के जलमग्न कए देत। ओहि बेर में जा कऽ कतौ बुनछेक भेल।

नलिनी पुनः कमल से अनुरोध कएलक—"हमर एकटा बात आओर मानय पड़तह।"

कमल उत्सुकता पूर्बक नलिनी दिश ताकय लागल।

नलिनी बाजलि—"तों बिआह कऽ लैह।"

कमल हँसय लागल "धुर! आब की विवाह करब।"

"से किऐक!"

"आब विवाह करबाक वयस गैले अछि ?"

नलिनी कें सेहो हँसी लागि गेलै। बाजलि—"अपना समाज मे त देखैत छहक जे बूढ़-बूढ़ मनसाक बिआह होइत छैक। तोहर बयस अखन कनेक भेलह अछि।"

कमल बाजल—"विवाह करवाक बिचार त हम छोड़ि देने रही।"

नलिनी—"से कतहु भेलै अछि। हमरा एकटा बड़ बढ़िया कनिया भेटि गेल अछि। हम ओकरा अपन भौजी बनाबय चाहैत छी।"

कमल मौन भेल सुनैत रहल।

नलिनी कन्याक रूप गुणक प्रशंसा करए लागलि।

फेर बाजलि—"तों हमर एहि अनुरोध कें नहि मानबह त हमरा बड़ दुख हैत। हमरा जीवनक ई आखिरी अनुरोध थीक।"

ता' छवि मुस्कुराइत कोठली मे प्रवेश कएलक। बाजलि—
"भाइ भोरुक पहर नहि आबि सकलहु। तेहेन ने पानि अएलैक!" एकाएक सामने एक युवक कें बैसल देखि ठमकि गेलि। घोर आश्चर्य भेलैक। आगू बाजि नहि सकलि।

नलिनी स्वागत करैत बाजलि—"आउ, आउ, कोनो बात नहि, ई हमर भाय छथि।"

छवि एक बेर कमल दिश तकबाक प्रयास कएलक परन्तु लजा गेलि। ओ नलिनीक लग मे जा कऽ बैसि रहलि।

कमल एक बेर ऊपर सँ नीचा धरि छवि के देखलक। ओ अपन उत्सुकता के रोकि नहि सकल। ओकरा मुँहसँ बहरा गेल—"के शेफाली?"

नलिनी किछु नहि बुझि सकलि—"शेफाली के?"

छवि मुस्कुराइत उत्तर देलक—"हमर नाम शेफाली ने अछि। छवि त गाम पर लोक दुलारसँ कहैत जाइत अछि।"

नलिनी विस्मित भेल सुनि रहलि छलि—"त की अहाँ सभ कें पहिनहु भेंट अछि?"

कमल बाजल—"हम चाईबासा मे हिनका ओहिठाम डेढ़-दू मास रहल छी। हमरा त कनियो ध्यान पर नहि छल जे हिनकर घर एतहि छन्हि।"

नलिनी के एतेक प्रसन्नता भेलैक जे बूझि पड़य लगलैक जे ओ खुशी सँ बताहि ने भऽ जाए। विह्वल स्वरमे बाजलि "ई हमर परम सौभाग्य जे अहाँ दुनू गोटा कें पहिनहि से

परिचय अछि। छबि दाई! नहि शेफाली, आब नेह कहब करब, अहाँ हमरा लग घुसिक आउ।"

फेर छबिक हाथ कें अपना हाथ में लैत बाजलि—"अहाँके जहिया देखलहुँ तहिये सँ हमरा हृदय मे एकटा बड़का अभिलाषा अछि, आइ तकरहि पूर्ण करत छी। जोवनक कोन ठेकान! जे घड़ी जे पल छी।

फेर मन्द स्वरें बाजलि-'अहाँ घबराएब नहि। राति अहाँक माय हमरा देखय आएल छलीह। सभ बात कहि चुकल छिऐन्ह। हम की जानए गेलहुँ जे देखले सुनल बर छन्हि।"—आ' एक मलिन आलोक ओकरा आनन पर व्याप्त भऽ गेल।

छबि लाजें गड़ल जाइत छलि। किछु नहि बूझि सकलि जे ई की भऽ रहल अछि।

नलिनी कमल सँ कहलक-"आब कतेकालक प्रतीक्षा करू भइया?"

परन्तु कमल त स्वयं चकित छल। बाजल-"परन्तु हिनकर ... ।"

ओ आगू नहि बाजि सकल। शेफालीक आँखिक आह्लाद-पूर्ण चमक ओकर शंकाक अन्त कऽ देलक आओर ओ मंत्रमुग्ध जेकाँ अपन हाथ बढ़ा देलक।

छबिक हाथ कें कमल हाथमे अर्पित नलिनी बाजलि—"अहाँक सुहाग अचल हो।"

एकाएक किछु मन पड़लैक। हरबरा कऽ उठय लागलि। ता' छबि पकड़ि लेलकै। नलिनी अपन पेटी लाबय कहलक। फेर सीरम सँ कुंजी लए ओकरा खोललक आओर किछु बाहर कएलक—लाकेट लागल सोनक चेन छल।

ओकरा ओ छबिक गरदनि मे पहिरा देलक। फेर अपन कोमल आङुर सँ छबिक कपोल कें स्पर्श करैत गुनगुना उठलि-"सखी रे साजाबो सखार प्रेमे...।"

छवि ओ कमल विमुग्ध भेल एक दोसर कें देखि रहल छल। तावत लग पासक कोनो आंगन सँ टहंकारपूर्ण गीत सुनि पड़ल। हबाक पाँखि पर चढ़ि ओकर स्वर सुस्पष्ट भऽ गेल—

> शीतल बहथु समीर दिशा दश शीतल लेथि उसाँसे
> शीतल भानु लहु लहु उगथु शीतल भरथु अकाशे
> शीतल सजनि गीत पुनि शीतल, शीतल विधि व्यवहारे
> शीतल मधुश्रावनि विधि हीवथु शीतल बसु एहि गारे
> शीतल घृत शीतल बरु बाती शीतल कामिनि आँगे
> शीतल अगर सुशीतल चाननु शीतल आबथु गाँगे
> शीतल कर लए नयन झँपावह शीतल द॰ दह पा ने
> शीतल होए अहिबात'कुँवर' मन शीतल जल स॰ ने।

नलिनी एकदम सँ विभोर छलि। एकाएक जेना चेतना घूरि आएल हो। पुछलक—"आइए मधुश्रावणी छैक की?"

छवि मूड़ी डोलबैत उत्तर देलक—हँ।"

नलिनी सुनि लेलक । ओकरा गाल पर दऽ कऽ नोरक टघार बहि चलल । स्फुट शब्द मे बाजलि—'आइ मधुश्रावणी छैक ? मधुश्रावणी हमरा जीवन मे नहि आयल शेफाली । परन्तु आशीर्वाद दैत छी जे अहाँक मधुश्रावणी सर्वदा मधुमय हो......"

ई कहैत-कहैत नलिनी ठोहि पाड़ि कानय लागलि आ' किछु कालक बाद अचेत भऽ गेलि ।

